एम. ए. (हिन्दी)

सत्र - IV (CBCS)

प्रश्नपत्रिका क्र. 15.6

अनुवाद

(TRANSLATION)

विषय कोड: 91761

© UNIVERSITY OF MUMBAI

प्राध्यापक डॉ. डी. टी. शिर्के
प्रभारी कुलगुरू
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

प्राचार्य. डॉ. अजय भामरे
प्रभारी प्र-कुलगुरू
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

प्राध्यापक प्रकाश महानवर
संचालक
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

प्रकल्प समन्वयक : **प्रा. अनिल आर. बनकर**
सहयोगी प्राध्यापक
इतिहास विभाग एवं कला शाखा- प्रमुख,
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

अभ्यास समन्वयक एवं संपादक : **डॉ. अनिल गो. चौधरी**
सहायक प्राध्यापक,दूर व मुक्त अध्ययन संस्था,
मुंबई विश्वविद्यालय, कलिना, सांताक्रुज (ई), मुंबई - 400 098

लेखक : **डॉ. गौतम सोनकांबले**
अध्यक्ष, हिंदी विभाग.
पाटकर वर्दे महाविद्यालय,
एस. व्ही. रोड, गोरेगांव (वेस्ट), मुंबई - 400 062

: **डॉ. सत्यवती चौबे**
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
विल्सन महाविद्यालय, चौपाटी सिफेस रोड,
मुंबई -- 400 007

: **डॉ. सावित्री ढोले**
हिंदी विभाग,
जे. व्ही. एम. डिग्री महाविद्यालय,
ऐरोली, नवी मुंबई - 400 708

: **डॉ. अजित कुमार राय**
हिंदी विभाग,
के.सी. महाविद्यालय, चर्चगेट, मुंबई

मार्च २०२३, मुद्रण - १

प्रकाशक : **संचालक, दूर आणि मुक्त अध्ययन संस्था.**
मुंबई विद्यापीठ,
विद्यानगरी, मुंबई- ४०० ०९८.

अक्षर जुळणी आणि मुद्रण
मुंबई विद्यापीठ मुद्रणालय
विद्यानगरी, मुंबई

अनुक्रमणिका

अध्याय क्र.	नाव	पृष्ठ क्र.
१	अनुवादः परिभाषा एवं स्वरूप	१
२	अनुवाद : आवश्यकता एवं महत्त्व	१०
३	'अनुवाद कला एवं विज्ञान	१६
४	अनुवाद के सिद्धान्त, प्रक्रिया और भेद	२१
५.	अनुवाद के उपकरण	३६
६.	अनुवाद के क्षेत्र एवं समस्याएँ	४७
७.	अनुवाद का सामाजिक एवं सास्कृतिक पक्ष	६६
८.	अनुवादक की योग्यताएँ	७७

एम. ए. (हिन्दी)

सत्र - IV (CBCS)

अभ्यासपत्रिका क्र. - 15.6

अनुवाद

TRANSLATION

SYLLABUS

कुल श्रेयांक(Credit)= 6

इकाई एक **श्रेयांक - १**

१. अनुवाद : परिभाषा एवं स्वरूप, आवश्यकता एवं महत्त्व

२. अनुवाद कला एवं विज्ञान

इकाई दो **श्रेयांक - २**

३. अनुवाद के सिद्धांत

४. अनुवाद की प्रक्रिया

५. अनुवाद के भेद

इकाई तीन **श्रेयांक - २**

६. अनुवाद के उपकरण

७. अनुवाद के क्षेत्र एवं समस्याएँ

इकाई चार **श्रेयांक - १**

८. अनुवाद का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष

९. अनुवादक की योग्यताएँ

१

अनुवाद: परिभाषा एवं स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

१.१ इकाई का उद्देश्य

१.२ प्रस्तावना

१.३ अनुवाद का अर्थ

१.४ अनुवाद की परिभाषा

१.५ अनुवाद का स्वरूप

१.६ सारांश

१.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१.८ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

१.९ संदर्भ ग्रंथ

१.१ इकाई का उद्देश्य

'अनुवाद: परिभाषा एवं स्वरूप' का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को यह समझाना है कि –

- अनुवाद का अर्थ क्या है ?
- अनुवाद की परिभाषा क्या है ?
- विभिन्न भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि में अनुवाद की परिभाषा क्या है?
- अनुवाद का स्वरूप क्या है ?

१.२ प्रस्तावना:

एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करना ही अनुवाद है। अनुवाद समन्वय की कला है। अनुवाद एक ऐसा विज्ञान है जो विध्वंस या अलगाव को कदापि महत्त्व नहीं देता। यह सबको एक दूसरे से जोड़ने और मिलाने का काम करता है। अनुवाद का महत्व, इसका अस्तित्व अनादि काल से है। जैसे-जैसे मनुष्य विकसित होता गया, वैसे-वैसे अनुवाद भी विकसित होता गया। आज के अति आधुनिक युग में जैसे-जैसे नए-नए आविष्कार हो रहे हैं, नित्य नये परिवर्तन हो रहे हैं वैसे-वैसे अनुवाद क्षेत्र भी विकसित हो रहा है। यदि हम वर्तमान युग को अनुवाद का युग कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि यह आधुनिक युग की परम आवश्यक प्रक्रिया के रूप में उभर कर सामने आया है। भूमंडलीकरण, उदारीकरण बाजारीकरण, उपभोक्तावाद, सूचना और संचार क्रान्ति के युग में जहाँ प्रति क्षण कुछ बदल रहा है, प्रतिक्षण कुछ नया अनुसंधान हो रहा है, जहाँ 'कर लो दुनिया मुट्ठी में' की अवधारणा को सबके द्वारा अपनाया जा रहा है, आत्मसात किया जा रहा है इस प्रति पल परिवर्तित होते

समय में अनुवाद की महत्ता और बढ़ती जा रही है, इसकी माँग अधिक बढ़ती जा रही है। ऐसे में आवश्यकता इस बात की है कि अनुवाद को विस्तार से जाना समझा जाये, तभी हम इसकी महत्ता को भली-भाँति समझ सकेंगे।

१.३ अनुवाद का अर्थ

'अनुवाद' संस्कृत का तत्सम शब्द है जिसका संबंध 'वद्' धातु से है। 'वद्' धातु का अर्थ होता है 'कहना' या 'बोलना' | 'वद्' धातू में 'धञ' प्रत्यय लगाने से 'वाद' शब्द बनता है और फिर उसके 'बाद में', 'पीछे', अनुवर्तिता आदि अर्थों में प्रयुक्त 'अनु' उपसर्ग जुड़ने से 'अनुवाद' शब्द बनता है। अत: 'अनु' और 'वाद' (अनु+वाद) शब्दों के संयोग से 'अनुवाद' शब्द बनता है, जिसका अर्थ है - किसी के कहने के बाद उसे पुन: कहना। इस तरह से अनुवाद का शाब्दिक अर्थ है - किसी के कहने या बोलने के बाद उसे कहना या बोलना। शब्दार्थ चिन्तामणि कोश ग्रन्थ के अनुसार अनुवाद शब्द की दो व्युत्पत्तियाँ हैं:-

१. प्राप्तस्य पुनः कथनम्

२. ज्ञातार्थाय प्रतिपादनम्

पहली व्युत्पत्ति के आधार पर - प्रथम कहे गये का अर्थ ग्रहण कर उसको पुन: कहना ही अनुवाद है। दूसरी व्युत्पत्ति के अनुसार किसी के द्वारा कही गयी बातों को भली-भाँति समझकर उसे पुनः प्रतिपादित करना ही अनुवाद है। इस प्रकार इन दोनों व्युत्पत्तियों में थोड़ासा परिवर्तन करके एक और तरीके से इस कहा जा सकता है-

ज्ञातार्थस्य पुनः कथनम्

तात्पर्य है किसी के कहे गये कथन के अर्थ को बिल्कुल सही तरह से समझकर उस कथन को फिर से कहना ही अनुवाद है। 'अनुवाद' शब्द का प्रचलन भारत में प्राचीन काल से, वैदिक काल से है। भारतीय दर्शन ग्रंथों में भी अनुवाद शब्द का व्यापक प्रयोग मिलता है।

प्राचीन भारत में जब शिक्षा की मौखिक परंपरा प्रचलित थी और गुरू जी द्वारा कहे गये कथनों, वाक्यों, श्लोकों को उनके शिष्य दुहराते थे। इस दुहराने शब्द को 'अनुवाक्' या 'अनुवाद' शब्द से जाना जाता था। संस्कृत के प्राचीन में अनुवाद शब्द का प्रयोग मिलता है, इसके बाद 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग मध्यकालीन साहित्य, विशेषतः भक्तिकालीन साहित्य में व्यापक रूप से हुआ है जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरित मानस।'

प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल में रचे गए संस्कृत के अनगिनत अमूल्य रचनाओं का विभिन्न भाषाओं में भाषान्तरण हुआ, रूपान्तरण हुआ, जिसे 'टीका', 'भाषा टीका', भाषानुवाद, छाया, तरजुमा आदि के नाम से भी जाना गया जिसमें सबका आशय यही था कि एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपांतरण का नाम ही अनुवाद है।

आज के युग में 'अनुवाद' अंग्रेजी के 'Translation' शब्द के हिन्दी पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है। 'Translation' जो कि एक संज्ञा शब्द है, इसका क्रिया रूप है- 'Translate'। 'Translate' शब्द मूलतः लैटिन शब्द 'Translatum' से निकला है। Translatum शब्द

'Trans' और 'Latum' के संयोग से यानी कि (Trans+Latum) से बना है। 'Translatum' शब्द में 'Trans' उपसर्ग का अर्थ है 'उस पार' या 'दूसरी तरफ' और Latum शब्द अर्थ है 'ले जाना'। इस प्रकार हिन्दी के अनुवाद शब्द की तरह ही अंग्रेजी के 'Translation' शब्द का अर्थ हुआ एक भाषा में कही गयी बात को दूसरी भाषा में संप्रेषित करना| एक भाषा में कही गयी बात को दूसरी भाषा में कहने या अनुवाद करने के लिए अनुवादक के लिए यह परम अनिवार्य है कि वह दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखे, दोनों भाषा पर पूरा अधिकार रखता हो। जिस भाषा से कोई भी अनुवाद किया जाता है उस भाषा को स्रोत भाषा कहते हैं और जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उस भाषा को लक्ष्य भाषा कहा जाता है।

१.४ अनुवाद की परिभाषाः

आधुनिक समय में 'अनुवाद' शब्द अंग्रेजी के 'Translation' शब्द के हिन्दी पर्याय के रूप से प्रचलित है, जिसका तात्पर्य है एक भाषा (स्रोत भाषा) के भाव और विचारों को दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में ले जाना | विभिन्न विद्वानों के अनुसार अनुवाद की परिभाषाएँ भी भिन्न भिन्न हैं। हम इन्हें भारतीय विद्वानों और पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गयी परिभाषाओं को समझने का प्रयास करते है।

संस्कृत परिभाषाएँ:

१. शब्दार्थ चिंतामणि कोश के अनुसार -

(i) "प्राप्तस्य पुनः कथने।"

(ii) "ज्ञाथार्थस्य प्रतिपादने।"

अर्थात् पहले कहे गये अर्थ को फिर से कहना।

२. ऋगवेद के अनुसार -

"अन्वेको वदति यद्ददाति ।"

अर्थात् पश्चात् कथन अनुवाद है।

३. पाणिनी के अनुसार -

"अनुवादे चरणानाम् ।"

पाणिनी के प्रसिद्ध ग्रंथ 'अष्टाध्यायी' के अनुसार अनुवाद प्राय: कथन है |

संस्कृत भाषा की ये परिभाषाएँ दर्शाती हैं कि अनुवाद वास्तव में सार्थक सोद्देश्यपूर्ण पुन: कथन होता है।

हिन्दी परिभाषाएँ:

१. डॉ. भोलानाथ तिवारी :

भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद है इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन। अर्थात् एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग करना अनुवाद है।

२. डॉ. विश्वनाथ अय्यर:

अनुवाद की प्रविधि एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरित करने तक सीमित नहीं है। एक भाषा के रूप के कथ्य को दूसरे रूप में प्रस्तुत करना भी अनुवाद है। छंद में बताई गई बात को गद्य में उतारना भी अनुवाद है।

३. डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी:

एक भाषा में व्यक्त भावों या विचारों को दूसरी भाषा में समान और सहज रूप में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।

४. जी. गोपीनाथ :

अनुवाद वह द्वंद्वात्मक प्रक्रिया है, जिसमें स्रोत पाठ की अर्थ संरचना (आत्मा) का लक्ष्य पाठ की शैलीगत संरचना (शरीर) द्वारा प्रतिस्थापन होता है।

५. डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव :

एक भाषा (स्रोत भाषा) की पाठ सामग्री में अंतर्निहित तथ्य का समतुल्यता के सिद्धान्त के आधार पर दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में संगठनात्मक रूपांतरण अथवा सृजनात्मक पुनर्गठन ही अनुवाद है।

६. पटनायक :

अनुवाद वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा सार्थक (अर्थपूर्ण संदेश या संदेश का अर्थ) को एक भाषा समुदाय से दूसरे भाषा-समुदाय में संप्रेषित किया जाता है।

७. डॉ. रीतारानी पालीवाल :

स्रोत भाषा में व्यक्त प्रतीक व्यवस्था को लक्ष्य भाषा की सहज प्रतीक व्यवस्था में रूपांतरित करने का कार्य अनुवाद है।

८. डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल :

स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में किसी विषयवस्तु या संदेश की समतुल्य अभिव्यक्ति अनुवाद है।

पाश्चात्य परिभाषाएँ :

१. सैमुअल जॉनसन :

To Translate is to change in to another language retaining the sense.
(एक भाषा से दूसरी भाषा में भावार्थ का परिवर्तन ही अनुवाद है।)

२. ई.ए. नाइडा एवं टैबर :

Translating consists in producing in the receptor language the closest natural equivalent to the message of the source language. First in meaning and secondly in style.

(अनुवाद का तात्पर्य है, स्त्रोत भाषा में व्यक्त संदेश के लिए लक्ष्य भाषा में निकटतम सहज समतुल्य संदेश प्रस्तुत करना। यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है, फिर शैली के स्तर पर।)

३. न्यूयार्क:

अनुवाद एक ऐसा शिल्प है, जिसमें एक भाषा में व्यक्त संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा के उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।

४. हैलिडे:

अनुवाद एक ऐसा संबंध है, जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है। ये पाठ समान स्थिति में समान कार्य संपादित करते हैं।

५. जे. सी. कैटफोर्ड:

Translation is the replacement of textual material in one language by the equivalent textual material in another language.

(एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्य सामग्री से प्रतिस्थापित करना ही अनुवाद है।)

६. डॉ. जानसन :

अनुवाद का आशय अर्थ को अक्षुण्ण रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण करना।

७. मैथ्यू आर्नल्ड :

अनुवाद ऐसा होना चाहिए कि उसका वही प्रभाव पड़े जो मूल का उसका पहले श्रोताओं पर पड़ा होगा।

८. लियोनार्ड फोरेस्टन:

अनुवाद एक भाषा के कथ्य की विषयवस्तु का दूसरी भाषा में रूपांतरण है।

९. ए. एन. स्मिथ :

अर्थ को बनाए रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण अनुवाद है।

१०. विलियम विल्ज :

अच्छा अनुवाद एक पुनर्जन्म ही है। परिणामस्वरूप, एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना ही अनुवाद है।

१.५ अनुवाद का स्वरूपः

अनुवाद साहित्य की एक विधा है। परन्तु फिर भी इसे मौलिक साहित्य की श्रेणी में नहीं शामिल किया जा सकता है क्योंकि एक भाषा की सामग्री या मौलिक लेखन को दूसरी भाषा में अंतरित करने का माध्यम अनुवाद है। कुछ विद्वानों ने इसे 'सेकेंड हैंड' साहित्य माना है तो कुछ लोगों के अनुसार अनुवाद की पूरी प्रक्रिया की तुलना आत्मा के परकाया प्रवेश की प्रक्रिया से है।

किसी भाषा के भावों-विचारों को दूसरी भाषा में अभिव्यक्ति प्रदान करना आसान कार्य नहीं होता है। यह एक अत्यन्त कठिन कार्य है। संसार में जितनी भाषाएँ होती हैं सभी भाषाओं की अपनी-अपनी विशेषता होती है, उनकी अपनी व्याकरणिक संरचना होती है। सभी भाषाओं की अपनी-अपनी ध्वनि, रूप, वाक्य अर्थ और विशेषताएँ होती हैं। उनके अपने मुहावरे और लोकोक्तियाँ होती हैं। इसलिए मूलभाषा या स्त्रोत भाषा में व्यक्त भावों-विचारों को उसी रूप में प्रस्तुत करना सरल या आसान कार्य नहीं है। प्रत्येक अनुवाद सफल होगा, इसकी कोई गारंटी नहीं होती है। उदाहरण स्वरूप मान लें कि हमने होटल में कोई बहुत स्वादिष्ट भोजन खाया और हमने यह तय किया कि हम ठीक ऐसा ही भोजन अपने घर पर पकाएँगे। हमने उस भोज्य पदार्थ को घर पर बनाने की पूरी प्रक्रिया का अध्ययन किया, यू-ट्यूब से देखा और उसे घर पर बनाया। ऐसे में तीन तरह की संभावनाएँ हो सकती हैं पहला या तो वह भोजन, होटल के भोजन की तरह स्वादिष्ट बनेगा, या तो उससे भी अच्छा बन सकता है या फिर बिल्कुल उसके अनुरूप नहीं बनेगा। अनुवाद के साथ भी यही स्थिति है। संभव है कि अनुवाद मूल सामग्री से उत्तम बन जाए।

संभव है कि अनुवाद स्रोत भाषा में लिखित साहित्य के समान अनूदित हो जाए और संभव यह भी है कि अनुवाद अपने लक्ष्य को प्राप्त ही नहीं कर सके। ये तीनों तरह की संभावनाएँ अनुवाद की प्रक्रिया के दौरान बनी रहती है। इस प्रकार अनुवाद सही मायने में मूलतः सृजन प्रक्रिया ही है।

अनुवाद करते समय कई बार स्त्रोत भाषा का कथ्य, लक्ष्य भाषा में कहीं अपेक्षाकृत विस्तृत तो कहीं संकुचित और कहीं भिन्न रूप का हो जाता है। उदाहरणस्वरूप अंग्रेजी भाषा-भाषी लोग ठंडे इलाके में रहने के कारण गर्मी का महत्त्व समझते हैं इसलिए वे 'वार्म रिसिप्शन' या 'वार्म वेलकम' करते है। इसके लिए हम हिन्दी में 'गर्म स्वागत' शब्द का प्रयोग करने के बजाय 'हार्दिक स्वागत' शब्द का प्रयोग करते है क्योंकि हिन्दी में 'गर्म स्वागत' शब्द कदापि सटीक सार्थक नहीं है।

हिन्दी में क्रिया के साथ सहायक क्रिया का भी काफी महत्व है क्योंकि सहायक क्रिया से क्रिया और स्पष्ट हो जाती है जैसे कि -

१. बच्चा गिरा।

२. बच्चा गिर गया।

३. बच्चा गिर पड़ा।

इन तीनों वाक्यों में 'गिर' क्रिया के साथ सहायक क्रिया 'गया', 'पड़ा' का प्रयोग किया गया है; जिसका अंग्रेजी अनुवाद है Child Fell या फिर child fell down. इसी प्रकार एक और उदाहरण-

१. आइए ।

२. आ जाइये।

३. आ भी जाइये।

इन तीनों वाक्यों का अंग्रेजी अनुवाद 'Come on' या 'Welcome' होगा | हिन्दी के वाक्यों का अर्थ भेद अंग्रेजी अनुवाद में नहीं लाया जा सकता। वास्तव में जब अंग्रेजी में सहायक क्रियाएँ ही नहीं तो फिर भाव की समीपता से ही संतोष करना पड़ेगा। कुछ अनुवादक अर्थ की समीपता को महत्त्व देने की दृष्टि से शब्दानुवाद करते हैं जिससे स्रोत भाषा में न तो मूल भाषा के भाव की रक्षा हो पाती है और न ही अपेक्षित सौन्दर्य आ पाता है।

मूल कृति के सृजनकार और अनुवादक में अंतर होता है। मूलकृति का सृजनकार अपने भावों - विचारों को आत्मचिंतन, आत्मभाव से लिखता है जबकि एक अनुवाद उसकी रचना को पहले ग्रहण करता हैं, फिर उस उसका अनुवाद करता है। अनुवाद करते समय भी वह सृजन प्रक्रिया से गुजरता है। अनुवाद वास्तव में एक सृजन प्रक्रिया ही है। विद्वान राजरा पाउंड ने साहित्य के अनुवाद को साहित्यिक पुनर्जीवन माना है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अनुवाद का मूल उद्देश्य मूल या स्रोत भाषा के भावों-विचारों-तथ्यों को यथासंभव लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना है। इसके लिए अनुवादक के लिए आवश्यक है कि स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों ही भाषाओं के विस्तृत और गहरे ज्ञान के साथ-साथ दोनों भाषाओं से संबंधित परिवेशों, परिस्थितियों, देश, काल, समाज आदि के विषय में व्यापक जानकारी, व्यापक ज्ञान अनिवार्य रूप से हो, तभी दक्षता से अनुवाद कार्य किया जा सकता है।

१.६ सारांश :

यहाँ पर एक भाषा में कही गई बात विशेषतः दूसरी भाषा में उसे अभियक्त करना ही अनुवाद है | प्रस्तुत अध्याय में छात्रों ने अनुवाद के संदर्भ में अनुवाद की परिभाषा, उसका अर्थ और उसके स्वरुप का विस्तार से अध्ययन किया है |

१.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

प्र.१ अनुवाद क्या है ?

उ. एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करना।

प्र.२ अनुवाद का महत्त्व कब से है?

उ. सृष्टि के अनादि काल से।

प्र.३ वर्तमान युग किसका है?

उ. अनुवाद का युग।

प्र.४ अनुवाद किस भाषा से संबधित है?

उ. संस्कृत के तत्सम शब्द से संबंधित।

प्र.५ अनुवाद का संबंध किस धातु से है ?

उ. संस्कृत के 'वद्' धातु से।

प्र.६ 'वद्' का अर्थ क्या है?

उ. बोलना या कहना।

प्र.७ 'वद्' धातु में कौन सा प्रत्यय लगाकर अनुवाद शब्द बनता है?

उ. 'धञ' प्रत्यय।

प्र.८ 'वद्' धातु में 'धञ' प्रत्यय लगाने के बाद कौन सा शब्द बनता है ?

उ. 'वाद' शब्द।

प्र.९ 'अनु' शब्द का क्या अर्थ है?

उ. 'बाद में' या 'पीछे लगना।'

प्र.१० किसी के कहने के बाद उसे पुन: कहना क्या है?

उ. अनुवाद।

प्र.११ शब्दार्थ चिन्तामणि कोश ग्रन्थ के अनुसार दो व्युत्पत्तियाँ क्या है ?

उ. (क) प्राप्तस्य पुन: कथनम्

(ख) ज्ञातार्थाय प्रतिपादनम्

प्र.१२ अनुवाद को अन्य किन नामों से जाना जाता है?

उ. टीका, भाषा टीका, भाषानुवाद, छाया, तरजुमा।

प्र.१३ 'अनुवाद' अंग्रेजी के किस शब्द का हिन्दी पर्याय है?

उ. ट्रांसलेशन।

प्र.१४ अंग्रेजी का ट्रान्सलेट शब्द वास्तव में किस भाषा से निकला है ?

उ. लैटिन।

प्र.१५ अंग्रेजी के 'ट्रान्स' (Trans) उपसर्ग का अर्थ क्या है?

उ. उस पार या दूसरी तरफ ले जाना।

प्र.१६ अनुवाद के लिए कितने भाषाओं का ज्ञान अनिवार्य है?

उ. दो।

प्र.१७ "अर्थ को बनाए रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण अनुवाद है।" यह किसका कथन है?

उ. ए. एन. स्मिथ।

प्र.१८ अच्छे अनुवाद को पुनर्जन्म किसने माना है?

उ. विलियम विल्ज।

प्र.१९ कुछ विद्वानों ने 'सेकेंड हैंड' साहित्य किसे कहा है?

उ. अनुवाद को।

प्र.२० किसी भावों-विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना कैसा कार्य है?

उ. कठिन, श्रमसाध्य।

१.८ संभावित दीर्घोत्तरीय प्रश्न :

प्र.१ विभिन्न विद्वानों के अनुसार अनुवाद को परिभाषित कीजिए।

प्र.२ अनुवाद क्या है? सविस्तार से लिखिए।

प्र.३ अनुवाद शब्द की उत्पत्ति किस शब्द से हुई है? इसे परिभाषित करते हुए लिखिए।

प्र.४ अनुवाद के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

प्र.५ अनुवाद की परिभाषा और स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

१.९ संदर्भ ग्रंथ :

१. प्रयोजनमूलक हिन्दी - विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९८

२. प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. अंबादास देशमुख, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, २००९

३. प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी, कल्याण चंद्र चौबे, आशीष प्रकाशन, कानपुर, २००५

४. अनुवाद - अमित कुश, सौम्य प्रकाशन, मुंबई, २०११

❄❄❄❄❄❄❄

२

अनुवाद : आवश्यकता एवं महत्त्व

इकाई की रूपरेखा

२.० इकाई का उद्देश्य
२.१ प्रस्तावना
२.२ अनुवाद की आवश्यकता
२.३ अनुवाद का महत्त्व
२.४ सारांश
२.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न
२.६ दीर्घोत्तरीय प्रश्न
२.७ संदर्भ ग्रंथ

२.० इकाई का उद्देश्य:

'अनुवाद : आवश्यकता एवं महत्त्व' इकाई का मुख्य उद्देश्य है -

विद्यार्थियों को अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्त्व के विषय में विस्तृत जानकारी देना ताकि वे इसका अध्ययन कर इसमें रोजगार की संभावनाओं की तलाश कर सकें, अनुवाद करने की योग्यता विकसित कर सकें।

२.१ प्रस्तावना :

अनुवाद मानव की मूलभूत एकता का, विश्व चेतना को एक सूत्र में पिरोने का सबसे सशक्त माध्यम है जिसमें दो भाषाओं की बाहरी विभिन्नताओं को कम किया जाता है, दो भाषा-संस्कृति की तह तक जाकर मानवीय अस्तित्व के एक समान तत्वों को प्रकाश में लाया जाता है। यह कार्य बिना अनुवाद के कदापि संभव नहीं है। यूँ तो अनुवाद, अनुवाद संप्रेषण, समन्वय का एक ऐसा साधन है जिसका अस्तित्व हजारों वर्षों से है तो जाहिर सी बात है कि यह मनुष्य जीवन की एक अनिवार्य आवश्यकता हजारों सालों से रही है। परन्तु अत्याधुनिक युग में जब नित नए-नए परिवर्तन हो रहे हैं प्रति क्षण हम विकास की सीढ़ियाँ चढ़ रहे हैं, वैश्वीकरण - बाजारीकरण की दुनिया में साँस ले रहे है तो ऐसे में अनुवाद की आवश्यकता समय के साथ-साथ और बढ़ती जा रही है।

२.२ अनुवाद की आवश्यकता :

वर्तमान युग वैश्वीकरण, बाजारीकरण, उपभोक्तावाद, तमाम वैज्ञानिक अनुसंधानों और सूचना और संचार क्रान्ति का युग है। विकास की रफ़्तार जैसे-जैसे तेज गति पकड़ रही है वैसे-वैसे सूचना की आवश्यकता और महत्त्व भी काफी गति पकड़ती है। विज्ञान और संचार क्रान्ति के

क्षेत्र में होने वाले नए-नए अनुसंधानों की जानकारी अन्य वैज्ञानिकों समेत सभी अनुसंधान कर्ता प्राप्त करना चाहते हैं। यह जानकारी जिस भाषा में उपलब्ध है, उसे अपनी भाषा में लाने के लिए अनुवादकों की आवश्यकता पड़ती है। वर्तमान युग में प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एक दूसरे की आवश्यकताओं की पूर्ति में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहभागिता बढ़ी है। बहुराष्ट्रीय कंपनी, उपभोक्तावाद और बाजारीकरण के युग में यह सहभागिता जैसे-जैसे बढ़ रही है वैसे-वैसे अनुवाद की आवश्यकता तेजी से बढ़ रही है। उदाहरण स्वरूप आज के युग में यदि किसी बहुर्राष्ट्रीय कंपनी को अपना उत्पाद (Product) भारत के गाँव-गाँव में बेचना हैं, शहर शहर में बेचना है तो उस उत्पाद का विज्ञापन बड़े -बड़े सुपर स्टार, अभिनेता-अभिनेत्रियों द्वारा बड़े पैमाने पर भारत के विभिन्न भाषाओं में करवाना होगा, विभिन्न भाषाओं में अनुवाद की आवश्यकता पड़ेगी, यह कार्य करते समय शहरी और ग्रामीण परिवेश के लोगों (उपभोक्ताओं) को ध्यान में रखकर विज्ञापन तैयार किया जाएगा, विभिन्न भाषाओं में उसे अनूदित किया जाएगा, तो जाहिर है कि यहाँ अनुवाद की आवश्यकता बड़े पैमाने पर होगी। इसी प्रकार दक्षिण भारत में बनने वाली, विदेशी भाषाओं में बनने वाली असंख्य फिल्मों को हिन्दी के साथ-साथ विभिन्न देशी-विदेशी भाषाओं में बनाया जा रहा है, तमाम कार्टून, धारावाहिक, सामाजिक-धार्मिक-शैक्षणिक कार्यक्रम बनाये जा रहे हैं इन सबका भाषान्तरण किया जा रहा है अनुवाद किया जा रहा है। ऐसे में अनुवाद की आवश्यकता और बढ़ रही है। आज मैगी, कोल्डड्रिंक्स, पास्ता, पिज्जा, सौन्दर्य, प्रसाधनों की पहुँच गाँव-गाँव तक फैली है तो इसमें अनुवाद की बहुत अहम भूमिका है।

वर्तमान युग अनुवाद का युग है। समग्र विश्व के लिए आज अनुवाद की परम आवश्यकता है। संसार के किसी भी देश में यदि कोई नई खोज हो रही है, नया अनुसंधान हो रहा या फिर कोई नया विचार सामने आता है तो प्रत्येक देश की यही कोशिश होती है कि उसकी सूचना या जानकारी यथाशीघ्र उसके नागरिकों को मिल सके। यह जानकारी अपने देश की भाषा में लोगों तक पहुँचाने के लिए अनुवाद को माध्यम बनाया जाता है। संपूर्ण विश्व में देशों में लगभग ५००० से अधिक भाषाओं, बोलियों का प्रयोग किया जाता है अतः किसी एक देश की कार्यात्मक, सृजनात्मक और वैचारिक तालमेल को अन्य देशों के साथ स्थापित करने के लिए अनुवाद सबसे सशक्त माध्यम है। भारत जैसे बहुभाषी, बहुसंस्कृति से संपन्न देश के लिए अनुवाद की महत्ता और अधिक बढ़ जाती है। अतः विश्व के किसी भी देश, संस्कृति, भाषा और व्यक्ति के लिए बाकी बचे अन्य देशों से जुड़ने के लिए, उसे जानने समझने के लिए अनुवाद के अलावा अन्य कोई माध्यम नहीं है। मनुष्य अपने राज्य, अपने देश के अलावा अन्य राज्यों या अन्य देशों के साथ अपना सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, वाणिज्यिक, व्यापारिक, कई बार पारिवारिक संबंध स्थापित करना चाहता है जिसके लिए अनुवादक या दुभाषिए की आवश्यकता पड़ती ही है।

व्यक्ति यदि दूसरे देशों, राज्यों की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और साहित्यिक धरोहर आदि का गहन अध्ययन करना चाहता है तो उसे अनुवाद का सहारा लेना ही पड़ता है। यह अध्ययन बिना अनुवाद के संभव ही नहीं है। अनेक लोग ऐसे होते हैं जो एक साथ अनेक भाषा पर अपना पूरा अधिकार रखते है लेकिन वे अधिक से अधिक ८-१० भाषाओं के जानकार हो सकते लेकिन सभी भाषाओं के जानकार नहीं हो सकते है।

इस तरह, वास्तव में राष्ट्रीय एकता से लेकर अंतर्राष्ट्रीय निकटता बढ़ाने में अपनी अहम भूमिका निभाता है, इसलिए अनुवाद आज की आवश्यकता है। दुनिया के हर कोने में ज्ञान-विज्ञान-सूचना व संचार क्रांति के युग में, नित नई विकसित हो रही तकनीकी के युग में संसार की समग्र प्रगति - उन्नति और उपलब्धियों को जानने समझने और अध्ययन करने का सर्वसुलभ माध्यम अनुवाद ही है।

अनुवाद की आवश्यकता पर बल देते हुए कवि डॉ. हरिवंश राय बच्चन यह मानते थे कि "अनुवाद एक भाषा का दूसरी भाषा की ओर बढ़ाया गया मैत्री का हाथ है। वह जितनी बार और जितनी दिशाओं में बढ़ाया जा सके, बढ़ाया जाना चाहिए। अनुवाद दो भाषाओं के बीच मैत्री का पूल हैं।"

विद्वान गोपीनाथन अनुवाद की आवश्यकता राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के उद्देश्य से भी देखते हैं। उनका कहना है कि भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश में अनुवाद की उपादेयता स्वयं सिद्ध होती है। अनुवाद-विज्ञानी डॉ. जी गोपीनाथ के शब्दों में "अनुवाद एक ऐसा सेतुबंधन का कार्य है, जिसके बिना विश्व संस्कृति का विकास संभव नहीं है। अनुवाद के द्वारा हम मानव के इस विश्व कुटुंब में संपूर्ण एकता और समझदारी की भावना विकसित कर सकते हैं, मैत्री एवं भाईचारे को विकसित कर सकते हैं और गुटबंदी, संकुचित प्रान्तीयतावाद आदि से मुक्त होकर मानवीय एकता के मूल बिंदू तक तक पहुँच सकते हैं।"

अंततः कहा जा सकता है कि ज्ञान विज्ञान, सूचना और संचार क्रान्ति, प्रौद्योगिकी, तकनीकी, व्यवसाय, पत्रकारिता, जनसंचार, चिकित्सा, कानून, प्रशासन, कला, संस्कृति वाणिज्य-व्यापार और अनुसंधान आदि क्षेत्रों में अनुवाद के बिना कुछ भी होना असंभव है। सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक एवं साहित्यिक विकास, राष्ट्रीय एकता अखंडता एवं शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इन तमाम क्षेत्रों में आज अनुवाद एक स्वतंत्र व्यवसाय और आजीविका का माध्यम बन चुका है। ऐसे में अनुवाद आज के युग में आवश्यक ही नहीं बल्कि परम आवश्यक है।

२.३ अनुवाद का महत्व :

यह युग अनुवाद का है। वर्तमान युग में अनगिनत लोग ऐसे हैं जो अनेक भाषाओं के जानकार हैं, मर्मज्ञ है, पारंगत है। वे जिन भाषाओं को भली-भाँति जानते हैं उनमें लिखित ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न पहलुओं की विस्तृत जानकारी रख सकते है लेकिन उन्हें सभी विषयों का ज्ञान हो या अन्य भाषाओं में लिखित अति आधुनिक, ज्ञान-विज्ञान का समग्र-ज्ञान हो, यह कदापि असंभव है। ऐसे में अनुवाद की महत्त्व सर्व विदित है। अनुवाद एक ऐसा माध्यम है जो इतिहास के विभिन्न मोड़ों पर सांस्कृतिक नवजागरण का मुख्य माध्यम बना। विश्व बन्धुत्व की कल्पना को साकार करने के लिए विश्व साहित्य का अनुवाद आवश्यक है। आज वैश्वीकरण के युग में जब विश्व ग्राम की बात उठती है तो विश्व मैत्री, देशों के आपसी सहयोग के इस युग में विश्व की जनमानस को समझना अनिवार्य हो गया है। आज का युग परमाणु बम का युग है, हिंसात्मक, भावनाओं के चरमोत्कर्ष पर पहुँचने का युग है। ऐसे में इस बात की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है कि विश्व साहित्य में विद्यमान यथेष्ट आदर्श विचारधाराओं को पुनः आज के संदर्भ में समझा जाय, तमाम अवधारणाओं, विचारधाराओं का अनुवाद अनिवार्य रूप से किया है,

उसे सर्वसुलभ बनाकर जनमानस को वैश्विक शांति के प्रति जागरूक किया जाए। यह कार्य अनुवाद के बिना होना मुश्किल है।

भारत में प्राचीन काल से ही अनुवाद का महत्त्व समझा जाता रहा है। हालाँकि यह भी सच है प्राचीन कालीन भारत में अनूदित साहित्य अधिक मात्रा में उपलब्ध नहीं है। परन्तु इतना अवश्य है कि इस काल में भी अनुवाद का व्यापक महत्त्व है। मध्यकालीन युग में आयुर्वेद, ज्योतिष, नीति, कथावार्ता इत्यादि का अनुवाद संस्कृत से अन्य भाषाओं में होने लगा था। यहाँ भाषा से अभिप्राय बोलचाल की भाषा हिन्दी से है।

विदेशों में भी अनुवाद की परंपरा प्राचीन है। ग्रीक भाषा में लिखी गई सुकरात, प्लेटो, अरस्तू आदि की रचनाएँ एशिया के विभिन्न देशों की विभिन्न भाषाओं में अनूदित होकर ज्ञान-विज्ञान, कला और संस्कृति का विकास करती रही है। ठीक इसी प्रकार भारतीय विद्वानों भी रचनाओं का अनुवाद पहले अरबी और उसके बाद उनका यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हुआ, जिससे भारतीय सभ्यता संस्कृति का आदान-प्रदान, प्रचार-प्रसार हुआ। अतः स्पष्ट है कि अनुवाद कार्य के बिना मनुष्यता का विकास कठिन हो जाता है।

आज प्रत्येक देश में प्रतिदिन प्रत्येक क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के अनुसंधान, अन्वेषण, व्याख्या एवं विश्लेषण हो रहे हैं जिन्हें आम लोगों तक पहुँचाने में अनुवाद की अहम भूमिका होती है। हालाँकि आज का मनुष्य अनेक भाषाएँ जानता है। वह हर भाषा में दक्ष हो सकता है। लेकिन उसे सभी भाषाओं और उनमें प्राप्त सभी प्रकार के अधुनातन ज्ञान-विज्ञान, अनुसंधान आदि जानकारी प्राप्त हो, यह असंभव है। ऐसी परिस्थिति में अनुवाद की आवश्यकता और बढ़ जाती है।

अनुवाद के संबंध में पहले के लोग अकसर हेयात्मक दृष्टि से या हीन दृष्टि से देखा करते थे। परन्तु धीरे-धीरे उनका भ्रम टूट गया। अनुवाद करना, किसी सृजनात्मक लेखन से कम कठिन कार्य नहीं है। मूल लेखक अपनी भाषा में जब कोई अपनी मौलिक रचना प्रस्तुत करता है तो वह अपनी भाषा में सृजनात्मक लेखन करता है, लेकिन अनुवादक, मूल लेखन की साहित्यिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, विधि संबंधी आदि सभी तथ्यों को बारीकी से सूक्ष्मता समझकर, आत्मसात करके उन्हें अपने लक्ष्य में अत्यन्त संजीदगी से प्रस्तुत करता है। अनुवादक का उद्देश्य मूल साहित्य के संदेश को समान रूप से संप्रेषित करना होता है। इसलिए अनुवाद कार्य अधिक परिश्रम और विशेष विशेषज्ञता की अपेक्षा रखता है क्योंकि अनुवादक को मूल लेखक की मनोभूमि तक, मन, मस्तिष्क तक पहुँचना होता है। अनुवाद करने की कला भी सबको नहीं आती है। यह किसी भी दृष्टि से हेयात्मक या कमतर नहीं है। बल्कि यह और अधिक कठिन कार्य होने की वजह से और अधिक महत्त्वपूर्ण है। सच्चाई तो यह है कि आज के प्रतिपल बदलते परिवेश में समस्त विश्व के सामने अपने-अपने अस्तित्व को बचाये बनाए रखने के लिए और मनुष्य को निरंतर विकास करने के लिए अनुवाद सबसे सशक्त माध्यम है।

अंततः यह कहा जा सकता हैं कि अनुवाद का क्षेत्र अत्यन्त व्याप्त है। चाहे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, भौगोलिक, वैश्विक, ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, पर्यटन, पर्यावरण इत्यादि से जुड़ा क्षेत्र हो, चाहे सूचना और संचार क्रान्ति, ज्ञान विज्ञान, अधुनातन अनुसंधान, तकनीकी और प्रौद्योगिकी से जुड़ा क्षेत्र हो, चाहे तमाम तरह के टी.

वी. धारावाहिक, सिनेमा, दूरदर्शन, समाचारपत्र, जनसंचार, आकाशवाणी, कार्टून, कला, खेलकुद, धर्म और संस्कृति, विज्ञापन, व्यवसाय या व्यापार से जुड़ा क्षेत्र हो, प्रत्येक क्षेत्र में अनुवाद असीमित, अपरिमित है।

इसे किसी सीमा क्षेत्र के अंतर्गत नहीं बाँधा जा सकता है, जिन तमाम क्षेत्रों का यहाँ उल्लेख किया गया है, इसके अतिरिक्त भी अन्य असंख्य क्षेत्र हैं कि जहाँ अनुवाद की अहम् भूमिका है। इन तमाम क्षेत्रों में अनुवाद करने के लिए अनुवादकों द्वारा ही तैयारियाँ की जाती है और अनुवाद किया जाता है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि आज के नित नए परिवर्तित होते युग में अनुवाद का महत्त्व और अधिक बढ़ गया है।

२.४ सारांश

आधुनिक युग में अनुवाद का विशेष महत्व रहा है | जब-जब नए परिवर्तन होते है तब मनुष्य के जीवन में अनुवाद की आवश्यकता होती है | इस वैश्वीकरण और बाजारीकरण की दुनिया में अनुवाद की आवश्यकता समय के साथ बढ़ती हुई दिखाई देती है | इस अध्याय में छात्र विशेषतः अनुवाद की आवश्यकता और उसके महत्व को विस्तार से जान पाए है |

२.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्र.१ अनुवाद करने के लिए कितने भाषाओं की आवश्यकता होती है?

उ. कम से कम दो भाषाओं की।

प्र.२ अनुवाद हेतु अनिवार्य दोनों भाषाओं के क्या नाम हैं?

उ. (i) स्त्रोत भाषा।

(ii) लक्ष्य भाषा।

प्र.३ जिस भाषा में लिखित सामग्री का अनुवाद किया जा रहा है, उस भाषा को क्या कहते हैं?

उ. स्त्रोत भाषा।

प्र.४ एक भाषा में लिखित सामग्री का जिस भाषा में अनुवाद होता है वह भाषा क्या कहलाती है ?

उ. लक्ष्य भाषा।

प्र.५ स्त्रोत भाषा क्या है?

उ. जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है वह स्त्रोत भाषा है।

प्र.६ लक्ष्य भाषा क्या है?

उ. जिस भाषा में भाषान्तर किया जाता है या अनुवाद किया जाता है, वह लक्ष्य भाषा है।

प्र.७ बहुर्राष्ट्रीय कंपनियों की पहुँच गाँव-गाँव तक किसके माध्यम से हुई है?

उ. अनुवाद के जरिये।

प्र.८ अनुवाद को दो भाषाओं के बीच 'मैत्री का पुल' किसने कहा है?

उ. हरिवंश राय बच्चन ने।

प्र.९ अनुवाद का दायरा कहाँ तक है?

उ. विस्तृत-व्यापक-असीमित।

प्र.१० अनुवाद की आवश्यकता क्यों बढ़ गई है?

उ. विश्व स्तर पर ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी आदि तमाम क्षेत्रों में लगातार अनुसंधान होने, परिवर्तन होने के कारण अनुवाद का महत्त्व और इसकी आवश्यकता बढ़ती जा रही है।

२.६ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

प्र. १ अनुवाद के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

प्र. २. अनुवाद की आवश्यकता क्यों पड़ती है? सोदाहरण समझाकर लिखिए।

प्र. ३. अनुवाद की महत्ता प्रतिपादित कीजिए।

प्र. ४. अनुवाद की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।

प्र. ५. अनुवाद की आवश्यकता और महत्त्व को अपने शब्दों में लिखिए।

२.७ संदर्भ ग्रंथ

१. प्रयोजनमूलक हिन्दी - विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९८

२. प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. अंबादास देशमुख, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, २००९

३. प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी, कल्याण चंद्र चौबे, आशीष प्रकाशन, कानपुर, २००५

४. अनुवाद - अमित कुश, सौम्य प्रकाशन, मुंबई, २०११

❄❄❄❄❄❄❄

अनुवाद कला एवं विज्ञान

इकाई की रूपरेखा

३.० इकाई का उद्देश्य

३.१ प्रस्तावना

३.२ अनुवाद कला एवं विज्ञान

३.३ सारांश

३.४ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

३.५ दीर्घोत्तरी प्रश्न

३.६ संदर्भ ग्रन्थ सूची

३.० इकाई का उद्देश्य :

इस इकाई का मुख्य उद्देश्य है विद्यार्थियों को यह समझाना कि –

- अनुवाद एक कला किस प्रकार है।
- अनुवाद को विज्ञान क्यों कहा गया है।

३.१ प्रस्तावना :

अनुवाद एक कला ही नहीं बल्कि एक विज्ञान भी है। इसके साथ ही साथ यह एक कौशल भी है। अनुवाद एक कला, विज्ञान और शिल्प तीनों है जिसके लिए अनुवादक को दो भाषाओं अर्थात् स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की संपूर्ण ज्ञान अनिवार्य रूप से होना चाहिए। इसके बाद अनवरत रूप से निरंतर अनुवाद करने का अभ्यास अनुवादक को दक्ष बना देता है। अनुवाद का अनुशीलन और अध्ययन, करके अनुवाद सफलता प्राप्त कर सकता है। इस इकाई में अनुवाद किस प्रकार कला और विज्ञान दोनों है इस विषय पर चर्चा की जाएगी।

३.२ अनुवाद : कला एवं विज्ञान

अनुवाद कला और विज्ञान दोनों की ही श्रेणी में समाहित है।

३.२.१ अनुवाद : एक कला :

अनुवाद एक तरह की कला है। जिस प्रकार एक कलाकार, चित्रकार, गायक आदि को अपनी कला को निखारने के लिए उनका वर्षो का लगातार प्रयास, अभ्यास, रियाज, मेहनत लगन और रुचि आदि की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार अनुवादक को भी लगातार साधना और अभ्यास करना पड़ता है तभी जाकर वह कुशल अनुवादक बन सकता है। जैसा कि हम

जानते हैं कि अनुवाद के लिए स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों की पारंगतता अनिवार्य है, इसके साथ ही अनुवादक के लिए अनिवार्य है कि दोनों भाषाओं के व्याकरणिक और व्यावहारिक हिन्दी को ध्यान में रखे, स्त्रोत भाषा के मूल साहित्य की पूरी पृष्ठभूमि, उनकी सभ्यता-संस्कृति, विचारधारा, रहन-सहन, खान-पान, परिवेश, तमाम परिस्थिति से भली-भाँति परिचित होना चाहिए तभी वह अपने विषय के साथ न्याय कर सकता है क्योंकि अनुवादक को किसी भाव या विचारधारा को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना होता है। इस कार्य को जितनी परिपक्वता, अभ्यास और निष्ठा की आवश्यकता होती है ठीक उतनी ही इन सभी तथ्यों के समायोजन के लिए समन्वय के लिए कलात्मकता की आवश्यकता है। अनुवाद को कलात्मक बनाने के लिए विशेष तरह के ज्ञान अर्थात् विज्ञान की आवश्यकता अनिवार्य रूप से होती है, इसलिए अनुवाद कला और विज्ञान दोनों है।

श्री थियोडर सेवरी ने इसे अत्यन्त व्यावहारिक तरीके से स्पष्ट हुए करते समझाया है- "इसकी (विज्ञान और कला) तुलना चित्रकला और फोटोग्राफी जैसी कलाओं से भी की जा सकती है क्योंकि इन दोनों कलाओं में मूल पदार्थ (object) होता है और चित्रकार अथवा फोटोग्राफर अपनी कला से उसका चित्र अथवा फोटो खींचता है। कई बार यह चित्र मूल रूप से भी सुंदर होता है। इस अर्थ में यदि ये दोनों कलाएँ कला के क्षेत्र में आती हैं तो अनुवाद भी कला है क्योंकि अनुवादक मूल कृति को अपनी कला के माध्यम से इसी भाषा में अभिव्यक्ति करता है। अनुवाद विज्ञान होने का भी दावा कर सकता है। विशेषकर उस स्थिति में जब विज्ञान अथवा गणित के सूत्रों का भी अनुवाद किया जाता है। इस स्थिति में अनुवाद यथातथ्य होता है और उसका वही स्वरूप होता है जो किसी वैज्ञानिक विषय वस्तु का होता है।" वे पुनः अनुवाद को कला स्वीकार करते हुए स्पष्ट करते हैं- "सहज सफलता की खोज में अनुवाद को अकसर पुनर्सृजन करना पड़ता है। अगर वह अनुवाद न लगे तो वहाँ मूल लेखक की हत्या होती है और यदि अनुवाद, अनुवाद ही लगे तो भी मूल लेखक की हत्या होती है क्योंकि मक्खी की जगह मक्खी चाहिए जीवित उड़ान भरती हुई, भिनभिनाती हुई। तात्पर्य यह है कि अनुवाद स्वतंत्र, सरल भी है। अनुवाद को कला मानने का आधार यह भी है कि अनुवादक को मूल रचना की आत्मा को लक्ष्य भाषा में प्रतिबिंबित करना पड़ता है। आत्मा का यह प्रतिबिंब किसी यंत्र अथवा मशीन द्वारा संभव नहीं है।"

वास्तव में देखा जाय तो अनुवाद करने के लिए शब्द चयन, वाक्य चयन, शिल्प-शैली, व्याकरणिक – ज्ञान, विषयगत ज्ञान के साथ-साथ अनुवादक के व्यक्तित्व का महत्त्व भी काफी महत्त्वपूर्ण होता है। अनुवादक में भी सृजनशीलता के गुण विद्यमान होते हैं। जैसे कि स्त्रोत भाषा की कविता को लक्ष्य भाषा में यदि अनुवाद करना है तो यह काम वैज्ञानिक मस्तिष्क वाले व्यक्ति द्वारा सफल और सार्थक हो, इसमें थोड़ा संदेह रहता है। यह कार्य वह कर भी सकता है लेकिन वह मूल लेखक की भावाभिव्यक्ति तक पहुँचे, यह उसके लिए कठिन सिद्ध हो सकता है। मूल साहित्यकार और अनुवादक का स्वभाव, उसकी अभिरूचि, प्रकृति, प्रतिभा के स्वरूप का अनुवाद पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। यूँ देखा जाय तो अनुवादक की सृजनात्मक शक्ति तथा कल्पना शक्ति मूल लेखक से कुछ बढ़कर ही होती है। इस तरह जहाँ सृजनात्मकता है, रचनात्मकता है, भावाभिव्यक्ति है, कल्पनाशीलता है, समन्वयात्मकता है वहीं कलात्मकता

है। इसी दृष्टि से यह कहने में कोई संकोच नहीं कि अनुवाद कला है जिसकी वैज्ञानिकता से कदापि इंकार नहीं किया जा सकता है।

३.२.२ अनुवाद : एक विज्ञान:

अनुवाद को विज्ञान मानने वाले विद्वानों का मानना है कि "अनुवाद एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमें आदि से अंत तक सुनिश्चित तथा सार्थक नियमों को सत्यनिष्ठा और तटस्थता के साथ अनुवादक को पालना पड़ता है। स्रोत भाषा के भावों का अनुवादक द्वारा ग्रहण, उसका मानसिक रूप से भाषान्तरण, उसके बाद लक्ष्य भाषा में उसकी अभिव्यक्ति । अनुवाद की प्रक्रिया इस प्रकार वैज्ञानिक होती है।"

विद्वानों भाषाविदों का एक पूरा समूह अनुवाद को शिल्प मानता है। उनके अनुसार तकनीकी, अर्थशास्त्र, मानविकी, प्रशासन, चिकित्सा, कंप्यूटर, कृषि, भाषा विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, पत्रकारिता, राजनीति शास्त्र, जीव विज्ञान, रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, समस्त विज्ञान क्षेत्र, विधि, वाणिज्य व्यापार आदि तमाम ऐसे क्षेत्र हैं, जिनकी सामग्री तथ्यात्मक और सूचनात्मक होती है, जिसमें किसी भी तरह की न तो कोई भावनात्मकता, संवेदनशीलता होती है और न ही रागात्मकता होती है। इसके लिए प्रशिक्षण, अभ्यास और अधिक से अधिक कार्य अनुभव ही आवश्यक है। यह गुण बाद में उपयोगी कला बन जाती है। उदाहरण स्वरूप, बैंकिंग क्षेत्र में ग्राहकों को अपनी योजनाओं, सेवाओं -सुविधाओं आदि के विषय में व्यापक जानकारी देने के लिए बैंक आकर्षक पोस्टर, फोल्डर, ब्रोशर आदि छपवाकर लगाते हैं, कभी समाचार-पत्रों; पत्रिकाओं और होर्डिंग्स आदि के माध्यम से विज्ञापन भी कराते हैं। आम तौर पर यह सारा कार्य अंग्रेजी भाषा में संपन्न होता है। इसके बाद जैसी आवश्यकता होती है, उसी के अनुसार उनका अनुवाद हिन्दी या अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में किया जाता है। इस अनुवाद का मुख्य उद्देश्य होता है बैंकिंग कार्यों की जानकारी लक्षित ग्राहकों तक उसी की भाषा में सरल तरीके से पहुँचाना।

बैंक में प्रचलित कुछ विधिक शब्द वास्तविक विधिक शब्द से भिन्न होते हैं जैसे कि Delivery का बैंकिंग में अर्थ सुपुर्दगी और विधि में परिदान होगा और Depreciation का बैंकिंग में अर्थ अवमूल्यन और विधि में अवक्षयण होगा। ये सभी शब्द वैज्ञानिक पद्धति से बनाये जाते हैं और इस तरह के होने वाले तमाम अनुवाद वैज्ञानिकता सम्पन्न होते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अनुवाद कार्य सिर्फ कार्बन कॉपी करने जैसा सहज सरल कार्य नहीं है बल्कि "वह स्रोत भाषा के सृजनात्मक साहित्य की सृजनात्मकता को लक्ष्य भाषा में उसी क्षमता से उसकी समस्त सूक्ष्मताओं एवं भंगिमाओं के साथ रूपांकित करने का प्रयत्न है। दूसरी ओर वह कार्यालयी अनुवाद को रुक्ष आचार संहिताओं एवं मर्यादाओं के बीच मूल की कार्यालयीनता को लक्ष्य भाषा में उसके संपूर्ण अभिप्रेत कर देता है। सर्जनात्मक साहित्य की सृजनात्मकता से उसका सक्रिय साक्षात्कार एवं कार्यालयी साहित्य के प्रति उसकी अनासक्त तटस्थता के कारण अनुवाद को आज कला के साथ-साथ विज्ञान भी माना जाने लगा है।"

३.३ सारांश

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि अनुवाद विज्ञानोन्मुख कला है। पृष्ठभूमि का विज्ञान पक्ष और प्रयोग की कलाधर्मिता आपस में मिलकर अनुवाद को एक वैज्ञानिक कला स्थापित करते हैं।

३.४ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्र.१ अनुवाद को कला के साथ और क्या कहा गया है ?

उ. विज्ञान।

प्र.२ अनुवाद वैज्ञानिक होने के साथ-साथ और क्या है?

उ. कलात्मक।

प्र.३ अनुवाद को कला और विज्ञान होने साथ ही और क्या कहा गया है?

उ. शिल्प, कौशल।

प्र.४ किसी विज्ञान, गणित चिकित्सा आदि से संबंधित अनुवाद कला है या विज्ञान ?

उ. विज्ञान और कला दोनों।

प्र.५ थियोडर सेवर ने अपनी पुस्तक 'द आर्टस् ऑफ ट्रान्सलेशन' में अनुवाद कला है या विज्ञान समझाने के लिए किनका उदाहरण दिया है?

उ. चित्रकार और फोटोग्राफर।

प्र.६ विज्ञान सम्मत विद्वानों के अनुसार अनुवाद किस तरह की प्रक्रिया है ?

उ. एक वैज्ञानिक प्रक्रिया।

प्र.७ बैंक, विभिन्न विज्ञान आदि के क्षेत्र में अनुवाद करने हेतु अभ्यास के साथ-साथ किसकी आवश्यकता होती है ?

उ. विशेष प्रशिक्षण की।

३.५ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

प्र. १ अनुवाद विज्ञान है या कला ? स्पष्ट कीजिए।

प्र. २ अनुवाद विज्ञानोन्मुख कला किस प्रकार है? समझाकर लिखिए।

प्र. ३ अनुवाद विज्ञान है या कला? इस पर प्रकाश डालिए।

प्र. ४ अनुवाद विज्ञान है अथवा कला ? समझाकर लिखिए।

३.६ संदर्भ ग्रन्थ सूची

१. प्रयोजनमूलक हिन्दी - विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९८

२. प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. अंबादास देशमुख, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, २००९

३. प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी, कल्याण चंद्र चौबे, आशीष प्रकाशन, कानपुर, २००५

४. अनुवाद - अमित कुश, सौम्य प्रकाशन, मुंबई, २०११

५. अनुवाद कला - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

❄❄❄❄❄❄❄

४

अनुवाद के सिद्धान्त, प्रक्रिया और भेद

इकाई की रूपरेखा

४.० इकाई का उद्देश्य
४.१ प्रस्तावना
४.२ अनुवाद शब्द का अर्थ
४.३ अनुवाद का स्वरूप और परिभाषा
४.४ अनुवाद की प्रक्रिया
४.५ अनुवाद के सिद्धान्त
४.६ अनुवाद के भेद
४.७ सारांश
४.८ लघुत्तरिय प्रश्न
४.९ वस्तुनिष्ठ प्रश्न
४.१० संभावित प्रश्न
४.११ संदर्भ ग्रंथ

४.० इकाई का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का अध्ययन के बाद छात्र -

- अनुवाद का अर्थ और स्वरूप समझ पाएँगे।
- अनुवाद का महत्व एवम् प्रक्रिया को समझ पाएँगे।
- अनुवाद के सिद्धान्तों का विवेचन कर पाएंगे।
- अनुवाद के विभिन्न भेदों को समझ पाएंगे।

४.१ प्रस्तावना

अनुवाद मूल रचना अथवा सूचना साहित्य को जितना हो सके मूल भावना के समानांतर अर्थ एवं संप्रेषण के आधार पर लक्ष्य भाषा-Target Language (जिस भाषा में अनुवाद करना है) में अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया है। आजकल अनुवाद के लिए भाषान्तर, तजुर्मा एवम् रूपान्तर आदि पर्यायी शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है।

४.२ अनुवाद शब्द का अर्थ

अनुवाद शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द के 'वद्' धातु से हुई है। 'वद्' का अर्थ है बोलना, 'वद्' धातु में 'अ' प्रत्यय जोड़ देने पर भावात्मक संज्ञा में इसका परिवर्तित रूप है 'वाद' जिसका

अर्थ है – प्राप्त कथन को पुनः कहना | अतः अनुवाद का अर्थ हुआ – कही हुई बात को फिर से कहना |

अंग्रेजी में अनुवाद के लिए ट्रांसलेशन शब्द का प्रयोग होता है | यह शब्द अपनी संज्ञा के लिए लैटिन शब्द 'ट्रांसलेटम' (Translatum) से आया है, जो दो शब्दों के जोड़ से बना है - (ट्रान्स + लेटम) - ट्रान्स शब्द का अर्थ होता है (पार अथवा दूसरी ओर) तथा 'लेटम' का अर्थ (ले जाना), इन दोनों शब्दों के जोड़ से बना एक भाषा के पार दूसरी भाषा में ले जाना। अंग्रेजी शब्दकोश में भी ट्रांसलेशन शब्द का यही अर्थ मिलता है 'वेब्स्टर्स डिक्शनरी' में | ट्रांसलेट तथा ट्रांसलेशन शब्द का अर्थ इसी प्रकार दिया गया है - ट्रांसलेट अर्थात एक भाषा से दूसरी भाषा में बदलना और ट्रांसलेशन का अर्थ है - किसी साहित्यिक रचना का दूसरी भाषा में परिवर्तन करना।

४.३ अनुवाद का स्वरूप और परिभाषा

अनुवाद संस्कृत भाषा का तत्सम् शब्द है, किन्तु संस्कृत में अनुवाद का अर्थ अलग रूप से प्रयुक्त होता है – 'संस्कृत में अनुवाद का शब्दार्थ है - "प्राप्तस्य पुनः कथते।" अर्थात (किसी के) कहने के बाद 'कहना' अथवा किसी की कही हुई बात को दोहराना। हिन्दी में - एक भाषा में जो कुछ कहा जाए, उसे दूसरी भाषा में व्यक्त करना अनुवाद है। जिस भाषा में अनुवाद करते हैं उसे स्रोत भाषा कहा जाता है और जिस भाषा में उसका अनुवाद किया जा रहा है उसे लक्ष्य भाषा कहते हैं।

अतः सफल अनुवादक में तीन योग्यताएँ होनी चाहिए। स्रोत भाषा का ज्ञान, लक्ष्य भाषा का ज्ञान और उस विषय का ज्ञान, जिससे सम्बन्धित सामग्री का अनुवाद होना है। यदि स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के व्याकरण और मुहावरे में काफी समानता हो तो अनुवाद कार्य सरल होता है। दूसरी ओर स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के व्याकरण और मुहावरे में जितनी भिन्नता होगी, अनुवाद उतना ही कठिन होगा और उसके लिए उतने ही कौशल अभ्यास और सूझ-बूझ की जरूरत होगी। अंग्रेजी हिन्दी अनुवाद में यही भिन्नता देखने को मिलती है। इसलिए अनुवाद कभी- कभी एक कठिन कार्य बन जाता है।

अनुवाद की परिभाषा- भिन्न -भिन्न भाषा वैज्ञानिकों ने अनुवाद को इस प्रकार परिभाषित करने का प्रयास किया है -

ए. एच. स्मिथ- ने अनुवाद की परिभाषा देते हुए लिखा है "अर्थ को बनाए रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण करना |" दी है।

कैटफोड - ने अनुवाद की परिभाषा इस प्रकार दी है - "मूल भाषा की पाठ्य सामग्री के तत्वों को दूसरी भाषा में स्थानांतरित कर देना अनुवाद कहलाता है।" १. मूल भाषा, २. मूल भाषा का अर्थ (सन्देश), ३. मूल भाषा की संरचना (प्रकृति)।

डॉ. भोलानाथ तिवारी- "एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासम्भव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।"

देवेन्द्र नाथ शर्मा के अनुसार, "विचारों को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना अनुवाद है।"

डॉ. विनोद गोदरे के अनुसार, "अनुवाद स्रोत भाषा में अभिव्यक्त विचार अथवा वक्तव्य अथवा रचना अथवा सूचना, साहित्य को यथासंभव मूल भावना के समानान्तर बोध एवं संप्रेषण के धरातल पर लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया है।"

डॉ. दंगल के अनुसार, "स्रोत भाषा के मूल पाठ के अर्थ को लक्ष्य भाषा के परिनिष्ठित पाठ के रूप में रूपान्तरण करना अनुवाद है।"

डॉ. रीतारानी पानीवाल के अनुसार, "स्रोत भाषा में व्यक्त प्रतीक व्यवस्था को लक्ष्य भाषा की सहज प्रतीक व्यवस्था में रूपान्तरित करने का कार्य अनुवाद है।"

अनुवाद का मूल उद्देश्य स्रोत भाषा की विचार सामग्री को अपनी भाषा में यथासम्भव मूल रूप में उपस्थित करना है। अनुवाद की इन परिभाषाओं से अनुवाद की प्रकृति, अनुवादक के लक्ष्य और अनुवाद की प्रक्रिया स्पष्ट होती है |

उपर्युक्त परिभाषाओं से अभिव्यक्त होता है कि अनुवाद वास्तव में अनुवाद की कोई सर्व सम्मत निश्चित परिभाषा नहीं दी जा सकती है। यह एक भाषा-समुदाय के विचारों और अनुभवों को किसी दूसरे भाषा-समुदाय के पास सम्प्रेषित करना है। सम्प्रेषण के इस प्रयास में अनुवादक कोशिश करता है कि सम्प्रेषण लगभग यथावत् हो। लेकिन इस क्रम में अनुवाद स्रोत भाषा में उपलब्ध विचारों और अनुभवों की शब्दावली को लक्ष्य भाषा की शब्दावली में परिवर्तित करता है। यह सारी प्रक्रिया निश्चित तौर पर उद्देश्य पूर्वक होती है।

४.४ अनुवाद की प्रक्रिया

वस्तुतः अनुवाद एक द्विभाषिक प्रक्रिया है। विभिन्न भाषाओं की प्रकृति और प्रवृत्ति एक दूसरे से भिन्न होती है, अतएव अनुवाद की सफलता एवं सार्थकता के लिए उन दोनों भाषाओं के बीच एक विभिन्न स्तर पर समतुल्यता की आवश्यकता है, इसी कारण दोनों भाषाओं स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा टारगेट लैंग्वेज का तुलनात्मक अध्ययन जरूरी होता है। अनुवाद भाषा का एक व्यापार है, आधुनिक युग में अनेक क्षेत्रों में यह व्यापार अनिवार्य हो गया है, जहाँ भाषा है वहाँ अनुवाद भी आता है।

अनुवाद की प्रक्रिया में अनुवाद कर्ता सबसे पहले मूल पाठ (स्रोत भाषा में लिखित) को पढ़ता है, उसका अर्थ ग्रहण करता है उसके पश्चात पढ़ी हुई सामग्री का मनन करता है उसके पश्चात पाठांतर/अनुवाद (लक्ष्य भाषा में) करने के लिए प्रेरित होता है, जिसमें मूल भाषा के कथ्य एवम् कथन को लक्ष्य भाषा में समतुल्य या निकटतम रूप में अनूदित किया जाता है - अनुवाद की प्रक्रिया के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना अनिवार्य है-

१. **पाठ–पठन -** पहला चरण है उपलब्ध सामग्री को पूरी तरह समझ-बूझ कर पढ़ना, यह पाठ - पठन जिस दृष्टि से किया जाता है उसमें आंशिक अर्थ की दृष्टि से पाठ की सामग्री को पढ़ा जाता है। दूसरा विषय अर्थ की दृष्टि से- अर्थात पाठ में किस भाषा और संस्कृति को लिया गया है पाठ के विषय को इस में ध्यान में रखा जाता है और पठन-

पाठन में हो सकता है कि भाषा कठिन हो तब उस भाषा को समझने की आवश्यकता होती है इसमें अनुवाद कार्य करने वाले को मूल भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों का भी उचित ज्ञान होना चाहिए यदि कभी भाषा की जटिलता के कारण पाठ समझ में नहीं आ पाता है तब विषय के जानकार या प्रामाणिक पुस्तकों की सहायता ली जानी चाहिए। यहां भी यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा के विषय में निर्धारित काल, देश, लिंग, वचन प्रसंग आदि बातों को ध्यान में रखना पड़ता है जो कि अर्थ निर्धारण के लिए आवश्यक माने जाते हैं।

२. **विषय का ज्ञान और पाठ विश्लेषण -** अनुवादक को अनुवाद सामग्री के विषय का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। अगर उसे विषय का अच्छी तरह ज्ञान नहीं होगा तो वह मूल रचना के साथ सही न्याय नहीं कर पायेगा। अनुवादक को व्याकरण का उचित ज्ञान होना चाहिए। अनुवादक को अनुवाद में स्पष्ट और सही उच्चारण का प्रयोग करना चाहिए, और अनुवाद से सम्बन्धित विषय का सम्पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। अनुवाद की दृष्टि से दूसरे चरण में पाठ का विश्लेषण करते हैं, विश्लेषण में विशेष ध्यान इस बात पर दिया जाना चाहिए कि कहाँ शब्द का अनुवाद करना है, कहाँ पदबंध का, कहां उपवाक्य का, कहाँ वाक्य का और कहाँ एक से अधिक वाक्यों को एक में मिलाकर अनुवाद करना है।

३. **भाषा का ज्ञान -** अनुवादक की सर्वप्रथम आवश्यकताओं में से एक है कि उसे भाषाओं का समुचित ज्ञान हो क्योंकि उसके सामने दो अलग-अलग भाषाओं की प्रकृति, प्रवृत्ति, संस्कृति, अभिव्यक्ति, शक्ति आदि बातों से वाकिफ होना चाहिए जिससे भाषा की वाक्य-रचना, शब्दों की चयन-प्रक्रिया, अभिव्यक्ति की सक्षम परख और वाक्य - विन्यास एवं शैलियों पर सांस्कृतिक प्रभाव का गहन अध्ययन हो ताकि अपने दायित्वों को अच्छी तरह निभा सके। अनुवाद में आसान भाषा का प्रयोग होना चाहिए।

साथ ही अनुवादक को भाषिक अन्तरण यह चरण अनुवाद का प्राण माना जाता है, मूल भाषा के शब्द, आशय, विषय, कथ्य, सामाजिक संरचना की विशिष्टताएँ आदि को यथावत संप्रेषित करने के जटिल दायित्व को निभा कर लक्ष्य भाषा में लाना होता है।

४. **अभिव्यक्तिगत तटस्थता और उचित समायोजन -** उत्तम अनुवाद अनुवादक के रुचि के साथ उसकी योग्यता, विषय-वस्तु की समझ, भाषाओं की निपुणता आदि बातों पर बहुत निर्भर करता है। अच्छे और सफल अनुवाद की पहचान यही कि पाठक को पढ़ते समय ऐसा न महसूस हो अनुवाद पढ़ रहे है बल्कि पाठक को ऐसा महसूस हो कि वे मूल पाठ पढ़ रहे हैं। अनुवादक को चाहिए कि स्वयं से कुछ न जोड़कर तटस्थता का ध्यान रखे।

यहाँ स्रोत भाषा का लक्ष्य भाषा की दृष्टि से समायोजन भी करते हैं। इस समायोजन में मुख्य बातें ध्यान में रखनी चाहिए- **अ-** स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की वाक्य संरचना तथा भाषा शैली का उचित बोध हो। **ब-** भाषा में सहज प्रवाह हो। **स-** स्रोत भाषा की छाया ना हो। जैसे- अंग्रेजी का वाक्य - "I have taken my meal" का हिन्दी शाब्दिक अनुवाद - "मैंने अपना खाना खा लिया है" जिसमें स्रोत भाषा की छाया है, हिन्दी की वाक्य संरचना के अनुसार इसका सही अनुवाद होगा - "मैंने खाना लिया है।"

५. **पुनर्निरीक्षण-** अनुवादक को चौथे चरण में आकर अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं समझ लेना चाहिए। उसे अंत में मूल रचना के कथ्य एवम् कथन से लक्ष्य भाषा में किये गए अनुवाद से एक बार तुलना अवश्य कर लेनी चाहिए, और यह आश्वासन कर लेना चाहिए कि अनुवाद मूल से कम नहीं कह रहा हो, ना अधिक कह रहा हो और ना ही कुछ हट कर कहा गया हो तथा मूल रचना के अनुरूप ही कथ्य को रखा गया हो।

भाषा का संबंध सदैव इतिहास, समाज और संस्कृति की परंपराओं, मनुष्य की मानसिकता, संस्कार रुचि, योग्यता, उसकी पृष्ठभूमि तथा परिवेश से होता है, इन सभी तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि भाषा का शाब्दिक आधार ही अनुवाद का नियामक नहीं है परंतु अनुवाद भाव, भाषाओं, मानसिकता के विभिन्न पहलुओं से जुड़कर सिर्फ भाषा का अनुवाद ना रहकर मनुष्य की मानसिकता व मानसिक वर्तन के साक्षात्कार का साधन बन जाता है।

४.५ अनुवाद के सिद्धांत-

साहित्य, पत्रकारिता, ज्ञान- विज्ञान और यांत्रिक क्षेत्रों में वैश्विक स्तर पर सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है, इसलिए अनुवाद आधुनिक जन-जीवन की अनिवार्यता बन चुका है। अनुवाद के विभिन्न सिद्धान्त इस प्रकार हैं -

१. **अनुवाद अर्थ संप्रेषण का सिद्धांत-** अनुवाद के सिद्धांत के प्रेरक डॉ. जॉनसन तथा ए. एच. स्मिथ हैं। यह दोनों ब्रिटेन के भाषा वैज्ञानिक थे। अपने अनुवाद कार्यों में इन भाषा वैज्ञानिकों ने यह महसूस किया कि अनुवाद में प्रथम तथा महत्वपूर्ण भूमिका अर्थ की होती है। डॉ. जॉनसन के अनुसार "To translate is to change into another language retaining the sense." अर्थात मूल के अर्थ को बनाये रखते हुए लक्ष्य भाषा में अन्तरण अनुवाद है।" पहले स्रोत भाषा के पाठ का अर्थ सही होना चाहिए। डॉक्टर जॉनसन के अनुसार अनुवाद पाठ का नहीं पाठ के अर्थ का होता है। पाठ के शब्दों, वाक्य आदि के अर्थ को लक्ष्य भाषा में अंतरित किया जाता है। शब्दों, पदबंधों अथवा समग्र वाक्य का अंतरण नहीं किया जाता है। आगे चलकर अंग्रेजी साहित्य के आधुनिक आलोचक ए. एच. स्मिथ ने डॉक्टर जॉनसन की परिभाषा में संक्षिप्त संशोधन करते हुए अपना तर्क रखा - "(To translate is to change into another language retaining as much as of the sense as one can) अर्थात 'अनुवाद मूल भाषा से लक्ष्य भाषा में परिवर्तन करना है, जितना हो सके उतना मूल भाषा का आशय / तत्व उसमें रखना चाहिए|' इस प्रकार दोनों भी विद्वान इस बात से सहमत हुए कि – अनुवाद की प्रक्रिया में अर्थ की कुछ ना कुछ हानि होती ही है, अर्थ की हानि का कारण है कि - दो अलग-अलग भाषाओं की अलग-अलग भाषिक संरचना का होना। जैसे - व्याकरण, वाक्य रचना, मुहावरे, सामाजिक और सांस्कृतिक परम्परा आदि में भिन्नता का होना। इसलिए डॉ. जॉनसन और स्मिथ ने अर्थ सम्प्रेषण का सिद्धांत रखा। इनके अर्थ संप्रेषण का तात्पर्य स्रोत भाषा के पाठ के अर्थ का लक्ष्य भाषा में संप्रेषण से था। जैसे - (Lokayukta to get more teeth soon.) इस अंग्रेजी वाक्य का जो अर्थ है, अनुवाद उसी का किया जाएगा लोकायुक्त एक संवैधानिक शब्द होता है और उसका मुख्य काम प्रशासन में भ्रष्टाचार निवारण का होता है। परंतु

इस हेतु लोकायुक्त को किसी प्रकार का प्रभावी अधिकार नहीं होता अंग्रेजी पाठ का more teeth लोकायुक्त को ज्यादा अधिकार देने के अर्थ में प्र युक्त है। इसलिए इस वाक्य का अनुवाद "लोकायुक्त को और अधिकार जल्दी ही मिलेंगे" होगा।

स्पष्ट है कि इस प्रकार के स्रोत भाषा के पाठ का जो अर्थ निस्पंद होता है, लक्ष्य भाषा में अनूदित करते हुए उसे ही संप्रेषित करने की चेष्टा की जाती है। इस तरह के अनुवाद में पाठ के भाव, शैली आदि पर ध्यान नहीं दिया जाता है। अर्थ के इकहरी रूपांतरण का उदाहरण होता है ऐसा अनुवाद जो कि अक्सर कार्यालयीन अनुवाद में उपयोग होते हैं। अनुवाद में प्रायः ऐसे ही उदाहरण देखने पढ़ने को मिलते हैं इसलिए अनुवाद में अर्थ संप्रेषण के सिद्धांत की मान्यता है। अनुवाद सिद्धांत की श्रृंखला में यह सिद्धांत प्राथमिक है।

२. अनुवाद में व्याख्या का सिद्धांत-

कुछ विद्वानों ने अनुवाद को मूल रूप में व्याख्या माना है। इस मत के समर्थक विद्वान शैली प्रधान साहित्य (लिटरेचर ऑफ पावर) के अनुवाद में उसी को व्याख्यानुवाद का अधिकार देते हैं जिसको अनुवाद करने की क्षमता और सामर्थ्य और विद्वता हो। Roman Jacobson के अनुसार, "Translation proper or interlingual translation is an interpretation of verbal signs by means of signs in some other language." अर्थात अनुवाद एक भाषा के शाब्दिक प्रतीकों के दूसरी भाषा के शाब्दिक प्रतीकों द्वारा व्याख्या है यद्यपि शैली प्रधान साहित्य (काव्य, नाटक आदि) का रचनाकार महान उद्देश्य और अनुपम कल्पना शक्ति के साथ भाषिक प्रतीकों का प्रयोग करता है, अतः कह सकते हैं कि मूल रचना में प्रयुक्त प्रतीकों का दूसरी भाषा में अंतरण उसकी कल्पनाशील व्याख्या के बिना संभव नहीं है। विधि, वाणिज्य, चिकित्सा आदि विषयों पर आधारित ज्ञान प्रधान साहित्य में तकनीकी शब्द की व्याख्या उनके अभिप्रेत अर्थ को जानने के लिए आवश्यक मानी जाती है। शैली प्रधान साहित्य के अनुवाद में अनुवादक से व्याख्या परक अंतरण (interpretative transfer) करना अपेक्षित होता है। एक अनुवादक को सृजनशील होना ही चाहिए, तभी वह उस साहित्यिक पाठ (literary text) की संकल्पना और संरचना को ठीक से समझ सकता है यही कारण है कि एक ही पाठ के दो अनुवादकों द्वारा किये गए अनुवाद में भिन्नता पाई जाती है।

भाषा वैज्ञानिक रोमन याकब्सन, यूरोपीयन होम्स के विचार में अनुवाद का मूल तत्व (Essence) पाठ की व्याख्या होती है। वैसे भी किसी भाषा के किसी कथन का, दूसरी भाषा में रूपांतरण सर्वदा सरल नहीं होता, हर एक भाषा की संरचना, भाषाओं के शब्द, पदबन्ध, वाक्य, मुहावरे व्याकरणिक नियम, शैली आदि में काफी भिन्नता होती है। इसी तर्क के आधार पर इन भाषा वैज्ञानिकों ने अनुवाद में व्याख्या का प्रतिपादन किया है इनके अनुसार, "Translation is an act of interpretation" जैसे - "Due to rain, cricket match is cancelled" यदि इस वाक्य का अनुवाद करना पड़े तो अनुवाद में केवल शब्द का अंतरण मात्र ही नहीं होगा, बल्कि भाषा और वाक्य की संरचना के प्रभाव की महत्ता भी होगी। यदि हम मात्र शब्दान्तरण करें तो इसका अनुवाद

इस प्रकार होगा- ' कारण के बारिश, क्रिकेट मैच बंद' यह अनुवाद कदापि नहीं होगा, अंग्रेजी वाक्य के अनुवाद में व्याख्या से ही सहायता मिलेगी और व्याख्या में भाव की प्रधानता होती है, इसलिए ऐसे पाठ के अनुवाद में भावानुवाद की सहायता लेनी पड़ती है। अतः "Due to rain, cricket match is cancelled" का सही हिन्दी अनुवाद- 'बारिश के कारण, क्रिकेट मैच बंद किया गया' होगा। शायद इसलिए अनुवाद में भाव अनुवाद की प्रधानता होती है। इस तरह से अनुवाद में कभी-कभी स्रोत भाषा के कथन के लक्ष्य भाषा में रूपांतरण के समय पाठ की व्याख्या अपरिहार्य होती है अनुवाद में व्याख्या का सिद्धांत इसी वजह से प्रचलित हुआ और प्रसिद्ध हुआ।

व्याख्या के सिद्धान्त की सबसे बड़ी समस्या यह है कि व्याख्या करते समय अनुवादक कभी- कभी मूल पाठ के अर्थ से भटक जाता है, जिससे मूल पाठ के अर्थ, सन्देश भिन्न हो सकता है और उसके पाठक के साथ न्याय नहीं हो सकता है।

३. अनुवाद में प्रभाव समता का सिद्धांत-

ब्रिटिश वैज्ञानिक टैन्काक इस सिद्धांत के प्रणेता हैं। उनके अनुसार-अनुवाद में स्रोत भाषा के कथन को लक्ष्य भाषा में पुनः स्तुति की जाती है और यह स्तुति पाठक में प्रभाव के मामले में बिल्कुल मूल जैसी होती है, और यही अनुवाद सफल माना जा सकता है। जैसे - I am very angry - इस वाक्य का अनुवाद होगा मैं बहुत नाराज़ हूँ, इसमें मूल पाठ और अनुदित पाठ के प्रभाव एक समान प्रतीत होते हैं। किंतु अंग्रेजी वाक्य का अनुवाद यदि हिंदी मुहावरे के साथ " मैं गुस्से से आग बबूला हूँ " किया जाए तो उपयुक्त नहीं होगा क्योंकि अंग्रेजी कथन का जैसा प्रभाव प्रतीत होता है हिंदी अनुवाद का प्रभाव उससे भी कम-ज्यादा हो जाता है, स्मरणीय रहे कि काल और परिस्थिति के अनुसार, शब्दों के अर्थ में कुछ उन्नीस-बीस होते रहता है। परन्तु टैन्काक, अनुवाद में यह उन्नीस-बीस के खेल को नहीं स्वीकारते हैं, वे अनुवाद को समान भाषान्तरण की प्रक्रिया मानते हैं। इसमें अनुवादक को अपनी प्रतिभा, अनुभव और कल्पना से काम लेना होता है तथा सुनिश्चित करना होता है कि अनुदित पाठ प्रभाव के मामले में मूल पाठ जैसा ही बने, जाहिर है कि इसके लिए अनुवादक को कभी-कभी किंचित मूल पाठ के सीमा का अतिक्रमण करना पड़ता है। अनूदित पाठ में कल्पना के सहारे कुछ जोड़ना, रचना होता है। अनुवाद चूँकि सृजन का अनुसृजन है, इसलिए ऐसा करना उचित होता है। इसे एक अन्य उदाहरण में भी समझने का प्रयास करेंगे। जैसे -The time has not ripen to ink nuclear pact. इस अंग्रेजी वाक्य के अनुवाद में ripen और ink शब्दों के सरल अर्थ लेने का कोई तुक नहीं बनता है, परमाणु समझौते के सिलसिले में कुछ कच्चा -पक्का नहीं होता है और नाही ink के अर्थ में स्याही की यहाँ पर कोई अर्थ संगति है। इस कथन का सामान्य अनुवाद इस प्रकार होगा जैसे - "परमाणु समझौते का समय अभी नहीं आया है" और यह रूपांतरण ही मूल कथन के प्रभाव को व्यंजित करता है। इस दृष्टि से अनुवाद में मूल कथन के प्रभाव की व्यंजना महत्वपूर्ण है, ना कि शब्दों के अर्थ और उनका प्रयोग। टैन्काक अपने इस सिद्धांत में एक युक्तिपरक अवधारणा रचते हैं। इसलिए अनुवाद में प्रभाव समता का सिद्धांत महत्वपूर्ण माना जाता है।

४. अनुवाद में सांस्कृतिक संदर्भ के एकीकरण का सिद्धांत-

इस सिद्धांत के प्रस्तोता भाषा वैज्ञानिक फिर्थ, एच. आर. रॉबिंसन और मैक होलिडे और मैं हॉलीडे हैं। इन विद्वानों के अनुसार भाषा में हमेशा समाज तथा जन-जीवन की संस्कृति अभिव्यक्त तो होती ही हैं, साथ ही साथ संरक्षित रहते हैं। हर एक भाषा में संस्कृति अपने ढंग से मुखरित होती हैं। शाएद इसीलिए भाषा को संस्कृति का संवाहक कहा जाता है क्योंकि भाषा समाज की होती और संस्कृति को प्रतिबिम्बित करने का साधन होती है। समाज से इसलिए जैसी संस्कृति होती है, लोक के तीज त्यौहार जैसे होते हैं, भाषा के शब्द संरचना वैसे ही होती है। अलंकार मुहावरे और लोकोक्तियां इसमें हर भाषा की खास और निजी होते हैं फिर्थ का मानना है कि किसी एक भाषा के सांस्कृतिक कथन का दूसरी भाषा में हू-ब-हू अनुवाद नहीं हो सकता है अनुवाद के लिए या तो भाव प्रधान हो आधार बनाना पड़ेगा अथवा व्याख्या का सहारा लेना होगा ऐसे में किसी एक भाषा के सांस्कृतिक कथन अथवा लोकोक्तियां मुहावरे का अनुवाद दूसरी भाषा में उसके सांस्कृतिक कथन अथवा लोकोक्ति मुहावरे के द्वारा ही किया जाता है। अनुवाद के सफल और सटीक होने के लिए ऐसा करना जरूरी होता है अन्यथा अनुवाद अर्थ अंतरण बन जाता है, मूल का प्रभाव उत्पन्न नहीं कर पाता है जैसे to kill birds with one stone, birds of same feather flock together, Herculean task, आदि। स्पष्ट है कि उदाहरण के वाक्य अंग्रेजी के मुहावरे हैं और उनमें अंग्रेजी जीवन और समाज की अभिव्यक्ति है। भारतीय भाषाओं अथवा हिंदी में इनका अनुवाद करते हुए निश्चय ही भारतीय जीवन और समाज के कथन और मुहावरों को अपनाना पड़ेगा अन्यथा अनुवाद निष्फल होगा अंग्रेजी मुहावरे को भारतीय लोकजीवन में प्रचलित मुहावरे से ही स्थापित करना उचित और सार्थक होगा फिर, रॉबिंसन और मैक हॉलिडे के प्रस्तुत तर्क में अनुवाद की सार्थकता और जीवन में उसकी स्वीकृति की मुख्य चिंता थी इसलिए उन्होंने सांस्कृतिक कथनों की एकरूपता को अनुवाद के लिए जरूरी माना। अनुवाद में मूल भाषा से सम्बन्धित समाज की संस्कृति को हू-ब-हू नहीं रूपान्तरण कर सकते हैं, लक्ष्य भाषा के समाज और संस्कृति के अनुसार अनुवाद करना ही प्रभावी अनुवाद हो सकता है। इसीलिए साँस्कृतिक संदर्भ के एकीकरण का सिद्धांत इसलिए प्रचलन में आया।

५. अनुवाद में पुनरकोडीकरण करण का सिद्धांत

अमेरिका के भाषा वैज्ञानिक विलियम्स फ्राउले ने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। उनके अनुसार अनुवाद एक पुनर्स्थापन की प्रक्रिया है | (Translation means recodification). उन्होंने भाषा को, भाषा की समस्त शब्द तथा वाक्य संरचना को अंकीय आधार पर संकेत (Codes) में जोड़ने की अवधारणा प्रस्तुत की। फ्राउले ने इस हेतु कंप्यूटर की कार्य प्रणाली से भाषिक संरचना को जोड़ने का तर्क दिया। इस तरफ से सभी भाषाओं का अंकीय सूत्र निरूपित हो सकता है और आज के युग में हुआ भी है। उन्होंने इस हेतु भाषा की सबसे छोटी इकाई अक्षर को आधार बनाया और अक्षर के अंकीय निर्धारण की बात कही। इससे किसी की भाषा को समस्त अक्षरों, अक्षरों से बने शब्द, पदबंधों, वाक्यों का आंकड़ा (Data) तैयार किया जा सकता है। फ्राउले ने उसे Data Matrix कहा है।

उनके अनुसार अनुवाद में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का अलग-अलग Data Matrix यदि बना लिया जाए तो आंकड़ों या अंकों के माध्यम से, भाषा के शब्दों और उनके अर्थों में समानता, और पर्याय निर्धारण किया जा सकता है और इस तरह से किसी भी भाषा के कथन के कोड को दूसरी भाषा के कोड code में रूपांतरण के द्वारा अनुवाद प्राप्त किया जा सकता है। इस सिद्धांत में एक भाषिक कोड के समतुल्य दूसरे भाषिक कोड से मिलाना और उसमें रूपांतरण करना होता है। अर्थात एक भाषा के कोड को दूसरी भाषा के कोड से संबंधित स्थापित कराना और पुनः दूसरे भाषिक कोड की भाषिक संरचना में बदलना ही पुनरकोडीकरण है। इस तरह के अनुवाद में सरलता तो कम होती है परन्तु अधिकतर शाब्दिक सटीकता की संभावना रहती है। कंप्यूटर आधारित मशीनी अनुवाद इस सिद्धांत से परिचालित है। अनुवाद के लिए इस सिद्धांत की प्रासंगिकता से इनकार नहीं किया जा सकता है।

६. अनुवाद में समतुल्यता का सिद्धांत-

अनुवाद का यह सिद्धांत बहुत महत्वपूर्ण तथा सबसे अधिक प्रचलित है। इस सिद्धांत के प्रणेता प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक प्रोफेसर जे. सी. कैटफोर्ड (J. C. Catford) और यूजीन (Eusin) ए. नोएडा हैं। अपनी पुस्तक - Linguistic Theory of Translation मैं किया है। उन्होंने अनुवाद को इस रूप में परिभाषित किया है- "Translation is the textual replacement of textual material in one language (SL) by equivalent textual material in another language (TL), अर्थात अनुवाद स्रोत भाषा की पाठ्य सामग्री का लक्ष्य भाषा के समतुल्य पाठ्य सामग्री द्वारा प्रतिस्थापन है|" उन्होंने Textual material पाठ्य सामग्री और Translation equivalence (अनुवाद समतुल्यता) पदों को स्पष्ट करते हुए तथा भाषा के विभिन्न स्तरों यथा- स्वनिम (स्वर विज्ञानं) Phonology, लेखिम (Graphology), व्याकरण और शब्द (grammar and lexis) को महत्व देते हुए भाषा के बाहरी और उसके बारीक स्तरों का वृहत विवेचन किया है। यद्यपि कैटफोर्ड ने अर्थ को गौण नहीं माना है, किंतु उन्होंने भाषा के रूप तत्व (structural forms) को अर्थ की अपेक्षा अधिक महत्व दिया है। इससे अनुवाद की प्रक्रिया को समझने के लिए भाषा वैज्ञानिक आधार मिला है और दो भाषाओं की संरचनाओं के तुलनात्मक अध्ययन तथा व्यतिरेकी विश्लेषण का मार्ग खुला है किंतु अर्थ गौण हो गया है। इसकी तुलना में नोएडा का चिंतन अधिक व्यापक और गहन सिद्ध हुआ है।

नोएडा ने अपने चिंतन में यह स्वीकार किया कि - "अनुवाद का संबंध स्रोत भाषा के संदेश का पहले अर्थ और फिर शैली के धरातल पर लक्ष्य भाषा में निकटतम, स्वाभाविक तथा तुल्यार्थक (Equivalent) पाठ प्रस्तुत करने से होता है। स्पष्ट है कि कैटफोर्ड जहां पर भी सामग्री के समतुल्य चाहते हैं वही नोएडा पाठ में निहित अर्थ और उसकी शैली के तुल्य उपादान प्रस्तुत करने पर बल देते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अनुवाद में भाषाओं के अंतर के कारण कथन में समरूपता का निर्वाह नहीं होता है, बल्कि समतुल्यता हो पाती है, परंतु यह समतुल्यता बड़ी विचित्र प्रकृति की होती है।

समतुल्यता का आधार भी एक प्रकार का नहीं होता। अलग-अलग अनुवाद के प्रकारों में यह समतुल्यता अलग-अलग रूप में दिखाई पड़ती है। जैसे- कहीं शाब्दिक समतुल्यता तो कहीं भावगत समतुल्यता, कहीं-कहीं प्रतीकात्मक और शैलीगत समतुल्यता भी अनुवाद में दिखाई देती है। समतुल्यता अनुवाद को कुछ उदाहरणों के साथ समझ सकते हैं जैसे-

- शब्द गत समतुल्यता

  बचत खाता – Saving account

  कला बाज़ार- Black market.

- भावगत समतुल्यता

  ऊँट के मुँह में जीरा- A drop in the ocean.

  आँख का पानी उतर जाना – To become shameless.

- प्रतीकात्मक अनुवाद

  अब तो इस तालाब का पानी बदल दो। ये कमल के फूल अब कुम्हलाने लगे हैं।

  The present system has rotten. It should immediately be changed.

- शैलीगत समतुल्यता

  अध्यक्ष का निर्णय अभी गोपनीय है।

  The Chairperson has kept his card close to his chest.

  मैं सच का खुलासा अभी नहीं करूँगा।

  I will not open secret card soon.

४.६ अनुवाद के भेद - Types of Translation

अनुवाद की उपयोगिता एवम् महत्त्व आधुनिक जीवन की अनिवार्यता बन चुका है। अनुवाद कार्य में अनुवादक की भूमिका अहम होती हैं और दरअसल अनुवाद की पूरी प्रक्रिया भिन्न-भिन्न विषय वस्तु में भिन्न -भिन्न हो जाती है अतएव एक अनुवादक को भी अनुवाद करने के लिए में अलग-अलग भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं। मूलपाठ का विश्लेषण करते हुए वह पाठक की भूमिका में होता है। अंतरण करते हुए द्विभाषिक विद्वान की भूमिका में और अनूदित पाठ या पुरर्नरचना प्रस्तुत करते हुए लेखक की भूमिका में अनुवाद कई प्रकार का होता है। इस प्रकार अनुवाद को भागों में वर्गीकृत किया है पहला अनुवाद की विषयवस्तु के आधार पर और दूसरा उसकी प्रक्रिया के आधार पर उदाहरण के लिए विषयवस्तु के आधार पर साहित्यानुवाद, कार्यालयीन अनुवाद, विधिक अनुवाद, आशु अनुवाद, वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद, वाणिज्यिक अनुवाद आदि। प्रक्रिया के आधार पर शब्दानुवाद, भावानुवाद, सारानुवाद तथा यांत्रिक अनुवाद।

विषयवस्तु तथा प्रक्रिया के आधार पर अनुवाद के प्रकार -

१. साहित्यानुवाद –

इसके अंतर्गत गद्य-पद्य, उपन्यास, नाटक, जीवनी, निबन्ध, आलोचना आदि अनुवाद आते हैं। साहित्य, कला और संगीत किसी भी समाज की पहचान होती हैं। किसी भी देश और समाज को जानने के लिए वहाँ के साहित्य को पढ़ना-परखना जरूरी होता है। साहित्य में हमेशा देश और काल का चित्रांकन होता है। साहित्यानुवाद हमेशा सूचना प्रधान अनुवाद से कठिन होता है क्योंकि सूचना साहित्य के शब्दकोशों एवम् नियमित कार्य के अनुभव से किया जा सकता है परन्तु साहित्यानुवाद में अनुवादक को लक्ष्य भाषा और समाज के मानसिक, साँस्कृतिक एवम् सामाजिक और राजनीतिक पक्षों से गुजरना पड़ता है। उदाहरण के लिए मक्सिम गोर्की का कथासहित्य तत्कालीन रूस में हुई क्रांति और जनसंघर्ष का जीवन्त दस्तावेज़ है, उसका अनुवाद करते हुए हम पात्रों या स्थानों आदि के नाम बदलते हुए उसका भारतीयकरण नहीं कर सकते क्योंकि भारतीय स्थितियाँ तत्कालीन रूस से बिल्कुल भिन्न थी। इसी तरह किसी नोबेल विजेता यूरोपीय सहित्यकार से सम्बन्धित हिंदी समाचार बनाया जा रहा है तो पत्रकार को उस साहित्यकार के परिवेश और युगीन स्थितियों का हिंदी में जस का तस उल्लेख करना होगा क्योंकि उसके साहित्य में उसके देश और समाज की स्थितियों का दस्तावेज़ है, भारत का नहीं।

२. कार्यालयीन अनुवाद -

कार्यालयी अनुवाद से आशय प्रशासनिक पत्राचार तथा कामकाज के अनुवाद का है। भारत के संविधान के अनुच्छेद ३४३(१) के अंतर्गत हिन्दी को देवनागिरी लिपि में स्वीकार किया गया। स्वतंत्रता के पश्चात संविधान ने हिंदी को राजभाषा बनाने का संकल्प तो लिया पर कुछ राजनीतिक और सामाजिक दुविधाओं के चलते वह आज तक कार्यरूप नहीं ले सका। आज राजभाषा के मसले पर भारत में द्विभाषिक नीति लागू है। जिस अंग्रेजी को संविधान ने दस साल में राजभाषा के पद से पदच्युत करने का प्रारूप दिया था, वह आज भी अपने स्थान पर किंचित भिन्न रूप में डटी हुई है। हर राज्य को अपनी राजभाषा निर्धारित करने की स्वतंत्रता संविधान ने दी थी और राज्यों ने उसके अनुरूप राजभाषा का निर्धारण किया भी है किन्तु संघीय सरकारों से उसके प्रशासनिक कार्यव्यहार अंग्रेज़ी में ही होते हैं। हिंदी है लेकिन अंग्रेजी भी है और राज्यों के प्रकरण में उनकी अपनी राजभाषाएँ भी हैं। ऐसी स्थिति में अनुवाद की उपयोगिता और महत्व उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। सभी जानते हैं कि प्रशासनिक शब्दावली का अपना एक विशिष्ट रूप है जो बहुधा अंग्रेज़ी से अनुवाद पर आधारित होता है। पारिभाषिक शब्द इसी प्रकार की प्रशासनिक शब्दावली का एक प्रमुख हिस्सा हैं। एक पत्रकार के लिए सरकार के कामकाज पर आधारित समाचार बनाते समय इस शब्दावली की सामान्य जानकारी का होना अनिवार्य है। अनेक संसदीय शब्दों का हिन्दी में प्रचलन इसी शब्दावली के आधार पर हो गया है।

३. विधिक अनुवाद -

न्यायपालिका संविधान में वर्णित लोकतंत्र के तीन स्तम्भों में एक है। समाचारपत्रों में न्याय और उससे जुड़ी प्रक्रिया से सम्बन्धित अनेक समाचार होते हैं। हिंदी को राजभाषा बनाए जाने के संकल्प के बावजूद उच्च तथा उच्च न्यायालय का सारा कामकाज अंग्रेजी में ही होता है। सारे निर्णय और अभिलेख अंग्रेजी में होते हैं और न्यायालय की कार्यवाही भी अंग्रेजी में ही सम्पन्न होती है। एक अनुवादक या पत्रकार के लिए जरूरी हो जाता है कि हिंदी में समाचार बनाते हुए वह विधिक शब्दावली का तकनीकी रूप से सही अनुवाद हुआ हो।

४. वार्तानुवाद अथवा आशु अनुवाद -

यह एक रोचक प्रक्रिया है। अंग्रेजी में सामान्य रूप से इसे Interpretation कहते हैं। जब कोई दूसरे देश का राजनेता अपने देश में आता है जिसे अंग्रेज़ी नहीं आती होती हो तब हमारे देश के राजनेताओं के साथ उसकी वार्ता Interpreter की सहायता से ही सम्भव हो पाती है। Interpreter वह व्यक्ति होता है जो विदेशी राजनेता की भाषा का तुरंत और सरल अनुवाद मौखिक रूप से हमारे राजनेता के सम्मुख करता है और हमारे राजनेता की भाषा का आगंतुक राजनेता के सम्मुख वह एक ऐसा भाषिक मध्यस्थ बन जाता है जिस पर यह उत्तरदायित्व होता कि वह वार्ता में प्रयोग किये गए शब्दों का सही अर्थ लगाकर आगन्तुक की भाषा में प्रस्तुत करें ।

५. वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद -

आधुनिक समय विज्ञान और तकनीक का युग है। विज्ञान के बहुआयामी विकास ने मानव जीवन की गतिविधियों ही नहीं, वरन उसके जीवनमूल्यों को भी कई स्तरों पर बदल दिया है। वर्तमान समाचारपत्रों में विज्ञान और तकनीक से सम्बन्धित गतिविधियों के कई समाचार होते हैं और उनके लिए जरूरी होता है कि पत्रकार को वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली की पर्याप्त जानकारी हो, जिसके अभाव में अनुवाद हास्यास्पद और विचित्र हो सकता है। इसलिए कई तकनीकि शब्दों को अनुवाद में मूल भाषा के शब्द का ही लिप्यन्तरण करके लिखा जाता है- जैसे Rail या Train को हिंदी में लौहपथगामिनी जैसे विचित्र और हास्यास्पद अनुवाद की जगह रेल या ट्रेन ही लिखना अनुवादक के हित में होगा। Computer के लिए कम्प्यूटर ही लिखना होगा इसी तरह हिंदी संगणक की जगह कैलक्यूलेटर शब्द का ही प्रयोग होता है।

६. वाणिज्यिक अनुवाद -

यह क्षेत्र व्यापार के साथ-साथ प्रमुखतः बैकिंग व्यवसाय का है। सभी को विदित है कि समूचे विश्व की संचालक शक्ति अब पूँजीगत हो चली है। भूमंडलीकरण और विश्वग्राम जैसी उत्तरआधुनिक अवधारणाएँ प्रकारांत से इसी के ईर्द- गिर्द घूमती हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के समाचारों का निर्माण अकसर सम्बन्धित विषयवस्तु के अनुवाद द्वारा ही सम्भव हो पाता है। इस तरह के अनुवाद की अपनी

शब्दावली होती है, जिसकी प्राथमिक जानकारी अनुवादक को होना जरूरी है। बैंकिंग के क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग मुख्य रूप से दो स्तरों पर होता है, एक राजभाषा के स्तर पर और दूसरा जनभाषा के स्तर पर हिंदी को राजभाषा के रूप में सम्मान दिलाए जाने के बाद बैंकों द्वारा हिंदी के प्रयोग पर जोर दिए जाने की नीति शामिल हैं। बैंकों को भी अपना व्यवसाय चलाना है जो कि जन भाषा में ही सम्भव है। बैंकों को अपनी पहुँच जनता तक बनानी होती है और इसके लिए वे हिंदी के इस्तेमाल पर बल देते हैं। हर बैंक में चूँकि महत्वपूर्ण मसौदे अंग्रेज़ी में ही तैयार किए जाते हैं लेकिन जनता तक उन्हें पहुँचाने के लिए उनका सरल हिंदी अनुवाद अनिवार्य होता है, परिणाम स्वरूप हर बैंक में हिंदी अधिकारी तैनात किए गए हैं। इसके अलावा राष्ट्रीय स्तर पर बैंक की ऋण सम्बन्धी नीतियों और उतार-चढ़ाव की जानकारी भी उसे पाठकों तक सरल और सही रूप में पहुँचानी होती है, जिसके लिए हिन्दी एवम् स्थानीय भाषा में अनुवाद अनिवार्य है।

७. भावानुवाद -

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है इसमें भाव, अर्थ और विचार पर अधिक ध्यान दिया जाता है। भावानुवाद मूल रचना की आत्मा को लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करने की कोशिश करता है। अनुवादक की सम्पूर्ण चेतना, सम्पूर्ण ज्ञान मूल भाषा के साहित्य की आत्मा से जुड़ा रहता है, ताकि मूल रचना के भाव को जैसे का तैसा लक्ष्य भाषा में पहुँचा सके। लेकिन ऐसे शब्दों, पदों या वाक्यांशों की उपेक्षा नहीं की जाती जो महत्वपूर्ण हों। ऐसे अनुवाद से सहज प्रवाह बना रहता है। साहित्यकार अक्सर इसका सहारा लेते हैं।

८. छाया अनुवाद-

जब किसी रचना का शब्दशः या भावानुवाद ना कर रचना में मात्र कुछ परिवर्तन कर अन्य भाषा में प्रस्तुत किया जाता है तब ऐसे अनुवाद को छायानुवाद कहते हैं। इसमें लेखक मूल रचना की छाया ग्रहण कर स्वतंत्र भाव से उसी रचना को फिर से लिखता है। इसमें लेखक मूल रचना की केवल छाया ग्रहण करता है और कभी-कभी लेखक मूल रचना के स्थान और वातावरण को विश्वसनीय बनाने के लिए उसका देशीकरण कर देते हैं ताकि रचना मूल प्रतीत हो।

९. सारानुवाद -

सारा अनुवाद जब किसी लंबे कथन अथवा रचना को उसके सार तत्व को पूरी तरह सुरक्षित रखते हुए या दूसरे कारण से संक्षिप्त किया जाता है तब अनुवाद सारानुवाद कहलाता है। अनुवादक इसमें पूरी रचना नहीं उसके सार तत्वों का अनुवाद रचना के कथ्य की आवश्यक जानकारी के साथ देता है ताकि पाठक या श्रोता को आवश्यक जानकारी भी मिले और समय भी बचे। यह आवश्यकतानुसार संक्षिप्त या अति संक्षिप्त होता है। भाषणों, विचार गोष्ठियों और संसद के वादविवाद की विशद विषयवस्तु के सार का अनूदित प्रस्तुतीकरण इसी कोटि का होता है।

१०. व्याख्यानुवाद –

व्याख्यानुवाद, सारानुवाद के विपरीत होता है। इसमें मूल पाठ का अनुवाद करते समय अनुवादक किसी शब्द तथा पद की अतिरिक्त व्याख्या कर देते हैं। इसलिए इसे व्याख्यानुवाद कहते हैं। इस रचना में मौलिकता का समावेश होता है और वह कृति अनुवाद के घेरे से मुक्त रहती है, अनुवादक का चिंतन – मनन इसमें सम्मिलित रहता है।

निष्कर्षतः अनुवाद कार्य ने पुरातन समय से ही मानव समाज को संगठित किया है। आधुनिक वैश्वीकरण के युग में अनुवाद देश- विदेश के स्तर पर वार्ता, सूचना – प्रसारण, उद्योग, तकनीक, साहित्य और ज्ञान-विज्ञान का आदान-प्रदान करने के लिए एक अहम हिस्सा बन गया है।

४.७ सारांश

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि अनुवाद मूल रचना को अर्थपूर्ण ढंग से लक्ष्य भाषा में अंतरित करने की एक पुनर रचनात्मक प्रक्रिया है। इसमें एक मूल लेखक और एक अनुवादक होता है। एक अनुवादक का नैतिक उत्तरदाईत्व होता है कि वह मूल रचना का तत्व हर हाल में बनाये रखे ताकि अनुवाद मात्र भाषान्तर ना प्रतीत हो। आधुनिक तांत्रिक और भूमंडलीकरण के युग में अनुवाद का क्षेत्र बहुत अधिक बढ़ गया है, वैश्विक, साँस्कृतिक, वैज्ञानिक और तांत्रिक एकता स्थापित करने में अनुवाद का महत्व और अधिक बढ़ गया है।

४.८ लघुत्तरिय प्रश्न

१. अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति किस धातु से हुई ?

२. 'अनुवाद' किस भाषा का तत्सम शब्द है ?

३. डॉ. भोलेनाथ तिवारी ने अनुवाद की क्या परिभाषा दी है ?

४. आशु अनुवाद किसे कहते हैं ?

५. 'ऊँट के मुँह में जीरा' यह मुहावरा किस अनुवाद का उदाहरण है ?

४.९ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१. ----------- के अनुसार अनुवाद एक पुनर्स्थापन की प्रक्रिया है। (विलियम्स प्राउले, विलियम्स जॉन, जॉन मैक)

२. टैन्काक ------------ सिद्धांत के प्रणेता हैं। (शैलीगत, समता, पुनरकोडीकरण)।

३. -------- अनुवाद में जन-जीवन की संस्कृति की अभिव्यक्ति है। (साँस्कृतिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक)।

४. -------अनुवाद मुख्यतः बैंकिंग व्यवसाय का है। (साहित्यिक, वैज्ञानिक, वाणिज्यिक)

४.१० संभावित प्रश्न

१. अनुवाद की प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए।

२. अनुवाद के सिद्धान्तों को उदाहरण के साथ लिखिए।

३. अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख कीजिये।

४.११ संदर्भ ग्रंथ

१. प्रयोजनमूलक हिन्दी: सिध्दान्त और प्रयोग - दंगल झाल्टे।

२. प्रयोजनमूलक हिन्दी - माधव सोनटक्के।

३. प्रयोजनमूलक हिन्दी - विनोद गोदरे |

❄❄❄❄❄❄❄

५

अनुवाद के उपकरण

इकाई की रूपरेखा

५.0 इकाई का उद्देश्य

५.१ प्रस्तावना

५.२ अनुवाद के उपकरण

५.३ मशीनी अनुवाद : वर्तमान स्थिति

५.४ सारांश

५.५ लघुत्तरिय प्रश्न

५.६ बोध प्रश्न

५.० इकाई का उद्देश्य :

प्रस्तुत इकाई में निम्नलिखित बिंदुओ का छात्र अध्ययन करेंगे -

- अनुवाद के उपकरण कौन-कौन से है, उसे देख लेंगे |
- मशीनी अनुवाद की वर्तमान स्थिति को देखेंगे |

५.१ प्रस्तावना :

मनुष्य एक बुद्धिजीवी प्राणी है। उसने अपनो के आधार पर स्वयं के सहयोग के लिए तरह-तरह के उपकरणों का इजात किया। अगर हम अनुवाद के क्षेत्र की बात करें तो हमें अनुवाद का क्षेत्र बहुत विस्तृत और व्यापक देखने को मिलता है। आज के इस दौर में घर से लेकर बाहर तक, बाजार से लेकर कार्यालय तक सभी स्थानों पर अनुवाद अपने पैर जमा लिये हैं। जैसे-जैसे हम विकासवाद की तरफ बढ़ते जा रहे हैं वैसे-वैसे अनुवाद की महत्ता में भी बढ़ोतरी आ रही है। अनुवाद की इस बढ़ती महत्ता का मूल कारण केवल-व-केवल बाजारवाद ही है। अतः हम देखतें हैं कि आज के दौर में जिस व्यक्ति को जितनी अधिक भाषाओं का ज्ञान और भाषा अभिव्यक्ति की कला आती है, वह उतना ही अधिक बुद्धिमान और समाज उपयोगी है। इस प्रकार व्यक्ति अपनी भाषा कौशल और उपकरणों को आधार बनाकर अनुवाद कला को और अधिक विकसित कर सकता है। अनुवाद करने के लिए व्यक्ति को सहायता पहुँचाने के लिए आज तरह-तरह के यंत्र उपलब्ध है ; जैसे 'गूगल ट्रांसलेशन टूल', 'गूगल इनपुट', 'इजी इंग्लिश टाइपिंग', 'टाइपिंग बाबा', 'इंडिया टाइपिंग', 'ट्रांसलेशन. कॉम', 'हिंदी खोज', 'इंग्लिश वाले', 'हिंदी राजभाषा' आदि सहायक वेबसाइट तथा 'एक भाषीय शब्दकोश', 'द्विभाषायी शब्दकोश', 'पुस्तकें', 'समान्तर कोश' आदि उपकरण अनुवाद कला के लिए महत्वपूर्ण है।

५.२ अनुवाद के उपकरण :

जब किसी मूल पाठ को दूसरी भाषा में प्रस्तुत किया जाता है, तो उसे अनुवाद कहा जाता है। मूल पाठ की भाषा को स्रोत भाषा (Source Language या SL) कहा जाता है, जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उस भाषा को लक्ष्य भाषा (Target Language या TL) कहा जाता है। इस प्रकार अनुवाद की प्रक्रिया में कम से कम दो भाषाएँ शामिल होती हैं स्रोत भाषा (SL) और लक्ष्य भाषा (TL)। कभी-कभी इस प्रकिया में तीन भाषाएँ भी हो सकती हैं।

अनूदित पाठ को लक्ष्य भाषा में तभी स्वीकार किया जाता है, जब वह मूल पाठ की छाया अर्थात् अवांछित प्रभाव से मुक्त हो और एक नया पाठ जिसे पढ़ने पर ऐसा महसूस हो कि यह लक्ष्य भाषा में ही मूल रूप से लिखा गया है। भाषिक अंतरण के दौरान हुई मध्यस्थता की प्रक्रिया की कोई भी निशानी नजर नहीं आनी चाहिए। इस मंजिल तक पहुँचने के लिए या इस नतीजे को पाने के लिए अनुवादक को लक्ष्य भाषा का भी पूर्ण रूप से ज्ञान होना अति आवश्यक है।

अनुवाद क्रिया भाषा से जुड़ी हुई क्रिया है। इसके अधिकतर बौद्धिक उपकरण (intellectual tool) भाषाविज्ञान से ही जुड़े हैं। परिणामस्वरूप स्रोत और लक्ष्य भाषाओं का ज्ञान और मूल पाठ से जुड़ी हुई जानकारी एक अनुवादक के बुनियादी यंत्र हैं। इन बुद्धिजीवी और भाषावैज्ञानिक यंत्रों के अतिरिक्त कुछ बुद्धिजीवी गैर भाषा वैज्ञानिक साधन भी अनुवादक के लिए आवश्यक हैं। जैसे विषय की जानकारी, अनुवाद के क्षेत्र में अनुभव और कुछ ऐसे सहकर्मी जिनके साथ आवश्यकता पड़ने पर विचारों का आदान-प्रदान हो सके। अत: इस क्षेत्र में हो रहे शोध और विकास में लगभग दो दशक बीत चुके हैं।

जिस औज़ार की मदद से कार्यकुशलता को बढ़ाया जा सके, उसे 'यंत्र' (tool) कहा जाता है। फलतः यंत्र मानव शरीर को किसी भी कठिन कार्य करने या बल के प्रयोग में मदद दिलाने के लिए भौतिक या मशीनी सहायक होते हैं। उदाहरण के तौर पर हम देखते हैं कि हथौड़ी के बगैर दीवार में कील ठोकने जैसे छोटे से कार्य को करने में भी काफी परेशानी होती है। यहाँ हथौड़ी को भौतिक (material) यंत्र कहा जा सकता है। इस प्रकार यंत्र के बहुत सारे उदाहरण हमारे सामने विद्यमान है, जिसे हम रोजमर्रा के काम के उपयोग करते हैं। परिणामत: मनुष्य की गतिविधियों का दायरा ज्यों-ज्यों बढ़ गया, उसके ज्ञान का विकास जितनी ही तेज़ी से होता गया है। अत: उसके अनुरूप ही 'यंत्र' शब्द के मतलब का विस्तार भी हो गया है। पहले भले ही इस शब्द का प्रयोग ठोस वस्तुओं के संदर्भ में ही किया जाता रहा हो, पर अब यही शब्द निराकार और स्पर्शगम्य वस्तुओं के संदर्भ में भी किया जाने लगा है। पहले यंत्र केवल मानव के शरीर की मदद के लिए ही थे, किंतु अब मनुष्य के मन और मस्तिष्क की सहायता के लिए भी यंत्र अथवा उपकरण उपलब्ध हैं। उदाहरण के तौर पर हम 'सॉफ्टवेयर' 'कंप्यूटर प्रोग्राम' आदि को देख सकते हैं।

आधुनिक युग में अनुवाद की बढ़ती महत्ता के साथ-साथ अनुवाद के उपकरणों में भी वृद्धि हुई है। सन् २००० में एम.आई.टी. (Massachusetts Institute of Technology: MIT) के लिंकॅल्न (Lincoln) प्रयोगशाला में यंग-शुक (Young Suk) और क्लीफॉर्ड वीन्सटाईन (Clifford Weinstein) ने एक अत्याधुनिक कोरियन-अंग्रेजी वाक् से वाक् अनुवाद यंत्र के

प्रोटोटाईप प्रणाली का प्रदर्शन किया था। सन् २००१ में चीनी देश में बोली जाने वाली अल्पं भाषा जैसे क्रोशियन (Croatian) के लिए कार्नेगी मेलॉन विश्वविद्यालय (Carnegie Mellon University) के भाषा-प्रौद्योगिकी संस्थान के जेमी कारबोनेल (Jaime Carbonell) ने वाक् से वाक् अनुवाद प्रणाली का निर्माण किया। यू.एस.सी. (USC) के जैव चिकित्सक अभियंता थियोडोर बर्जर (Theodor Berger) और ज़िम शिह (Jim Shih) ने एक नये बर्जर-लिअव (Berger-Liaw) तंत्रिकीय संजाल वाक् अभिज्ञान प्रणाली (Neural Network Speech Recognition System : SRS) का विकास किया है। यह उपकरण मानव की अपेक्षा वाचिक भाषा को समझने में अधिक सक्षम है। सन् २००२ में एक एजेंट आधारित न्यूज़ रीडर प्रणाली (Agent-Based News Reader Device) का विकास हुआ। यह आलेखों का अनुवाद कर उसे एमपी३ (MP3) श्रव्य फाइल के रूप में परिवर्तित करता है।

सन् २००६ में नासा के निर्देशक रफु संजली (Rafu Sanjali) ने पृथ्वी से एक रोबोट नियंत्रित यान द्वारा मंगल ग्रह पर होने वाले चौथे आपदा को ९९.९९९ प्रतिशत परिशुद्धता के साथ मशीनी अनुवाद प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर नाकाम कर दिया। सन् २००७ में माइक्रोसॉफ्ट ने "What do you want to think today?" अभियान (Campaign) के माध्यम से एक विचार अभिज्ञान अंतरापृष्ठय (TRI) का प्रदर्शन किया गया। सन् २००८ में एल एण्ड एच (L&H) के ट्रैवल सनग्लासेज द्वारा सनग्लासेज धारक की मातृभाषा में रोड चिह्न, ट्रैफिक चिह्नों को तत्काल अनुवाद करने की सुविधा प्रदान की गयी। सन् २००९ में जापानी से अंग्रेजी डाक्यूमेंटेशन अनुवाद प्रोग्राम की अंतिम कॉपी बनाई गई है। यह मानव संपादन की जरूरत को कृत्रिम बुद्धि आधारित अर्थीय संजाल का प्रयोग कर कम करता है। अत: अन्य देशों के साथ-साथ भारत में भी मशीनी अनुवाद प्रसारण होना शुरू हो गया है।

भारत में सभी क्षेत्रीय भाषाएँ या तो मातृभाषाएँ हैं या क्षेत्रीय तौर पर प्रशासनिक भाषाएँ हैं अतएवं व्यावसायिक अनुवादक बनने के इच्छुक व्यक्ति को कम-से-कम तीन भाषाओं की जानकारी होना आवश्यक है। भौतिक साधनों के वर्ग में शब्दकोश, व्याकरण की किताबें, समांतर कोश (thesaurus), विश्वकोश (encyclopedia) और संदर्भ पुस्तकें (reference books) आदि अनुवादक के कार्य में सहायक होते हैं। वस्तुत: इस क्षेत्र में भौतिक यंत्रों का आगमन नया है। भाषावैज्ञानिक भौतिक यंत्र जैसे कि डाटा लिंक (data link) और कम्प्यूटर कृत शब्दकोशों का भी विकास कर रहे हैं। इस प्रकार अनुवाद की मशीनों की लोकप्रिय बढ़ने लगी है। इनके अतिरिक्त गैर-भाषावैज्ञानिक मशीनी यंत्र जैसे कि 'टाइपराइटर टेलीफोन', 'शब्दकोश मशीन', 'कॉपी मशीन', 'इलेक्ट्रॉनिक संग्रहण' एवं 'पुनःप्राप्ति यंत्र' और 'टेलेक्स' और 'फैक्स' भी उपलब्ध हैं।

१. शब्दकोश :

अनुवादक के लिए सबसे बड़ा सहायक उपकरण शब्दकोश होता है। अनुवाद चाहे साहित्यिक पाठ का हो या तकनीकी, सभी अनुवादकों को अच्छे शब्दकोश की जरूरत अनिवार्य रूप से महसूस होती है। शब्दों के पर्याय देने के साथ-साथ अच्छे शब्दकोश में स्वनिक लिप्यंकन (Phonetic transcription) (शब्द का उच्चारण), पर्याय (equivalent), अर्थ अथवा दूसरी भाषा में पर्याय (शब्द-साधन, derivation) और व्युत्पत्ति (etymology) भी दी जाती है। किसी भी जीती जागती भाषा का शब्दकोश

कभी भी निश्चित रूप से संपूर्ण नहीं कहा जा सकता है क्योंकि समय के साथ-साथ पुराने शब्द बोलचाल की भाषा से लुप्त हो जाते हैं और नए शब्दों का विकास हो जाता है तथा शब्दों के अर्थों में भी लगातार बदलाव होते रहे हैं। जैसे कि हिंदी के पद शब्द का अंग्रेजी के “Post” पर्याय के रूप में अर्थ विस्तार है। आधुनिक शब्दकोश कई मायनों में वर्णनात्मक (descriptive) न होकर अनुशासनात्मक (prescriptive) हैं क्योंकि वे भाषा के स्वरूप को बेहतर बनाने की कोशिश करते हैं। अनुवादक के लिए शब्दकोश सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है ; चाहे वह एकभाषी हो या द्विभाषी या बहुभाषी हो। समांतर कोश, ज्ञानकोश, पारिभाषिक शब्दावली आदि भी अनुवाद के महत्त्वपूर्ण उपकरणों में से एक है।

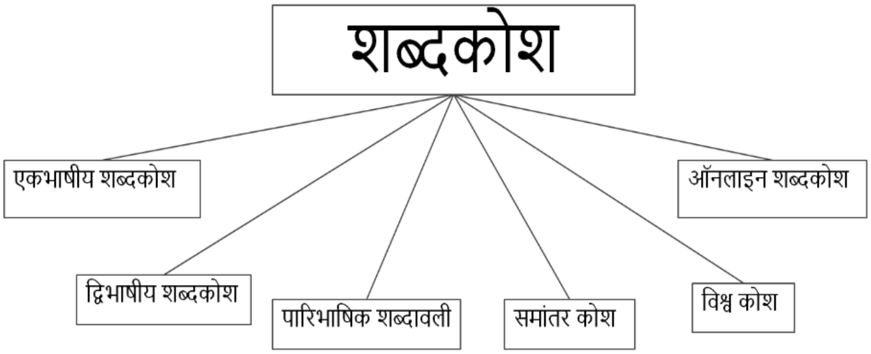

अ) एकभाषी शब्द-कोश :

शब्दों की परिभाषा, पर्याय एवं अर्थ एक ही भाषा में दिये जाते हैं। साधारणतः इन शब्दकोशों का संकलन उस भाषा विशेष के विशेषज्ञों की एक समिति द्वारा किया जाता है जिसका यह परिणाम होता है कि अनुवादक को किसी भी शब्द के विश्वसनीय, उपयोगी, यथातथ्य अर्थ और भावानुवाद उपलब्ध हो जाते हैं। एकभाषी कोश अनुवादक के लिए तब उपयोगी होता है, जब स्रोत भाषा के किसी शब्द के लक्ष्य भाषा में दिये गये पर्यायों के बीच अर्थ का अंतर समझना हो। एकभाषी शब्दकोष से अनुवादक को स्रोत भाषा को स्पष्ट रूप से समझने में मदद मिलती है।

एकभाषी शब्दकोश लेखक केंद्रित या पाठ-आधारित भी हो सकते हैं। उदाहरणार्थ "ब्रजभाषा सूरकोश" लेखक- केंद्रित शब्दकोश है। ऐसे शब्दकोश में लेखक विशेष द्वारा प्रयोग किये गये शब्दों को संग्रहीत किया जाता है। अत: ऐसे शब्दकोशों से भी अनुवादक को बहुत मदद मिलती है। क्योंकि इनमें शब्दों के निजी और विचलित प्रयोग भी मिल जाते हैं। परिणामस्वरुप अनुवादक को हिंदी के एकभाषिक कोशों की जानकारी आवश्यक होनी चाहिए, ताकि वह अनुवाद के कार्य को सहजता से पूर्ण कर सके।

ब) द्विभाषी शब्द-कोश :

अनुवादक को अनुवाद करते समय द्विभाषी शब्दकोश की विशेष आवश्यकता होती है। अत: यह अनुवाद का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है जिसकी मदद से

वह लक्ष्य भाषा में उपयुक्त शब्दों का चयन करता है। द्विभाषी शब्दकोश के उपयोग से अनुवादक का समय भी बचता है। अत: द्विभाषीय शब्दकोश स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के बीच पुल का काम करते हैं। उदाहरण के तौर पर अगर हम देखते हैं कि अनुवादक बांग्ला भाषा से हिंदी भाषा में अनुवाद कर रहा है, तो उसके लिए बांग्ला- हिंदी शब्दकोश अनिवार्यत: आवश्यक है। इसी तरह अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करने के लिए अच्छा अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश अनुवादक के लिए आवश्यक है। विश्वभर में अंग्रेजी-हिंदी के कई शब्दकोश उपलब्ध हैं। अत: अनुवादक को यह जान लेना चाहिए कि उसके लिए कौन सा शब्दकोश उपयोगी और महत्त्वपूर्ण है। तथा अनुवादक के पास शब्दकोश होना मात्र पर्याप्त नहीं है। उसे कोश का उपयोग करना आना चाहिए। जिन शब्दों के अर्थ उसे नहीं आते उनके लिए उसे अनिवार्य रूप से कोश देखना ही चाहिए साथ ही अनुवाद सीखने की प्रक्रिया में उसे उन शब्दों के लिए भी कोश देखने की आदत डालनी चाहिए जिनका अर्थ उसे पता है।

शब्दों का अर्थ पर संदेह होने पर शब्दकोश को देखना ही अच्छा अनुवादक बनने की कुंजी मानी है। उदाहरण के तौर पर अगर आप देखते हैं कि Reference का अर्थ संदर्भ होता है, यदि आप कोश नहीं देखते तो आप हमेशा reference का सही अनुवाद नहीं कर सकेंगे ; जैसे, यदि कहा गया है "terms of reference'' और आप लिख देते हैं 'संदर्भ की शर्तें' तो यह बिल्कुल गलत होगा क्योंकि वास्तव में "terms of reference" का अर्थ "विचारणीय विषय" होता है। इसी तरह एक शब्द के अनेक पर्यायों में से सही शब्द चुनाव करने का गुण अनुवादक में होना चाहिए। कोश में शब्द विशेष से बनने वाले शब्दों को भी शामिल किया जाता है, उनके पर्याय भी दिए जाते हैं तथा उनके व्याकरणिक रूप का उल्लेख होता है साथ ही उससे निर्मित व्याकरणिक रूप रचना का भी उल्लेख होता है।

विशेष विषयगत शब्दकोश सामान्य शब्दकोशों में एकभाषी या द्विभाषी शब्दकोशों में सामान्य तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली को भी शामिल किया जाता है। इनके अतिरिक्त कुछ विशेष शब्दकोश ऐसे हैं जो एक खास क्षेत्र से जुड़े हुए शब्दों की जानकारी देते हैं। ऐसे शब्दकोश व्यावसायिक अनुवादक के लिए बहुत उपयोगी साबित होते हैं। उदाहरण के लिए २३ भाषाओं में उपलब्ध Interactive Terminology of Europe एक बहुक्षेत्रीय शब्दकोश है ; 'American National Biography' एक ही विषय का शब्दकोश है और 'African American National Biography Project एक उपक्षेत्रीय शब्दकोश है। आजकल हर महत्वपूर्ण, प्रासंगिक विषय के विशेष शब्दकोश हैं जैसे 'ऑक्सफोर्ड मौसम शब्दकोश' 'ऑक्सफोर्ड संगीत शब्दकोश', 'चिकित्सा शब्दकोश', 'विधिक शब्दकोश' इत्यादि मौजूद है।

इ) पारिभाषिक शब्दावली कोश :

साधन शब्दसंग्रह (Glossary) या पारिभाषिक शब्दावली भी अनुवाद के आवश्यक उपकरण हैं। व्याख्या (Gloss) का अर्थ है वे शब्द, जो किसी भी पाठ के पार्श्व (margin) में कठिन शब्दों को समझाने, कोई टिप्पणी करने या भावानुवाद देने के लिए सम्मिलित किए गए हों। यह अन्य शब्दकोशों से भिन्न है क्योंकि इसमें उच्चारण, व्युत्पत्ति या व्याकरण से संबंधित जानकारी नहीं दी जाती है। अत: पारिभाषिक शब्दसंग्रहों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। किताबों, पत्रिकाओं, प्रतिवेदनों और शोध निबंधों में भी कभी-कभी इस तरह की शब्दावली अलग से दी जाती है। पारिभाषिक शब्द का लक्ष्य भाषा में पर्याय पारिभाषिक शब्द के रूप में दिया जाता है इसलिए इस प्रकार की शब्दावली विषय विशेष अथवा क्षेत्र विशेष की पारिभाषिक शब्दावली की अनुवादक के लिए बहुत उपयोगी होती है।

विकसित देशों में विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक सेवाएँ उपलब्ध हैं जिनका लाभ अनुवादक उठा सकते हैं। पारिभाषिक शब्दावली में शब्दों के डाटा बैंक होते हैं, जो विशेष रूप से किसी खास कार्य के लिए विकसित किए गए हैं और जिनका लगातार आधुनिकीकरण किया जाता है। इन सेवाओं की एक कमी यह है कि इन्हें शब्दकोश या शब्दसंग्रहों की तरह अनुवादक अपने पास रख कर किसी भी समय उनकी मदद नहीं ले सकता है। अत: सभी भारतीय भाषाओं में इलेक्ट्रॉनिक शब्दकोशों के विकास का कार्य चल रहा है एवं ऐसे कंप्यूटरीकृत शब्दकोशों के साथ-साथ सस्ते कंप्यूटर भी उपलब्ध हो जाएँगे और उसके साथ-साथ भारतीय अनुवादकों को तकनीकी और साहित्यिक पारिभाषिक शब्दों की जानकारी भी मिल जाया करेगी।

ई) समांतर कोश (Thesaurus) :

यह शब्दकोश से मिलता-जुलता है, मगर यह उदाहरण या व्युत्पत्ति - विषयक ढाँचों का उल्लेख नहीं करता। अनुवाद के छात्रों के लिए यह एक अत्यंत उपयोगी साधन है क्योंकि इसमें एक ही शब्द से संबंधित विभिन्न अर्थों वाले शब्द एक साथ एकत्र रहते हैं, जिससे अनुवादक को लक्ष्य भाषा में सबसे उपयुक्त शब्द का चयन करने में सहायता मिलती है। अंग्रेजी में Roget का thesaurus सबसे अधिक प्रचलित समांतर कोश है। यूनानी भाषा में 'thesaurus' का मतलब है 'खज़ाना' और यह अनुवादक के लिए वास्तविक रूप से खजाना साबित होता है।

उ) विश्वकोश (Encyclopedia) :

अनुवादक के लिए विश्वकोश एक शक्तिशाली और उपयोगी उपकरण है, जिसमें ऐतिहासिक, भौगोलिक, वैज्ञानिक, साहित्यिक, दार्शनिक, राजनैतिक आदि कई प्रकार के विषयों की जानकारी संक्षेप में मिलती है। अनुवादक के लिए विश्वकोश अत्यंत महत्वपूर्ण संदर्भ-ग्रंथ का काम करता है क्योंकि इस ग्रन्थ में

मूल पाठ के अपरिचित विषय भी आ जाते हैं। यदि स्रोत भाषा का कोई शब्द अनुवादक के लिए नया है, तो वह आम शब्दकोश की मदद ले सकता है ; एकभाषी शब्दकोश इसके लिए पर्याप्त है। किन्तु यदि वह शब्द किसी विशेष वर्ग का न हो तो इस स्थिति में अनुवादक केवल उस शब्द का अर्थ जानने का ही इच्छुक होता है। यदि अनुवादक उस शब्द का लक्ष्य भाषा में समानार्थ चाहता है, तो उसे द्विभाषी शब्दकोश की मदद लेनी होगी और यदि वह शब्द किसी विशिष्ट वर्ग का है, तो उसे विशेष शब्दकोश की सहायता लेनी होगी।

ऊ) ऑनलाइन शब्दकोश :

कम्प्यूटर और इंटरनेट ने ऑनलाइन शब्दकोशों के रूप में अनुवादकों को एक अन्य उपकरण भी उपलब्ध करा दिया है। ऑनलाइन शब्दकोश से अभिप्राय है ; इंटरनेट पर उपलब्ध शब्दकोश। ऐसे शब्दकोश एकभाषी भी होते हैं और द्विभाषी भी। इंटरनेट पर उपलब्ध शब्दकोश में किसी शब्दकोश की वेबसाइट में जाकर आवश्यक शब्द टाइप करने पर उसके अर्थ सामने आ जाते हैं। इस तरह ऑनलाइन शब्दकोश का लाभ यह है कि अनुवादक को शब्दकोश का भार उठाना नहीं पड़ता और साथ ही शब्दकोश पर होने वाले व्यय से भी बचा जा सकता है। अत: ऐसे शब्दकोशों का जल्दी-जल्दी नवीनीकरण भी होता रहता है जबकि पारंपरिक शब्दकोशों का नवीनीकरण उनके नए संस्करण के प्रकाशित होने पर ही हो पाता है। अंग्रेजी-हिंदी या हिंदी अंग्रेजी ऑनलाइन के ढेरों ऑनलाइन शब्दकोश इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। हिंदी के ऑनलाइन द्विभाषी कोश अनुवादक के लिए मददगार हो सकते हैं।

हिंदी के ऑनलाइन शब्दकोशों की कुछ वेबसाइटों के नाम इस प्रकार है -

१. http://www.google.com/translate-dict

२. http://www.shabdakosh.com/

३. http://www.hinkhoj.com/

४. http://www.cfilt.iitf.ac.in/

५. http://www.shabdakosh.com/shabadanjali

५.३ मशीनी अनुवाद : वर्तमान स्थिति :

मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में विश्व के प्रत्येक देशों में भिन्न-भिन्न तरीके से प्रगति हुई है। मशीनी अनुवाद प्रणाली प्राकृतिक भाषा संसाधन के अनुप्रयोगों में से एक है। इसके विकास हेतु वाक् और पाठ दोनों स्तरों पर अनेक प्रकार के यंत्रानुवाद से इतर मॉड्यूल, उपकरण और सॉफ्टवेयर की आवश्यकता होती है। भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास (TDIL) परियोजना के अंतर्गत मशीनी अनुवाद के लिए कई उपकरण निर्मित किए गए हैं। इनमें प्रमुख रूप से ज्ञान स्रोत (समानांतर : Parallel) कॉरपोरा, बहुभाषिक लाइब्रेरी कोश, कोशीय स्रोत, ज्ञान उपकरण (भाषा संसाधन टूल्स, अनुवाद स्मृति टूल्स), अनुवाद सहायक प्रणाली

(मशीनी अनुवाद, बहुभाषिक सूचना एक्सेस, सूचना प्रत्यानयन), मानव-मशीन अंतरापृष्ठ प्रणाली (संप्रतीक अभिज्ञान प्रणाली, वाणी अभिज्ञान प्रणाली, पाठ से वाक् प्रणाली), स्थानीयकरण (Localization), भाषा-प्रौद्योगिकी मानव स्रोत विकास (प्राकृतिक भाषा संसाधन और कंप्यूटेशनल भाषाविज्ञान में मानवशक्ति का विकास) (Language Technology Human Resource Development) आदि है।

भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर द्वारा 'अनुकृति' नामक डाटाबेस का निर्माण, कथा-भारती नामक भारतीय क्लासिक अनुवाद और भाषा-भारती नामक लाइब्रेरी स्रोतों का डिजीटलीकरण, प्रगत संगणन विकास केंद्र (C-DAC) नोएडा द्वारा 'ज्ञान निधि' नामक समानान्तर पाठगत कॉरपोरा का निर्माण, ई.एम.एल.ई. (EMLE- Enabling Minority Language Engineering) द्वारा लिखित एवं वाचिक डाटा का संग्रह किया जा रहा है। वाचिक कॉरपोरा के संकलन हेतु केंद्रीय इलैक्ट्रॉनिक अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (CEERI), नई दिल्ली द्वारा संचालित रेलवे पूछ-ताछ प्रणाली और अक्षर-विभाजन (Syllabification) के लिए हिंदी-बंगाली पाठ से वाक् पद-विच्छेदन नियमों का निर्माण, मराठी और पंजाबी के लिए 'विश्लेषिका' नामक सांख्यिकीय पाठ विश्लेषक उपकरण का निर्माण, प्रगत संगणन विकास केंद्र (C-DAC) नोएडा द्वारा 'ज्ञाननिधि' कॉरपोरा का प्रयोग कर हिंदी, प्रगत संगणन विकास केंद्र (C-DAC) कोलकाता द्वारा असमी और मणिपुरी भाषा में वाक्-संश्लेषक और स्वरचालित वाक्-अभिज्ञान प्रणाली का निर्माण, एच०पी० लैब (HP Labs) द्वारा पाठ से वाक् प्रणाली के लिए हिंदी और अंग्रेजी डाटाबेस का निर्माण, स्वरचालित वाक्-अभिज्ञान प्रणाली के लिए असमी और भारतीय अंग्रेजी डाटाबेस का निर्माण, हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में मराठी, वर्तमान में अंतरराष्ट्रीय सूचना-प्रौद्योगिकी संस्थान, तमिल और तेलुगु के लिए संग्रह कार्य जारी है।

टाटा अनुसंधान संस्थान (Tata Institute of Fundamental Research), मुंबई द्वारा वाक्-अभिज्ञानक, वाक्-संश्लेषक, भाषा-मॉडलिंग और वाक्-डाटाबेस का निर्माण, प्रोलॉगिक्स सॉफ्टवेयर (Prologix Software), लखनऊ द्वारा हिंदी वाक्-संश्लेषक का निर्माण, भ्रीगस सॉफ्टवेयर लिमिटेड (Bhrigus Software Limited), हैदराबाद द्वारा हिंदी, तेलुगु वाक्-अभिज्ञानक, वाक्-संश्लेषक का निर्माण, वेबल मीडियाट्रॉनिक्स (Webel Mediatronics), कोलकाता द्वारा हिंदी, बंगाली वाक्-संश्लेषक का निर्माण किया जा रहा है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई संयुक्त राष्ट्र संघ की वित्तपोषित परियोजना हिंदी शब्द संजाल के लिए कार्य कर रही है। इसके अलावा लिनक्स मंच के लिए देवनागरी की एच.टी.एम.एल. दस्तावेजों के अनुक्रमण और खोज के लिए हिंदी खोज इंजन का विकास किया जा चुका है और हिंदी बुलेटिन बोर्ड प्रणाली का कार्य विकासाधीन है।

'अक्षर', 'शब्दमाला', 'शब्दरत्न', 'आलेख', 'भारती', 'मल्टीवर्ड' आदि शब्द संसाधन के अलावा 'जिस्ट,' तकनीक (ग्राफिक एंड इंडियन स्क्रिप्ट टर्मिनल) पर कई हार्डवेयर युक्ति का विकास किया जा चुका है। सी-डैक, बंगलौर द्वारा संस्कृत शब्द संसाधक का कार्य निर्माणाधीन है। पाठ-संसाधन के क्षेत्र में संस्कृत विद्वानों के प्रयोग के लिए संस्कृत शब्द संसाधक सहित संस्कृत संलेखन प्रणाली विकसित की जा रही है। संस्कृत भाषा के लिए प्राकृतिक भाषा समझ प्रणाली के रूप में 'देशिका' नामक सॉफ्टवेयर पैकेज विकसित किया गया है, जो प्राचीन भारतीय विज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित है। कंप्यूटर भाषाविज्ञान शोध

एवं विकास के संस्कृत अध्ययन केंद्र के अंतर्गत, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा डॉ० गिरीश नाथ झा के मार्गदर्शन में एम.फिल. शोध के दौरान कोशीय स्रोत के रूप में वर्ष २०११ में 'सुश्रुत सम्हिता' (Sushruta Samhita) नामक ऑन-लाईन आयुर्वेद अनुक्रमणी (On-line Indexing of Ayurved) निर्मित की गई है।

वर्ष २००८ में बच्चों के लिए मल्टीमीडिया और ई - शिक्षण सामग्री के निर्माण हेतु संस्कृत कंप्यूटेशनल टूलकिट्स और संस्कृत-हिंदी मशीनी अनुवाद http://sanskrit.jnu.ac.in/shmt/index.jsp का विकास किया जा रहा है, जिसके लिए अंबा कुलकर्णी (हैदराबाद विश्वविद्यालय) के नेतृत्व में सात संस्थाओं के संघ निर्मित हुए हैं- जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, अंतरराष्ट्रीय सूचना-प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद, संस्कृत अकादमी, पूमा प्रजना विद्यापीठ, बंगलौर, जे.आर.आर.एस.यू. (Jagadguru Ramanandacharya Rajasthan Samskrita University), जयपुर और तिरूपति विद्यापीठ। कासटल (Castle) सॉफ्टवेयर ने जिस्ट कार्ड के साथ डॉस प्लेटफार्म पर संस्कृत शिक्षण और अभिगम परियोजना विकसित की थी, जिसके अंतर्गत संस्कृत स्वनविज्ञान और रूपविज्ञान के संश्लेषण पक्ष को संश्लेषक का निर्माण किया गया है।

मानव-मशीन अंतरापृष्ठ प्रणाली के विकास के अंतर्गत केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान (CEERI), नई द्वारा सुर, अनुतान से युक्ति 'हिंदी वाणी' नामक पाठ से वाक् परिवर्तन सॉफ्टवेयर विकसित किया गया है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास के वाक्-प्रौद्योगिकी समूह द्वारा भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास कार्य जारी है। अमेरिका द्वारा एक ऐसे तंत्र का विकास किया जा रहा है, जो वाचिक भाषा को संकेत में परिवर्तित कर शीघ्रता से अनुवाद करने में सक्षम है।

अनुवाद सहायक प्रणाली के विकास के अंतर्गत 'प्रबंधिका' नामक कॉर्पस प्रबंधक, 'चित्राक्षरिका' नामक हिंदी प्रकाशित संप्रतीक अभिज्ञान (OCR), बहुभाषिक सूचना प्रत्यानयन प्रणाली, प्रति भाषिक सूचना प्रत्यानयन प्रणाली (Cross Lingual information retrieval system), 'लेखिका' भारतीय भाषा शब्द, संसाधक का विकास हो चुका है। यूनिवर्सल डिजिटल कम्यूनिकेशन रिसर्च इंस्टिट्यूट ने अंकीय कोश की विस्तृत योजना बनायी है। आंग्लभारती मिशन के अंतर्गत मशीन साधित मशीनी अनुवाद के विकास के लिए आंग्ल प्रौद्योगिकी के अंतर्गत अंग्रेजी से भारत की १२ भाषाओं में अनुवाद के लिए इसे ८ अलग-अलग संस्थानों में स्थानांतरित किया गया है। इनमें भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई आंग्ल-मराठी और आंग्ल-कोंकणी पर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहाटी आंग्ल-असमी और आंग्ल-मणिपुरी पर, सी-डैक, पुणे आंग्ल-सिंधी, आंग्ल-उर्दू और आंग्ल-कश्मीरी पर, सी-डैक, कोलकाता आंग्ल-बंग्ला पर, सी-डैक, तिरूवनंतपुरम आंग्ल-मलयालम पर, थापर अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, पंजाब आंग्ल - पंजाबी पर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, आंग्ल--संस्कृत पर कार्यरत हैं।

माइक्रोसॉफ्ट द्वारा माइक्रोसॉफ्ट शोध-मशीनी अनुवाद (Microsoft Research Machine Translation : MSR-MT) नामक एक डाटा-चालित (Data Driven) अनुवाद प्रणाली विकसित की गई है, जिसकी क्षमता अपने समस्त कोशीय और पदबंधीय ज्ञान को सीधे उपलब्ध डाटा से अनुवाद करने की है। इस प्रणाली के पद-विच्छेदक (Parser) अंग्रेजी,

फ्रेंच, जर्मन, कोरियन, जापानी, चीनी और स्पेनिश एवं जेनरेटर (Generator) पांच भाषाओं अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, जापानी और स्पेनिश में उपलब्ध है। माइक्रोसॉफ्ट अनुवादक प्रौद्योगिकी द्वारा बिंग अनुवादक (Bing Translator) नामक सेवा उपलब्ध कराई गई है, जो पूरे पाठ या वेबपृष्ठ को विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करती है। सन १९८८ में इलेक्ट्रोनिक विभाग, भारत सरकार द्वारा सूचना इंटरचेंज के लिए भारतीय लिपि कोड (Indian Script Code for Information Interchange : ISCII) विकसित हुई थी, जिसे सन १९९१ में भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा संशोधित किया गया था।

सी-डैक, मॉड्यूलर, इंफोटेक द्वारा अनेक भारतीय भाषा प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर पैकेज विकसित किये गये हैं। सोनाटा, शिखर, सॉफ्टेक, वेब दुनिया, इंड-लिनक्स, सरल सॉफ्ट, इलैक्ट्रानिकी शोध एवं विकास केंद्र, प्रगत संगणन विकास केंद्र (C-DAC) मुंबई, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर, राष्ट्रीय इंफॉरमेटिक्स केंद्र (National Informatics Centre : NIC), टीसीएस, आई.बी.एम. इंडिया अनुसंधान लैब, ओरेकल आदि सरकारी, अर्द्ध सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों द्वारा पता प्रबंधन प्रणाली (Address Management System), भारतीय भाषा-शिक्षा प्रणाली, व्यापार प्रबंधन प्रणाली आदि के रूप में भारतीय भाषाओं में फॉन्ट आधारित बहुभाषी पैकेज, बहुभाषी शब्द-संसाधक, प्रतिलेखन सुविधा, फॉन्ट आधारित भारतीय डी.टी.पी. पैकेज, डेटाबेस पैकेज के लिए सक्षम स्क्रिप्ट, भारतीय लिपि सक्षम पैकेज, डेटा प्रविष्टि पैकेज, ई-मेल प्रणाली, अनुप्रयोग सॉफ्टवेयर पैकेज को विकसित किया जा चुका है। माइक्रोसॉफ्ट द्वारा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के सहयोग से वर्ष २०१० में हिंदी में कैप्सन लैंग्वेज़ अंतरापृष्ठ पैकेज (Caption Language Interface Package) का निर्माण किया गया है।

प्रौद्योगिकी संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों में शोध कार्यों द्वारा मशीनी अनुवाद की अनेक विधियों, प्रविधियों, उच्चस्तरीय मध्यवर्ती भाषा (High Level Medium Language) व अंतरभाषा एवं द्विभाषी कोशों का विकास किया जा रहा है। अनूदित सामग्री को संपादित कर और अधिक बेहतर बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के अंतरापृष्ठ निर्मित किए जा रहे हैं। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में भाषा-प्रौद्योगिकी विभाग, कंप्यूटेशनल भाषाविज्ञान विभाग और इन्फॉरमेटिक्स एण्ड लैंग्वेज इंजीनियरिंग विभाग भी हिंदी से अन्य भारतीय भाषाओं एवं अंग्रेजी में अनुवाद के लिए ऐसी प्रणालियों के विकास कार्य में संलग्न है। एम.फिल. और पीएच.डी. शोध के अंतर्गत हिंदी के कई सहायक उपकरण का विकास किया जा चुका है तथा शोधार्थियों द्वारा ऐसे अनेक उपकरणों पर निर्माण कार्य जारी है।

५.४ सारांश :

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि भाषा की उत्पत्ति मनुष्य ने अपनी भावना की अभिव्यक्ति के लिए किया है, इस अभिव्यक्ति में अनुवाद कला और उपकरण अत्यधिक सहायक सिद्ध हुए हैं। भाषा व्यवहार के चार रूप हैं। इन चारों में अनुवाद का प्रयोग प्रमुख रूप से होता है। वस्तुत: अनुवाद के साधन उपकरणों में अनुवाद कोशों की उपयोगिता तथा कोशों का इस्तेमाल शब्दों की जानकारी के लिए किया जाता है। अनुवाद करते समय सही भाव, भाषा, अर्थ तथा कोशों का उपयोग करना ही सफल अनुवाद हैं।

५.५ लघुत्तरिय प्रश्न :

१. जिस औजार की मदद से कार्यकुशलता को बढाया जा सके, उसे क्या कहा जाता है?

२. जापानी से अंग्रेजी में डाक्यूमेंटेशन अनुवाद की अंतिम कॉपी किस वर्ष बनाई गई?

३. बच्चों के लिए मल्टीमिडिया और ई-शिक्षण सामग्री के निर्माण हेतु किसका विकास किया जा रहा है?

४. न्यूज़ रीडर प्रणाली में आलेखों का अनुवाद करके उसे किस प्रकार की श्रव्य फ़ाइल् के रूप में परिवर्तित करता है?

५.६ बोध प्रश्न :

१. शब्दकोशों में शब्द के अर्थ के अतिरिक्त और क्या जानकारी दी जाती है?

२. एकभाषी कोश और द्विभाषी कोश में मुख्य अंतर क्या है?

३. विश्वकोश में किस प्रकार की जानकारी दी जाती है?

४. अनुवाद के उपकरणों से क्या तात्पर्य है?

५. शब्दकोशों के मुख्य प्रकारों का परिचय दीजिए।

६. ऑनलाइन शब्दकोश तथा सामान्य शब्दकोश में क्या अंतर है?

❄❄❄❄❄❄❄

६

अनुवाद के क्षेत्र एवं समस्याएँ

इकाई की रूपरेखा

६.० इकाई का उद्देश्य

६.१ प्रस्तावना

६.२ अनुवाद : विश्व बाजार

६.३ अनुवाद के क्षेत्र

६.४ अनुवाद की समस्याओं का समाधान

६.५ अनुवाद की समाधान

६.६ सारांश

६.७ बोध प्रश्न

६.८ संदर्भ ग्रंथ

६.० इकाई का उद्देश्य :

प्रस्तुत इकाई में निम्नलिखित बिंदुओ का छात्र अध्ययन करेंगे -

- अनुवाद में विश्व बाजार को समझ जाएँगे |
- अनुवाद में क्षेत्र कौन-कौनसे है उसे जान पाएंगे |
- अनुवाद की समस्या को विस्तार से जानेंगे |

६.१ प्रस्तावना :

सन् १९९१ के बाद भारत में बाजारवाद ने अपना पैर पसारना शुरू कर दिया। उसके बाद ही से साहित्य जगत से लेकर सूचना जगत तक सभी स्थानों पर बाजारवाद की महत्ता को स्वीकृति मिली है। अत: २१वीं सदी के इस युग में बाजारवाद का महत्त्व बढ़ गया है। चूँकि देखा जाए तो बाजारवाद और अनुवाद का बहुत ही गहरा संबंध रहा है इसलिए वैश्विकरण के इस बाजारवादी समय में अनुवाद को काफी महत्त्वपूर्ण समझा जाने लगा है। यद्यपि जैसे-जैसे मनुष्य विकासवाद की ओर अपने पैर बढाते जाएगा वैसे-वैसे विश्व में अनुवाद की माँग बढती जाएगी। इस प्रकार आज के दौर में बाजारवाद और अनुवाद एक दूसरे के पूरक हो गये हैं। वस्तुत: आज अनुवाद को देखने का तात्पर्य है ; बाजार को देखना। क्योंकि बाजार के कारण ही अनुवाद फलीभूत हुआ है।

६.२ अनुवाद और विश्व बाजार :

अनुवाद की उपयोगिता आरम्भिक काल में ही सिद्ध हो गई थी। किन्तु उस दौर में इसका उपयोग जनजीवन की समझ बनाने तथा ज्ञान-फलक का विस्तार करने के लिए होता था। द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक सम्बन्धों की शृंखला चली, तो यहाँ अनुवाद राजनीतिक-संवाद के लिए महत्त्वपूर्ण हो गया। भारत की बहुभाषिकता, अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीतिक सम्बन्ध की अनिवार्यता, सीमावर्ती स्वायत्तता की वजह से पहले से ही इसकी व्यवस्थित उपादेयता सुनिश्चित हो गयी है। इस तरह आधुनिक युग में अनुवाद ने सभी क्षेत्रों में अपना पैर पसार लिया है। भारतीय ग्रन्थों के अंग्रेज सम्पोषित अनुवाद के कारण दुनिया भर के बौद्धिकों का सामना पहली बार दूषित अनुवाद से हुआ और यहाँ से अग्रसर अनुवाद-कर्म की परख राजनीतिक तिकड़म के हिस्से के रूप में होने लगी। इसलिए अब अनुवाद ज्ञान-विस्तार का साधन भर नहीं रह गया। बल्कि साम्राज्य-विस्तार के आखेटकों ने मूल-पाठ के भाव को जुगाड़ तकनीक से लक्ष्य-भाषा के पाठ में तोड़-मरोड़ शुरू किया।

अनुवाद में अब वाक्यों, पदों, शब्दों, वर्णों, विराम चिह्नों के बीच छुपे हुए अर्थ-ध्वनियों की तलाश और व्याख्या होने लगी और अनुवाद-कर्म एवं अनुवादकों को इस व्याख्या की चतुराई का घातक परिणाम भोगना पड़ा। वैसे तो भारतीय नवजागरण और हिन्दी नवजागरण के अग्रदूतों ने अनुवाद एवं अनूद्य पाठ के चयन के अपने कौशल से प्रदूषित अनुवाद से प्रसारित इन 'विचित्र धारणाओं' को ध्वस्त कर दिया। राजा राममोहन राय से शुरू हुई भारतीय ग्रन्थों के अंग्रेजी अनुवाद की परम्परा आर.सी.दत्त, दीनबन्धु मित्र, अरबिन्द, रवीन्द्र नाथ टैगोर एवं जैसे अन्य अनुवादकों का क्रम सतत चलता रहा। चूँकि इसी तरह अंग्रेजी ग्रन्थों के हिन्दी अनुवाद की परम्परा राष्ट्रीय भावना, देश की स्थिति, आधुनिक चिन्तन और ज्ञान-विज्ञान से भारतीय समाज को परिचित कराने के लिए भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल से शुरू होते हुए अब तक चली आ रही है। उदाहरणस्वरूप मर्चेण्ट ऑफ वैनिस (शेक्सपियर), एजुकेशन (हर्बर्ट स्पेन्सर), ऑन लिबर्टी (जान स्टुअर्ट मिल), रिडिल ऑफ यूनीवर्स (जर्मन वैज्ञानिक अन्स्र्ट हैकल), स्वदेशी भावना और राष्ट्रीय चेतना जगानेवाली पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद ने भारत के स्वाधीनता सेनानियों को आत्मगौरव से सराबोर कर दिया। इस तरह यूरोपीय एवं भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद का चलन चल पड़ा। और साथ ही भारतीय भाषाओं में अनेक पारस्परिक अनुवाद भी शुरू हुए। इसके साथ-साथ एक अच्छी बात यह भी हुई कि शासनाध्यक्षों एवं व्यवसायियों की नजर में अनुवादकों का महत्त्व भी बहुत बढ़ गया। शासन-व्यवस्था में कार्य करनेवाले लोगों को अनुवाद कला की जरूरत समझ में आने लगी। तथा विश्व स्तर पर विभिन्न भाषाओं में अनुवाद का कार्य शुरू हो गया।

भारतीय संविधान के अनुसूची आठ के तहत सन् १९४९ को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम इस अनुसूची में कुल १४ भाषाओं को मान्यता प्रदान किया गया था और साथ संपूर्ण भारत में त्रिभाषा-सूत्र भी लागू किया। भाषा की बहुलता के कारण अनुवाद की महत्ता और अधिक बढ़ी। आगे चलकर सरकारी तथा गैर-सरकारी कार्यालयों में राजभाषा प्रकोष्ठ भी बने। जिसके कारण शासकीय प्रयासों से अनुवाद कर्म से रोजगार और उपार्जन के अवसर सामने आए। जन-संचार एवं प्रकाशन व्यवसाय के विकास के कारण भी अनुवाद के अवसर बढ़े। पर्यटन के विकास से अनुवादकों या दुभाषियों की माँग बढ़ी। इस तरह सरकारी काम-काज में हिन्दी की अनिवार्यता के कारण अनुवाद कार्य लाभदायी दिखने लगा।

व्यवस्था संचालन और सभ्यता संचरण के लिए अनुवाद अनिवार्य साधन बन गया। यद्यपि आधुनिक समय के सूचना-सम्पन्न नागरिक होने के लिए इसकी महत्ता तो पहले ही प्रमाणित हो चुकी थी।

बाजार के वाणिज्यिक विस्तार में इस बौद्धिक पहल की बड़ी भूमिका सिद्ध हुई। स्वयं में तो इसका बाजार-मूल्य ऊर्जस्वित था ही, जीवन-व्यवस्था के सारे क्षेत्रों में इसकी उपयोगिता स्वत: प्रमाणित थी, इस प्रकार अनुवाद कौशल हासिल कर आज असंख्य व्यक्ति रोजगार पा रहे हैं। अनुवाद-एजेन्सियों की बेशुमार निर्मितियाँ देखकर यकीन करना सहज है कि इस समय भारत एवं दुनिया के अन्य देशों में भी अनुवाद एक उपयोगी और महत्त्वपूर्ण कौशल बन गया है। इस कौशल को हासिल कर लेनेवाला व्यक्ति अपने समय का आत्मनिर्भर नागरिक है और भविष्य में सफल जीवन बितानेवालों के बीच गर्व से गरदन ताने जीवन-बसर करता रहेगा।

विगत पाँच-छह दशकों में निजी उपादेयता के तौर पर अनुवाद की पहचान शासन-व्यवस्था, राष्ट्रनिर्माण के सन्देश, वाणिज्य, प्रबन्धन-पद्धति, औद्योगिक विकास, मानवीय सौहार्द के संवर्द्धन, विचार विनिमय, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, कला-साहित्य-संस्कृति के विकास के अनिवार्य घटक के रूप में बनी है। ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में बेहतर उच्च शिक्षा एवं पेशागत ज्ञान में दक्षता हासिल करने में अनुवाद के सूक्ष्मतर उपयोग हो रहे हैं। शुद्ध अनुवाद के अलावा अध्यापन, प्रशिक्षण, प्रशासन, राजनीति, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक सम्बन्ध, अन्तर्राजीय संस्कृतिक जनसम्पर्क, निर्वचन, संचार माध्यम, व्यापार, पारम्परिक व्यवसायों के प्रोन्नयन, स्थापत्य, कृषि, साहित्यिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आदन-प्रदान, प्रकाशन, सिनेमा सब टाइटलिंग, रूपान्तरण, दूरदर्शन, विज्ञापन, पर्यटन, खेल-कूद...सभी क्षेत्रों में इस कौशल की उपादेयता प्रमुख हो गयी है। यकीनन अनुवाद कला के विकास के कारण सुदक्ष अनुवादकों के लिए रोजगार के मार्ग प्रशस्त हुए हैं। इसके साथ-साथ ऐसा कहना गलत नहीं होगा कि कोई मनुष्य अपने समय के वैश्विक परिदृश्य का सूचना सम्पन्न जाग्रत नागरिक अनुवाद के सहयोग के बिना हो ही नहीं सकता। लिहाजा अनुवाद का अपना बाजार-मूल्य तो वर्चस्व में है ही, किंतु बाजार की परिपुष्टि में भी यह जबर्दस्त योगदान दे रहा है।

वैश्विक व्यवसाय के क्षेत्र विस्तार में अनुवाद की अनिवार्य भूमिका रही है। क्योंकि आज के व्यवसायी अनुवाद का सहारा लिए बगैर आम जनता तक पहुँच ही नहीं सकते। चूँकि अनुवाद के बिना इस समय उत्पादक-उपभोक्ता के बीच संवाद-सम्बन्ध स्थापित होना असम्भव है। बाजार और राजनीति की इस विचित्र भाग से बहुत कम लोग परिचित होंगे कि भाषाई फूट से एक पक्ष जन-जन में द्रोह फैलाता है, तो दूसरा अपने उत्पाद के विज्ञापनों का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद कर उनके कानों में सम्मोहन का जादू भरकर उन्हें वस्तु या बाजार की तरफ आकर्षित भी करता है। इसलिए जन-जन तक अपने उत्पाद की सूचना पहुँचाने का हर सम्भव प्रयास आज के व्यवसायी कर रहे हैं। विज्ञापन के पाठ की वस्तुनिष्ठता को भलीभांति समझकर उसके अनुवाद की चेष्टा करने, लक्षित उपभोक्ता समूह को सम्मोहित करने की तरकीब रचने में आज के अनुवादक कुशल हो रहे हैं। इस प्रकार विज्ञापनों के अनुवाद का भरा-पूरा बाजार व्यवस्थित हो रहा है। चूँकि व्यवसाय की सम्पुष्टि एवं संवर्द्धन में अनुवाद का चमत्कार व्यावहारिक तौर पर स्पष्ट दिख रहा है। इसलिए बाजार और राजनीति की यह गहन जुगलबन्दी का प्रभाव आज के समाज में साफ दिखायी दे रहा है।

दुनिया भर के बड़े-बड़े व्यवसायी अनुवाद की इस उपादेयता से सम्मोहित होकर इस ओर आकर्षित हुए हैं। उपभोक्ता समूह तक उत्पाद की पहुँच और गुणगान उसके विक्रय का मूल आधार है। इन दोनों ही काम के लिए उपभोक्ता समूह की भाषा में लुभावने पदों के साथ उत्पाद का विवरण करना अनिवार्य है। इस प्रकार लुभावने नारों से लक्षित समाज में उत्पाद के लिए सम्मोहन पैदा करने को ही विज्ञापन कहते हैं। अन्तर्भाषिक क्षेत्रों के व्यवसायियों के बीच पारस्परिक सम्बन्धों की निरन्तरता के लिए अनुवाद की यह महत्ता तो पहले से थी; किन्तु बाजार के भौतिक क्षेत्र में भी अनुवाद का महत्त्व वैश्विक व्यवसाय पद्धति से जगजाहिर हुआ। लुभावने विज्ञापन के सहारे दुनिया के कोने-कोने के उपभोक्ताओं तक उत्पाद का सम्मोहन पहुँचाने के लिए हर व्यवसाय में अनुवाद की महत्ता इसी तरह काबिज हुई।

भारत की अपनी उत्पादन-क्षमता जैसी भी हो, पर वैश्विक संचार-व्यवस्था के कारण भारतीय बाजार में उत्पाद का कोई अभाव नहीं दिखता। यहाँ हर कुछ उपलब्ध है। जगजाहिर है कि किसी देश का बाजार उन्नत उत्पादन-क्षमता और मजबूत क्रय-शक्ति से समृद्ध होता है। उत्पादन-क्षमता का रिश्ता कौशल एवं संसाधन से है, जबकि क्रय-शक्ति का रिश्ता रोजगार एवं उपार्जन से। उपार्जन का तो पता नहीं, पर विज्ञापनों की चकाचौंध बेशुमारी एवं निर्लज्ज प्रदर्शन देखकर सामान्य अर्थशास्त्रीय ज्ञान रखनेवाला व्यक्ति भी मान बैठा है कि इस वक्त उन्नत व्यावसायिकता के लिए भारत एक बेहतरीन बाजार है। क्रय-शक्ति बढ़ाने के स्रोत की शिक्षा का कोई उद्यम बेशक न दिखे, पर गाहे-बगाहे हमें प्रतीत कराया जाता है कि हम विकास के युग में जी रहे हैं। हम तेजी से विकास कर रहे हैं।

समाज-व्यवस्था एवं दूरदर्शन-चैनलों के हर आचरण से ऐसा स्पष्ट है। घर बैठा, भोजन करता, टी.वी. देखता मनुष्य अचानक से मनत: बाजार पहुँच जाता है। नियति उसे अन्य कुछ सोचने की मोहलत नहीं देती। विज्ञापनों द्वारा उन्हें सन्तान एवं अपने स्वास्थ्य के प्रति इतना आतंकित कर दिया जाता है ; जीवन-मूल्य, राष्ट्र-मूल्य, सम्बन्ध-मूल्य की संवेदना जगाकर उन्हें इतना विह्वल कर दिया जाता है कि वह चाहकर भी घर में बैठ नहीं पाता। जेब अनुमति दे चाहे न दे, बेशक कर्ज ले, पर बाजार जाकर बलि का बकरा जरूर बन जाता है। तय है कि व्यवसायी समुदाय ने जनता की बौद्धिकता खरीदकर जनता को समझा दिया कि बाजार के बिना तुम्हारा जीवन निरर्थक है ! व्यवसायियों की पारखी नजर जनता का मन टटोलती रहती है। उन्हें मालूम है कि जनता दूरदर्शन के चैनल देखे, उपभोक्ता-सेवा केन्द्र से बात करे, अखबार में विज्ञापन देखे, पम्पलेट पढ़े, ऑनलाइन खरीद करे...उसे अपनी भाषा सम्मोहित करेगी। इसलिए वैश्विक बाजार की बहुभाषिकता के मद्देनजर सारे के सारे व्यवसायी अनुवाद की डगर पर चल पड़े हैं। अनुवाद का बाजार इन दिनों वाकई गर्म है।

अनुवाद का फैलाव अब जितनी दिशाओं में हो चुका है, उनमें यह समझना श्रेयस्कर होगा कि यह एक विशेष कौशल है। दो भाषाओं का ज्ञान रखनेवाला हर व्यक्ति हर विषय के पाठ का अनुवाद नहीं कर सकता। मुक्त रूप से काम करनेवाले अधिकांश अनुवादक सोचते हैं कि अनुवाद के लिए दो भाषाओं की जानकारी मात्र पर्याप्त है ; किन्तु ऐसी समझ अनुवादकीय शिष्टाचार की अधूरी समझ है। बेहतरीन अनुवाद के लिए स्रोत एवं लक्ष्य दोनों भाषाओं की गहन समझ के साथ-साथ दोनो पाठ के भाषिक जनपद की संस्कृति एवं पाठ के विषय की गहन समझ आवश्यक है। व्यवसाय की गहन समझ जिन्हें नहीं है, वे साहित्य अथवा तकनीकी

अथवा अन्य विषयों के पाठ के कितने भी सुदक्ष अनुवादक हों, उनका काम जोखिम भरा रहेगा ही।

अनुवाद की भुमिका मे व्यवसाय और विज्ञापन की दुनिया के बड़े-बड़े कर्मियों की राय में भी सामान्य अनुवाद और व्यावसायिक अनुवाद में बड़ा फर्क किया करते है। जन-सम्पर्क, व्यापार के क्षेत्र की बुनियादी विशेषज्ञता हासिल किए बिना व्यावसायिक अनुवाद के क्षेत्र में कूद पड़ना घातक है। हर व्यवसाय की विपणन पद्धती भिन्न होती है। विज्ञापन की सूक्ष्म समझ रखनेवाले सारे लोग जानते होंगे कि पुस्तक, दाल-चावल-आटा एवं घी-तेल-मसाला, शृंगारिक सामग्री, सरकारी योजना और धार्मिक घोषणाओं के विज्ञापनों की भाषा अलग-अलग होगी। फेसबुक, वाट्सैप, ट्विटर पर भ्रष्ट अनुवाद के उदाहरण अक्सर देखे जाते हैं। जरूरतमन्द कौशलविहीन भ्रष्ट अनुवादक धन-लोलुपता के आग्रह में अक्सर अज्ञात क्षेत्रों के पाठ का अनुवाद कर डालते हैं। उत्पादक भी अक्सर न्यूनतम अनुवाद-शुल्क से काम चलाने के चक्कर में ऐसे अनुवादकों से काम करा लेते हैं। इससे उत्पादकों का व्यवसाय तो आहत होता ही है, अनुवाद-व्यवसाय भी सन्देहास्पद होता है। इससे बचने की जरूरत है।

विज्ञापन, प्रेस विज्ञप्ति, बिक्री व्याख्यान, व्यावसायिक प्रचार की सामग्री के अनुवाद की अलग सावधानियाँ होती हैं। इन पाठों की सैद्धान्तिकी और प्रासंगिक ज्ञान में विशेषज्ञता हासिल कर कोई अनुवादक निश्चय ही व्यावसायिक रूप से सक्षम बन सकता है। आखिरकार अनुवाद-कर्म भी एक व्यवसाय है, जिसमें किसी अनुवादक की विशेषज्ञता एवं बेहतर सेवा के बदले उनके ग्राहक उन्हें बेहतर भुगतान देते हैं। व्यापार सम्बन्धी पाठ के अनुवाद के लिए अनुवादकों का रचनात्मक होना अनिवार्य है। स्थानीय भाषा में अनूदित प्रचार सामग्री पढ़कर लक्षित उपभोक्ता जब तक महसूस न करे कि वह बात उसकी भाषा में कही गई है, अनुवाद निरर्थक है। इसलिए व्यावसायिक पाठ के अनुवाद के लिए दक्ष अनुवादकों की आवश्यकता होती है।

भूमंडलिकरण चकाचौंध में व्यापार, सूचना-तन्त्र एवं जनसम्पर्क का क्षेत्र जितनी तेजी से आगे बढ़ रहा है, इन क्षेत्रों में अनुवाद की गुंजाइश भी बढ़ती जा रही है। इस क्षेत्रों में विपुल सामग्री है, जिनका अनुवाद जरूरी है। दुनिया भर की उत्पादक कम्पनियाँ अपने दस्तावेजों का अनुवाद स्थानीय भाषाओं में करवाकर वैश्विक बाजार में फैलना चाह रही हैं। व्यावसायिक प्रतिस्पर्द्धा की होड़ में सभी कम्पनियों को जन-जन तक पहुँचने की जल्दी है। जल्दी नहीं पहुँचेंगे तो उनका उत्पाद बासी हो जाएगा। उन्हें रोज-रोज अपने मुख-पत्र, प्रेस विज्ञप्ति बाजार में पहुँचाने होते हैं। नए-नए ब्राण्डों के विस्तार एवं अपनी व्यावसायिक नीति से क्रेता-समूह को सम्मोहित करना होता है। क्षेत्रीय भाषाओं में प्रचार-सामग्री उपलब्ध करवाकर लक्षित बाजार में वर्चस्व बनाना होता है। इसके साथ-साथ मुहिम ऐसा भी हो कि वातावरण अनुकूलित रहे, कोई ऊब न आए, क्योंकि यह प्रक्रिया निरन्तर बनी रहेगी, कभी रुकेगी नहीं। ऐसे में अनुवादकों के दायित्व को तौलना तो सहज है। विक्रेता को हर हाल में क्रेता की भाषा बोलनी पड़ेगी ; यह व्यवसाय का निर्णायक दर्शन है। विगत कुछ दशकों में दुनिया भर के छोटे-बड़े व्यवसायी यह निष्कर्ष निकाल चुके हैं कि अनुवाद उनकी व्यावसायिक रणनीति का अभिन्न हिस्सा है।

वैश्विक सूचना से आक्रान्त बाजार के तन्त्रजाल से हम भली-भाँति परिचित हैं। पूरी दुनिया हमेशा हमारे सामने होती है। भौतिक दूरियों से अब हम आतंकित नहीं होते। ई-कॉमर्स हमारी

दिनचर्या को प्रभावित और कुछ हद तक निर्देशित करने लगा है। ऑनलाइन मार्केटिंग हमारे जीवन में प्रविष्ट है। दुनिया के किसी भी देश की किसी भी कम्पनी का उत्पाद हम घर बैठे मँगवाने लगे हैं। पर ऐसे ग्राहकों की अभी भी कमी नहीं है जो अपनी बोली के अलावा कोई दूसरी भाषा नहीं जानते, इसीलिए हर लघु एवं मध्यम फलक के व्यवसायी अपने वेबसाइट पर स्थानीय बाजारों की क्षेत्रीय भाषाओं की ओर उन्मुख हैं। सर्वेक्षण से तथ्य सामने आ चुका है कि क्रेता को किसी उत्पाद की सारी जानकारी जहाँ उपलब्ध होगी, वह वहीं से सामान खरीदेगा। व्यवसायी सुनिश्चित कर चुके हैं कि ग्राहकों का भाषा संस्कार बदलने की प्रतीक्षा करते हुए समय नष्ट करने और अपने व्यवसाय को नुकसान पहुँचाने के बजाय हमें ग्राहकों को उनकी भाषा में रिझाना चाहिए। वैश्विक बाजार में लक्षित ग्राहकों तक पहुँचने के लिए प्रचार सामग्री के अनुवाद से अधिक तेज़ और कुशल तरीका व्यवसायियों को कोई नहीं दिखता।

व्यावसायिक प्रचार सामग्री को स्थानीय बनाने से निस्सन्देह उत्पाद की पहुँच उपभोक्ता तक होती है; इसके साथ-साथ यह भी सुनिश्चित होता है कि क्रेता तक सर्वाधिक पहुँच बनाने में कौन-सी भाषा सर्वाधिक सहायक होगी। आम तौर पर सीमान्त क्षेत्र के क्रेता की भाषा छोटी-छोटी कम्पनियों के लिए लाभप्रद होती है, किन्तु लक्षित बाजार के लिए मुद्रण और वितरण की लागत का ध्यान भी उन्हें रखना होता है। नए बाजार में आते ही नए ग्राहक अपनी स्थानीय भाषा में ग्राहक-सेवा सामग्री की अपेक्षा करने लगते हैं। शुरू-शुरू में यह कम्पनी के बजट को प्रभावित अवश्य करता है, किन्तु शीघ्र ही उसकी लाभप्रद परिणति सामने लगती है। ऐसा तभी लाभप्रद होगा जब प्रभावी अनूदित पाठ बाजार में रहेगा।

बाजार के विस्तार में इस बौद्धिक पहल की बड़ी भूमिका सिद्ध हुई। स्वयं में तो इसका बाजार मूल्य ऊर्जस्वित था ही ; जीवन-व्यवस्था के सारे क्षेत्रों में इसकी उपादेयता स्वत: प्रमाणित थी; अनुवाद कौशल हासिल कर आज बहुत सारे लोग रोजगार पा रहे हैं। स्वच्छंद काम करते हुए भरण-पोषण के संसाधन आराम से जुटा रहे हैं। अनुवाद-एजेंसियों की बेशुमार निर्मितियां देख कर यकीन करना सहज है कि इस समय भारत और दुनिया के अन्य देशों में भी अनुवाद एक उपयोगी कौशल है। इस कौशल को हासिल कर लेने वाला व्यक्ति अपने समय का आत्मनिर्भर नागरिक होगा, और भव्य कुलीन सफल जीवन बिताने वालों के बीच गर्व से गरदन ताने जीवन बसर करता रहेगा।

विगत पांच-छह दशकों में निजी उपादेयता के तौर पर अनुवाद की पहचान शासन-व्यवस्था, राष्ट्रनिर्माण के संदेश, मानवीय सौहार्द के संवर्द्धन, वाणिज्य, औद्योगिक विकास, प्रबंधन पद्धति, विचार विनिमय, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, कला-साहित्य-संस्कृति के विकास के अनिवार्य घटक के रूप में बनी है। ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में बेहतर उच्च शिक्षा और पेशेगत ज्ञान में दक्षता हासिल करने में अनुवाद के सूक्ष्मतर उपयोग हो रहे हैं। शुद्ध अनुवाद के अलावा अध्यापन, प्रशिक्षण, प्रशासन, राजनीति, अंतरराज्यीय सांस्कृतिक जनसंपर्क, अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक संबंध, संचार माध्यम, व्यापार, पारंपरिक व्यवसायों के प्रोन्नयन, कृषि, स्थापत्य, साहित्यिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक आदान-प्रदान, प्रकाशन, सिनेमा सब टाइटलिंग, रूपांतरण, दूरदर्शन, विज्ञापन, पर्यटन, खेल-कूद सभी क्षेत्रों में इस कौशल की

उपादेयता प्रमुख हो गई है। इसके साथ-साथ यह बड़ा सच है कि कोई मनुष्य अपने समय के वैश्विक परिदृश्य का सूचना संपन्न जागृत नागरिक अनुवाद के सहयोग के बिना हो ही नहीं सकता। लिहाजा, अनुवाद का अपना बाजार-मूल्य तो वर्चस्व में है ही, बाजार की परिपुष्टि में भी यह जबर्दस्त योगदान दे रहा है।

वैश्विक व्यवसाय के क्षेत्र-विस्तार में अनुवाद की अनिवार्य भूमिका है। अनुवाद का सहारा लिए बगैर आज के व्यवसायी आम जनता तक पहुंच ही नहीं सकता। अनुवाद के बिना इस समय उत्पादक-उपभोक्ता के बीच संवाद-संबंध स्थापित होना असंभव है। बाजार और सियासत की इस विचित्र गांजामिलानी से कम लोग परिचित होंगे कि भाषाई फूट से एक पक्ष जन-जन में द्रोह फैलाता है, तो दूसरा अपने उत्पाद के विज्ञापनों का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद कर उनके कानों में सम्मोहन का जादू भरता है। जन-जन तक अपने उत्पाद की सूचना पहुंचाने का हर संभव प्रयास आज के व्यवसायी कर रहे हैं। विज्ञापन के पाठ की वस्तुनिष्ठता को भली-भांति समझ कर उसके अनुवाद की चेष्टा करने, लक्षित उपभोक्ता समूह को सम्मोहित करने की तरकीब रचने में आज के अनुवादक कुशल हो रहे हैं। विज्ञापनों के अनुवाद का भरा-पूरा बाजार व्यवस्थित हो रहा है। व्यवसाय की संपुष्टि एवं संवर्द्धन में अनुवाद का चमत्कार व्यावहारिक तौर पर स्पष्ट दिख रहा है, बाजार और सियासत की जुगलबंदी का प्रभाव आज के समाज में साफ दिख रहा है।

दुनिया भर के बड़े-बड़े व्यवसायी अनुवाद की इस उपादेयता से सम्मोहित होकर इस ओर आकर्षित हुए हैं। उपभोक्ता समूह तक उत्पाद की पहुंच और गुणगान उसके विक्रय का मूल आधार है। इन दोनों कामों के लिए उपभोक्ता समूह की भाषा में लुभावने पदों के साथ उत्पाद का विवरण अनिवार्य है। लुभावने नारों से लक्षित क्रेता समाज में उत्पाद के लिए सम्मोहन पैदा करने को ही विज्ञापन कहते हैं। विज्ञापन जितना लुभावना होगा, जन-मन पर उसका असर जितना सम्मोहक होगा, उत्पादन की बिक्री उतनी ही अधिक होगी। बाजार की इस लोलुप वृत्ति के कारण सम्भवत: पहली बार पूंजीपतियों को जनभाषा का महत्त्व समझ में आया। उन्हें लगा कि खरीदार की भाषा में उत्पाद का विज्ञापन सर्वाधिक लाभप्रद है। अंतर्भाषिक क्षेत्रों के व्यवसायियों के बीच पारस्परिक संबंधों की निरंतरता के लिए अनुवाद की यह महत्ता तो पहले से थी किंतु बाजार के भौतिक क्षेत्र में भी अनुवाद का महत्त्व वैश्विक व्यवसाय पद्धति से जगजाहिर हुआ। लुभावने विज्ञापन के सहारे दुनिया के कोने-कोने के उपभोक्तओं तक उत्पाद का सम्मोहन पहुंचाने के लिए हर व्यवसाय में अनुवाद की महत्ता इसी तरह बढ़ी हुई।

६.३ अनुवाद के क्षेत्र :

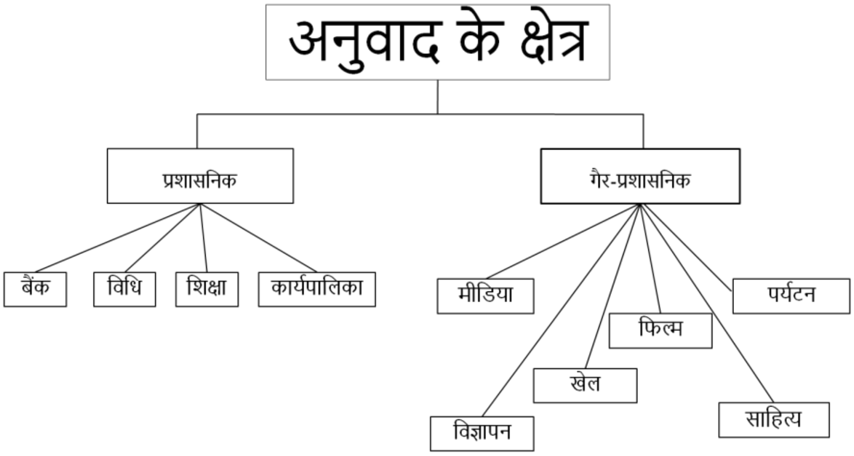

अनुवाद आज के युग की आवश्यकता है। विश्व समाज विविधता पूर्ण भाषा समाज है। विभिन्न भाषा-भाषी समाजों में संपर्क एवं विचार-संप्रेषण के लिए अनुवाद की महत्ता स्वयंसिद्ध है। हम देखते हैं कि यहाँ अनेक भाषाएँ हैं। सभी का साहित्य समृद्ध है। संविधान में स्वीकृत १५ भाषाएँ 'राष्ट्रभाषाएँ' हैं, इनमें एक भाषा और जुड़ चुकी है (मणिपुरी)। हम विदेशी भाषाओं के इन भाषाओं में अनुवाद की बात भी न करें, तो भी कम से कम इन 'राष्ट्रभाषाओं' में परस्पर साहित्यिक सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए अनुवाद कार्य अत्यावश्यक है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी जैसे विषयों के लिए विदेशी भाषाओं, विशेष रूप से अँग्रेज़ी से इन भाषाओं में अनुवाद की अनिवार्यता है। समग्रतः बहुभाषी समाज में तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी इत्यादि विषयों के व्यापक प्रसार के लिए अनुवाद आज के समय की अपरिहार्य आवश्यकता है। इस दृष्टि से अनुवाद का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। यहाँ हम सर्जनात्मक साहित्य-अनुवाद के अतिरिक्त क्षेत्रों में अनुवाद के प्रयोग और उन क्षेत्रों में अनुवाद के प्रयोग और उन क्षेत्रों से जुड़ी अनुवाद कार्य की समस्याओं आदि का संक्षेप में परिचय दे रहे हैं। सरकारी कामकाज और अनुवाद राष्ट्रपति आदेश सन् १९५५ के अनुसार प्रशासनिक रिपोर्ट, सरकारी पत्रिकाएँ, संसद को दी जाने वाली रिपोर्ट आदि जहाँ तक हो अंग्रेजी के साथ- साथ हिंदी में भी प्रकाशित की जाए। इसी तरह सरकारी संकल्पों और विधायी अधिनियमों में धीरे-धीरे अंग्रेज़ी के साथ-साथ हिंदी का प्रयोग भी होने लगा और जनता की सहायता करने के विचार से भारत सरकार द्वारा सभी अंग्रेजी पत्र आदि (हिंदी भाषी राज्यों को) उनके हिंदी अनुवाद के साथ भेजे जाने लगे।

राजभाषा अधिनियम १९६३ तथा राजभाषा नियम १९७६ के बाद तो अनुवाद का क्षेत्र बहुत बढ़ गया है। एक तरह से कहें तो द्विभाषी स्थिति आ गई है। यह अभी कितने दिनों तक और चलती रहेगी, कहा नहीं जा सकता ! राजभाषा अधिनियम १९६३ की धारा ३(i) के अनुसार, 'जहाँ किसी ऐसे राज्य के जिसने हिंदी को अपनी राजभाषा के रूप में अपनाया है और किसी अन्य राज्य के, जिसने हिंदी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है. बीच पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिंदी को प्रयोग में लाया जाता है, वहाँ हिंदी में ऐसे पत्रादि के साथ-साथ उसका अनुवाद अंग्रेज़ी भाषा में भेजा जाएगा। इसी तरह धारा ३(२)(iii) के अनुसार 'किसी

निगम या कंपनी या उसके कार्यालय के और किसी अन्य ऐसे निगम या कंपनी कार्यालय के बीच (इसी प्रकार किसी मंत्रालय विभाग या कार्यालय के बीच ३(२)(i) तथा (ii)) जो पत्र-व्यवहार हिंदी या अंग्रेजी में अनुवाद यथास्थिति किया जाएगा, अंग्रेजी भाषा या हिंदी में भी दिया जाएगा।

धारा ३(३) के अनुसार तो निम्नलिखित के लिए हिंदी और अंग्रेजी भाषा दोनों प्रयोग में लाई जाएँगी (i) संकल्पों, साधारण आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदनों या प्रेस विज्ञप्तियों के लिए जो केंद्रीय सरकार द्वारा या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या केंद्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण में किसी निगम या कंपनी द्वारा या ऐसे निगम या कंपनी के किसी कार्यालय द्वारा निकाले है या किए जाते हैं। संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदनों और राजकीय कागज-पत्रों के लिए (iii) केंद्रीय सरकार या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या उसकी ओर से या केंद्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण के किसी निगम या कंपनी के किसी कार्यालय द्वारा निष्पादित संविदाओं और करारों के लिए तथा निकाली गई अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञापत्र, सूचनाओं और निविदा प्रारूपों के लिए। धारा ५ के अनुसार केंद्रीय अधिनियमों आदि के प्राधिकृत हिंदी अनुवाद की व्यवस्था की गयी है। धारा ८, जो राजभाषा नियम १९७६ (सा० का० नि० १०५२) के रूप में लागू की गई, के अनुसार तो अनुवाद का क्षितिज बहुत अधिक व्यापक हो गया है। इन स्थितियों के अतिरिक्त कुछ अन्य विषय और क्षेत्र इस प्रकार हैं, जिनमें हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग होना चाहिए-

१. अहिंदी भाषी क्षेत्रों में स्थित सरकारी कार्यालयों के साथ पत्र व्यवहार।

२. पत्र- शीर्ष।

३. मुद्राएँ तथा रबड़ की मोहरें।

४. नामपट।

५. स्टाफ़ कारों की प्लेटों पर कार्यालयों का नाम।

६. केंद्रीय सरकार द्वारा स्थापित और उससे सहायता प्राप्त करने वाले संगठनों के नाम-पट, सूचना-पट

७. सरकारी समारोहों के लिए निमंत्रण-पत्र।

८. समस्त भारत और हिंदी भाषी क्षेत्रों में जारी किए जाने वाले सरकारी विज्ञापन।

९. सम्मेलनों की कार्यसूची की टिप्पणियों और कार्य।

१०. कामों की द्विभाषिक रूप में छपाई।

११. सरकारी पत्रिकाओं का अंग्रेजी के अलावा हिंदी में प्रकाशना।

१२. सांख्यिकीय जेबी पुस्तकों का द्विभाषिक रूप में प्रकाशना।

१३. फाइल कवरों पर विषय अंग्रेज़ी के अलावा हिंदी में भी लिखना।

१४. टेलिफोन डाइरेक्टरी अंग्रेजी-हिंदी।

विभिन्न प्रकार के प्रपत्रों का जल्दी से जल्दी अनुवाद करने के लिए भारत सरकार ने लगभग १० वर्ष पूर्व 'अनुवाद संबंधी सुविधाओं विषयक अनौपचारिक समूह का गठन किया गया था। साथ ही मंत्रालयों/विभागों में छोटे-छोटे दल बनाने के लिए अनुरोध किया गया। इस स्थिति के चलते धीरे-धीरे सरकारी कामकाज में अंग्रेज़ी-हिंदी और हिंदी अंग्रेजी अनुवाद का व्यवहार बढ़ता गया है लेकिन स्थिति यह बनती चली गई है कि हिंदी एक अनुवाद की भाषा होती चली गई है। हम देखें तो पाएँगे कि सरकारी कार्यालयों की भाषा जनसामान्य की भाषा से अलग है। हिंदी के इस रूप को कागज पत्रों हिंदी या कार्यालयीन हिंदी कहा जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि हिंदी का ऐसा रूप जिसमें प्रशासन के काम में आने वाले शब्द वाक्य अधिक प्रयोग में आते हों, वह प्रशासनिक हिंदी है। निश्चय ही इसका वाक्य- विन्यास साधारण हिंदी से भिन्न है। इसका व्याकरण, शब्द भंडार, वाक्य- विन्यास आदि प्रायः अँग्रेज़ी के अनुवाद से तैयार किया गया है। एक तरह से यह यांत्रिक भाषा बन कर रह गई है। सरकारी कामकाज में हिंदी का अनुवाद और प्रयोग हिंदी भाषा की अपनी निजी प्रकृति के अनुसार होने लगा। तभी वह सभी के लिए बोधगम्य और सरल-सहज बन सकेगी। उसमें सहज प्रवाह, चुस्ती और सरलता होनी चाहिए। अंग्रेज़ी के वाक्य विन्यास के यथारूप अनुवाद के मोह को त्यागना पड़ेगा। हिंदी की दुरूहता को सरलता में बदलना पड़ेगा। कृत्रिमता और अनगढ़पन को छोड़ना पड़ेगा। उसे जनता की भाषा बनाना पड़ेगा।

अ) वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद :

वैज्ञानिक साहित्य विशिष्ट ज्ञान का साहित्य होता है। इसमें तर्कपूर्ण की अभिव्यक्ति होती है। इसका उद्देश्य है सिखाना, शिक्षा देना। वैज्ञानिक साहित्य ज्ञानात्मक होने से इसकी मूल प्रवृत्ति सूचनात्मक होती है। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए वैज्ञानिक साहित्य का लेखक सुनिश्चित अर्थ वाली पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग करता है। इस शब्दावली के प्रयोग के कारण प्रत्येक विज्ञान की अपनी भाषा होती है। अतः वैज्ञानिक साहित्य में न तो भाषा का मनचाहा प्रयोग हो सकता है और न भाषा के साथ कोई खिलवाड़ किया जा सकता है। यहाँ सर्वाधिक बल तथ्य पर दिया जाता है। वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की प्रक्रिया सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद की प्रक्रिया से अलग है। वैज्ञानिक साहित्य तथ्य प्रधान होता है। अतः इस प्रकार के साहित्य के अनुवाद में एक सुविधा होती है कि उसमें अभिव्यक्ति, शैली और अर्थ-संरचना की जटिलता नहीं होती। यह शैली प्रायः स्पष्ट होती है इसलिए अनुवादक को शैली पर अधिक ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता नहीं होती।

आ) विधि साहित्य का अनुवाद :

विधि अथवा कानून की भाषा पारदर्शी होनी चाहिए। उसमें स्पष्टता का गुण अनिवार्य है। यह भाषा उसी भाषा में लिखित कथा साहित्य या अन्य साहित्य की भाषा से भिन्न होती है। न्याय के शासन में विश्वास बनाए रखने के लिए और सर्वोपरि जनसाधारण का विश्वास अर्जित करने के लिए आवश्यक है कि जनता को उसकी अपनी भाषा में न्याय मिले। हम अंग्रेज़ों की ही न्याय-व्यवस्था का उदाहरण ले लें। कंपनी शासन के समय में ही सर्वप्रथम सन् १७९७ ई० में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने यह विधान कर दिया था कि भारत संबंधी विधि अनुवाद भारतीय भाषाओं में प्रकाशित किए जाएँ। इसके

बाद सन् १८०३ में आदेश दिया गया - Every regulation with marginal notes, shall be translated in the Persian, and Hindustanee language by the translators. [Sec. १५ of Reg. (१८०३)] सन् १८३० ई० में जब कंपनी के 'बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर्स' (निदेशक मंडल) को न्यायालयों में फ़ारसी के स्थान पर अंग्रेज़ी कर देने के लिए लिखा गया, उन्होंने अंग्रेजी के प्रयोग को उत्तर पश्चिमी और अन्य प्रांतों में अस्वीकार करते हुए विचार व्यक्त किया कि क्षेत्रीय भाषाओं को ही न्यायालयों की सामान्यतः भाषा होना चाहिए। तर्क यह दिया गया कि 'इसमें संदेह नहीं कि न्याय - प्रशासन न्यायाधीश की भाषा में हों, किंतु यह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है कि यह ऐसी भाषा में हो जो मुकदमे के पक्षकारों, उनके अधिवक्ताओं और जनसाधारण की भाषा में हो। जनता द्वारा न्यायाधीश की भाषा सीखने की अपेक्षा न्यायाधीश द्वारा जनता की भाषा सीखना आसान है।" आज भी इस अंश में सत्यता है।

विधि साहित्य की भाषा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता है निश्चित अर्थवत्ता। यह एक तरह से पारिभाषिक शब्दावली है। अतः विधि शब्दावली का अनुवाद बहुत सतर्क हो कर करना पड़ता है। यथा अध्यादेश (ऑर्डिनेंस) वह आधिकारिक आदेश है, जो किसी कार्य, व्यवस्था आदि के संबंध में राष्ट्रपति अथवा राज्य के प्रधान शासक-राज्यपाल द्वारा दिया या निकाला जाता है। सारे भारत के लिए अथवा उसके किसी भाग के लिए 'अध्यादेश' राष्ट्रपति महोदय द्वारा जारी किया जाता है। किसी प्रदेश राज्य के लिए राज्यपाल इसी प्रकार अध्यादेश जारी कर सकते हैं। अध्यादेश किसी जटिल या विषम स्थिति में ही जारी किया जाता है। इसे हम आदेश, आज्ञा, समादेश, घोषणा आदि नहीं कह सकते। इन शब्दों के अपने अपने पृथक अर्थ निश्चित किए गए हैं।

अतः विधि साहित्य के अनुवाद के लिए यह आवश्यक है कि विधि शब्दावली का अनुवादक को ज्ञान हो। अनुवाद में स्पष्टता, सहजता और प्रवाह हो। उसके वाक्यांश और शब्दावली सार्वदेशिक स्वरूप लिए होते हैं, अतः उन्हीं मानक वाक्याशों शब्दावली का प्रयोग अनिवार्यतः किया जाए। ऐसे अनुवादों में अनुवादक राजभाषा खंड की ओर से प्रकाशित ४०० से अधिक नियमों, विनियमों आदेशों आदि की सहायता ले सकते हैं। उन्हें 'उच्च न्यायालय निर्णय पत्रिका (१९१९) तथा 'उच्चतम न्यायालय निर्णय पत्रिका' (१९६८) के विभिन्न अंकों आदि से भी पर्याप्त सहायता मिलेगी। विधि आयोग द्वारा विधि शब्दावली भी अत्यंत उपयोगी है।

इ) भाषांतरण :

आशु अनुवाद अथवा आशु भाषान्तरण वाक् अनुवाद है। किसी बात को तत्काल दूसरी भाषा में रूपांतरित करना आशु अनुवाद कहलाता है। यह कार्य 'अनुवाद' से थोड़ा भिन्न है, इसीलिए इसके लिए 'भाषान्तरण' शब्द का प्रयोग करना उचित है। यह एक मौखिक प्रक्रिया है। मौखिक भाषान्तरण में "आशय " को लक्ष्य मानकर भाषांतरकार अपने कर्तव्य का निर्वाह करता है। इसके लिए 'अनुव्याख्या' शब्द का प्रयोग भी किया जाता है (रोहरा, सतीश कुमार)। राजनीतिक वार्ताओं, अनेक देशों के प्रतिनिधियों के बीच बातचीत के मध्य, खेलों के आँखों देखे हाल के वर्णन के समय (कमेंटरी) आदि में इस तरह के 'अनुवाद' (या ठीक कहें तो भाषांतर) की आवश्यकता

होती है। यों तो कमेंटरी प्रस्तुत करने वाले को 'कमेंट्रेटर' कहते हैं, लेकिन द्विभाषिक स्थिति में आशु भाषांतरकार को 'इंटरप्रेटर' कहा जाता है। कई बार आशु अनुवाद (या भाषांतर) में यंत्रों की सहायता भी ली जाती है। जैसे अंतर्राष्ट्रीय बैठकों में जहाँ विश्व की अनेक भाषाओं में विचार-विमर्श किया जाता है, विश्व प्रसिद्ध विशेषज्ञ या राजनेता भाषण देते हैं, इसी तरह लोक सभा आदि में भाषण के समय, एक साथ मूल भाषा से एक से अधिक स्वीकृत भाषाओं में तत्काल अनुवाद की व्यवस्था की जाती है। यह कार्य यंत्रवत् चलता रहता है और श्रोता अपनी इच्छित भाषा में उस भाषण को सुन सकते हैं।

हमारे यहाँ संसद में हिंदी-अंग्रेज़ी भाषा की आशु अनुवाद की सुविधा सन् १९६४ में आरंभ हुई। सन् १९६४ की विज्ञप्ति के अनुसार 'लोक सभा में अब अंग्रेजी के भाषण का हिंदी में और हिंदी भाषण का अंग्रेज़ी में अनुवाद मूल भाषण के साथ सुना जा सकेगा। सदन के प्रत्येक सदस्य के बैठने के स्थान पर एक हैडफ़ोन लगाया गया है जिससे मूल भाषण के साथ ही अनुवाद भी सुना जा सकेगा। पत्र प्रतिनिधियों को भी यह सुविधा उपलब्ध होगी।"

आशु अनुवाद / भाषांतर में अनुवादक भाषांतरकार को कई बातों का ध्यान रखना होता है। सर्वप्रथम उसे दोनों भाषाओं पर पूरा अधिकार होना चाहिए। दोनों भाषाओं के व्याकरण, शब्दों, अर्थ छटाओं, लोकोक्ति-मुहावरों आदि का व्यावहारिक ज्ञान होना चाहिए। प्रत्युत्पन्नमति होना आशु भाषांतरकार के लिए अत्यावश्यक गुण है। उसकी स्मरण शक्ति तीव्र हो और उसमें यह क्षमता हो कि तत्काल सोच कर भाषांतर कर सके। सामान्य ज्ञान और विषय ज्ञान दोनों ही उसकी सफलता के लिए आवश्यक हैं। जिस स्थान या संस्थान से वह जुड़ा है, उस स्थान की ऐतिहासिक सांस्कृतिक भौगोलिक स्थिति, उस समाज का, उसके परिवेश का ज्ञान, उस संस्थान की समूची कार्य-प्रणाली इत्यादि का उसे ज्ञान होना भी अनिवार्य है।

कई बार आशु अनुवादक को किसी राजनेता या वक्ता का भाषण पहले से ही मुद्रित या टंकित रूप में उपलब्ध हो जाता है। इससे उसे अनुवाद कार्य में पर्याप्त सहायता मिल जाती है। लेकिन कभी-कभी वह राजनेता या वक्ता अपने लिखित, मुद्रित या टंकित भाषण से हट कर समसामयिक स्थितियों पर बोलने लगता है। ऐसी स्थिति में आशु अनुवादक को बड़ी सतर्कता से काम लेना होता है। उसे तुरंत उन स्थलों को यथास्थान जोड़ लेना चाहिए। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर भी राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री अथवा किन्हीं मंत्रियों के राष्ट्र के नाम संदेश आदि को तुरंत हिंदी या अन्य भाषाओं में रूपांतरित करके पढ़ा जाता है। यहाँ भी आशु भाषांतरकार की आवश्यकता होती है। उसकी क्षमता और योग्यता इसी बात पर निर्भर करती है कि वह किस तरह तनावमुक्त रह कर सहज रूप से उसी शैली में भाषांतर प्रस्तुत करता है।

ई) समाचार एजेंसियों / समाचार पत्रों में अनुवाद :

पत्रकारिता का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। प्राय: देखा गया है कि हिंदी की संवाद समितियाँ और समाचार पत्र अनुवाद पर निर्भर हैं। लेकिन यह भी बढ़ा सच है कि अंग्रेजी की संवाद समितियों और समाचारपत्रों को भी अनुवाद से काम चलाना पड़ता है। इस

संदर्भ में सुप्रसिद्ध पत्रकार डॉ० वेदप्रकाश वैदिक का यह कथन सही जान पड़ता है कि, 'किसी भी देश की ख़बरें और विचार भी प्रायः उस देश की जनता की भाषा में ही पैदा होती है। अपनी भाषाओं में पैदा होनेवाले समाचारों और विचारों का अंग्रेजी अखबार और अंग्रेजी एजेंसियाँ अनुवाद करती हैं। उन्हें वे अंग्रेजी में ढाल लेती हैं, यानी अंग्रेजी एजेंसियों लगभग पूर्णतः अनुवाद पर ही निर्भर होती हैं। इसीलिए यह आरोप एक तरफा है कि हिंदी अख़बार और हिंदी एजेंसियाँ मौलिक नहीं होतीं और हमेशा अनुवाद के सहारे ही जिंदा रहती हैं।

अनुवाद समाचारपत्रों तथा समाचार एजेंसियों की मजबूरी है। स्थिति यह भी है कि हिंदी समाचार एजेंसियों एवं समाचारपत्रों को कई बार अनुवाद का भी अनुवाद करना पड़ता है। तमिल, तेलुगू, बंगला, मराठी आदि भाषाओं से उठाई गई समाचार सामग्री को पहले अंग्रेजी में प्रस्तुत किया जाता है और फिर उस 'अनुवाद' का पुनः हिंदी में अनुवाद किया जाता है। यही स्थिति उन भाषाओं की है। यानी हिंदी और उनके बीच में अंग्रेज़ी है। इससे कई बार उस सामग्री के साथ न्याय नहीं हो पाता यह स्थिति शोचनीय है। समाचार एजेंसियों तथा समाचारपत्रों के अनुवाद में सर्वप्रथम त्वरा का ध्यान रखा जाता है, जो हो तत्काल और जल्दी हो। इसलिए पत्रकारों को बेहद जल्दी में काम करना होता है। वे एक-एक शब्द और वाक्य पर देर तक नहीं सोच सकते। यदि वे ऐसा करने लगें तो ख़बर बासी होने का भय रहता है। इस सुविधा के लिए पत्रकारिता ने धीरे-धीरे एक नई भाषा का रूप प्राप्त कर लिया है। कुछ शब्द-बंध लगभग स्थिर हो चले हैं। अंग्रेजी के जटिल वाक्यों और वाक्याशों के सरल एवं मानक हिंदी रूप भी बना लिए गए हैं। अतः सजग पत्रकार को इन मानक रूपों का ज्ञान होना लाभप्रद है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में अनुवाद के लिए यह भी अत्यावश्यक है अनुवादक को लोक भाषाओं और लोक रुचियों का पर्याप्त ज्ञान हो। इनके प्रयोग से उसके अनुवाद की भाषा में चुस्ती, नवीनता और विलक्षणता आ सकती है। उसका काम शब्द की जगह शब्द, वाक्य की जगह वाक्य और अनुच्छेद की जगह अनुच्छेद रख देने ही से नहीं चल सकता। हमारे यहाँ विशेषज्ञ पत्रकारों की कमी बेहद खलती है। कुछ विभिन्न समाचार एजेंसियाँ और समाचार पत्र अर्थ शास्त्र और खेल जगत् के जानकार लोगों की सेवाएँ तो उपलब्ध कर रहे हैं। उनके पास इन क्षेत्रों का ज्ञान रखने वाले विशेष पत्रकार/उपसंपादक मौजूद हैं। लेकिन विज्ञान, संचार माध्यमों, साहित्य तथा संस्कृति के विशेषज्ञ उपसंपादक / पत्रकार नहीं हैं। ऐसे में पत्रकारिता के क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है।

६.४ अनुवाद की समस्याएँ :

सम्पूर्ण विश्व में भाषा की बहुलता है। यद्यपि भाषा की बहुलता के कारण समाज में सम्प्रेषण का अभाव देखा जाता रहा है। किन्तु अनुवाद कला के कारण हम मनुष्यों ने सम्प्रेषण कौशल को बढ़ावा दिया है और साथ ही सम्पूर्ण विश्व को एक गांव के रूप में तब्दील कर दिया है इसलिए दिन-प्रतिदिन अनुवाद महत्ता बढ़ती जा रही है। विश्व में भिन्न-भिन्न प्रकार की भाषा होने के कारण सभी भाषाओं का अनुवाद लगभग असंभव सा होता है। अनुवाद कला जितना

उपयोगी और महत्वपूर्ण है, कार्यक्षेत्र में वह उतना ही अधिक जटिल है। भाषा की बहुलता होने के कारण अनुवाद करते समय अनुवादक को भिन्न-भिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अधिकांशत: अनुवाद करते समय भाषा को केंद्र में रखकर विषय वस्तु को केंद्र में रखा जाता है। जिसके कारण कभी-कभी शब्दानुवाद करनेवाला अनुवाद का अनुवाद निष्क्रिय हो जाता है।

अनुवाद वर्तमान समाज की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आवश्यकता बन गयी है। फलत: आज अनुवाद को स्वतंत्र विधा के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। आज वैज्ञानिक तथा औद्योगिक उन्नति तथा संचार और क्रान्ति के युग में अनुवाद और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है। प्रौद्योगिकी तथा सूचना के क्षेत्र में प्रत्येक देश, राष्ट्र और समाज ने शीघ्रातिशीघ्र उन्नति के लिए प्रयास है। आज बाजारवाद और प्रतिस्पर्धात्मक युग में विभिन्न भाषाओं में अनुवाद की व्यवस्था उपलब्ध हो गयी है। समयानुसार अनुवाद की बढती महत्ता के कारण मशीनी और कम्प्यूटरीकृत अनुवाद के क्षेत्र में विभिन्न तरह के संशोधन किये जा रहे हैं। मुख्यत: एक भाषा की किसी सामग्री का दूसरी भाषा में रूपान्तर करना ही अनुवाद है किन्तु भाषा का अनुवाद करना बहुत ही कठिन और जटिल होता है क्योंकि सभी भाषाओं के शब्द, अर्थ और भाव भिन्न-भिन्न होते हैं और विभिन्नता होने के कारण एक भाषा से दूसरे भाषा में अनुवाद करना बहुत मुश्किल होता है। अत: अनुवाद करते समय अनुवादक को ध्यान रखना चाहिए कि मूल भाषा के भाव को अनूदित भाषा में पूर्णतः उतारा गया हो।

अनुवाद करते समय भाषा में पूर्णतः का भाव होना चाहिए ताकि मूल भाषा की सामग्री व अनूदित भाषा की सामग्री पढने पर कृतिमता का आभास न हो। इसलिए कम से कम मूल भाषा व स्रोत भाषा में निकटता होनी चाहिए। अत: दोनों भाषाओं की समानता की निकटता जितनी अधिक होती है, अनुवाद उतना ही अच्छा और उत्तम माना जाता है। अत: अनुवाद करते समय अनुवादक को मुख्य रूप से दोनों भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए ताकि मूल भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय अर्थ और भाव ज्यों का त्यों बना रहे। इस प्रकार अनुवाद की समस्या द्विभाषकीय है। फलस्वरूप मनुष्य अनुवाद शैली से विजातीय भाषा सीखकर धीरे-धीरे स्वभाव अर्जित करता है और अभ्यास बन जाने पर वह कभी-कभी अपने आपको दो नावों पर सवार अनुभव करता है।

अनुवादक को धारा के किसी क्षण में रुककर तल में अन्तर्निहित भावना को देखने का प्रयास करना चाहिए ताकि भाषा की मूल भाव में बदलाव न हो। अगर ऐसा हुआ तो अनुवाद को निम्न कोटि का माना जाता है। वस्तुत: अनुवाद की मुख्य समस्या स्वभाषा अनुवाद परिभाषा को विजातीय भाषा की शब्दावली को स्वभाषा में व्यक्त करना है। अनुवादक को मूल भाषा के अनन्तर उसी के समकक्ष भाव और विचार व्यक्त करने वाले शब्द या वाक्य को स्वभाषा में खोजना पडता है। अत: मूल भाषा के भाव और अर्थ रूपांतरित भाषा में हूबहू नहीं मिलता यही अनुवाद की मूल समस्या है। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से अनुवाद की समस्या के प्रमुख दो पहलू हैं। प्रथम द्विभाषकीय रूपान्तरण और द्वितीय भाव रूपान्तरण। और मुख्यत: ये दोनों एक दूसरे के पूरक भी माने जाते हैं।

द्विभाषकीय शैली से किया गया अनुवाद शुद्ध होता है, जिसमें तुलनात्मक भाषा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विश्व के सभी भाषाओं को उनकी विशेषता के आधार पर वर्गीकृत किया

गया है। और अधिकांश उन्हीं भाषाई परिवार के दो भाषाओं को एक दूसरे में अनुवाद करना आसान होता है। उदाहरण के तौर पर जर्मन और इंग्लिश भाषाएं, ग्रीक परम्परा से जुडी होने के कारण परस्पर शाब्दिक लेन-देन भी कर सकती है और जहाँ वैसा सम्भव न हो वहाँ मूल ग्रीक शब्दावली से अपना शब्द बना सकती है। वस्तुतः प्रत्येक भाषा में वाक्य की इकाइयां से भाषा संरचना होती है। पदों से बनने वाले वाक्यांश वाक्य के घटक बनते हैं और एक वाक्य दूसरे वाक्य के साथ समन्वय प्राप्त करके एक वाक्यता लेता है। अतः अनुवादक को विषय वस्तु को ध्यान में रखकर शब्द योजना, वाक्य रचना और समन्वय की व्यवस्था करनी होती है।

ऐतिहासिक दृष्टि से यह समस्या ईस्ट इण्डिया के समय से ही भारत में जन्म लेकर विकसित हुई। मैकाले के प्रयासों से भारत में अंग्रेजी की प्रशासन की भाषा होने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसके कारण प्रशासनिक कामकाज में अनुवाद शिथिल बना गया। सामान्यत: प्रत्येक देश में अनुवाद की यह समस्या होती है, जहाँ दो या दो से अधिक भाषाएं प्रशासन में कार्यरत होती है। स्विटजरलैंड इसका आदर्श उदाहरण है, वहाँ प्रशासन में चलने वाली तीनों भाषाएं एक ही परिवार की होने के कारण भारत के समान जटिलता नहीं उत्पन्न करतीं। अतः अनुवाद के इन समस्याओं का समाधान सहज एवं सरल नहीं है। मुख्यतः एक भाषा के बहुत से शब्दों के समानार्थक शब्द दूसरी भाषा में नहीं होते हैं। उदाहरण के तौर पर देखें तो, नीम के लिए अंग्रेजी भाषा में तथा लिली के लिए हिन्दी भाषा में शब्द नहीं है। यह परेशानी तब और अधिक बढ जाती है, जब ऐसे जटिल वाक्य और भाव प्रशासनिक अनुवाद के समय आते हैं। किन्तु जबरन अनुवाद करने पर ऐसे वाक्य का मूल अर्थ और भाव बिगड़ जाता है तथा जिन व्यक्तियों के जुबान पर मूलभाषा के शब्द चढ़े होते हैं, ऐसे व्यक्तियों को इस तरह के अनुवाद में कृत्रिमता अनुभव का भान आसानी से हो जाता है। उदाहरणार्थ, यूनिवर्सिटी को सही या गलत ढंग से सभी बोल लेते हैं ; कचहरी, मदरसा आदि प्रचलित शब्द रहे हैं। पालतू पशुओं को 'मवेशी' कहा जाता रहा है। इन जैसे जन प्रचलित शब्दों के लिए जहाँ तक हो नये शब्दों की खोज नहीं करनी चाहिए क्योंकि ये शब्द समाज में पहले से ही अपना रूप निर्धारित कर चुके है। अतः इनके स्थान पर नये शब्द प्रयोग करने पर इनके मूल अर्थ में बदलाव हो जाएगा।

अनुवाद एक अत्यंत कठिन दायित्व है। रचनाकार किसी एक भाषा में सर्जना करता है, जबकि अनुवादक को एक ही समय में दो भिन्न भाषा और समस्या, कथानक तथा परिवेश/वातावरण को साधना होता है। परिवेश और वातावरण पर बल देते हुए राधाकृष्णन ने गीता के अनुवाद के बहाने कहा था "गीता के किसी भी अनुवाद में वह प्रभाव और चारुता नहीं आ सकती, जो मूल में है। इसका माधुर्य और शब्दों का जादू किसी भी अन्य माध्यम में ज्यों का त्यों ला पाना बहुत कठिन है। अनुवादक का यत्न विचार को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का रहता है, परन्तु वह शब्दों की आत्मा को पूरी तरह सामने नहीं ला सकता। वह पाठक में उन मनोभावों को नहीं जगा सकता, जिनमें कि वह विचार उत्पन्न हुआ था।" इस प्रकार एक अनुवादक के लिए स्थानीय संस्कृति और परिवेश का ज्ञान होना आवश्यक है।

रवींद्रनाथ ठाकुर ने एक बार पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी से कहा था कि "हिन्दी मैं पढ़ लेता हूँ, सामान्यतः उसका अर्थ भी समझ लेता हूँ, किन्तु शब्दों के साथ जो वातावरण लिपटा होता है, उसे मैं नहीं समझ सकता। सच तो यह है कि शब्दों के साथ लिपटे हुए वातावरण का ज्ञान मुझे अपनी भाषा को छोड़कर और कहीं भी नहीं होता, यहां तक कि अंग्रेजी में भी

नहीं।" इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भाषा में वातावरण बहुत ही प्रमुख होता है और अनुवाद करते समय वातावरण के बदलाव के कारण सम्पूर्ण भाषा ध्वस्त हो जाती है और साथ ही अनुवाद की गुणवत्ता में भी कमी आ जाती है।

अनुवाद करते समय बहुधा अर्थ का अनर्थ तब ज्यादा होता है, जब अनुवादक शब्दशः अनुवाद करने की चेष्टा करता है। यद्यपि हर भाषा की अपनी एक खास प्रकृति एवं प्रवृत्ति होती है इसलिए जिस भाषा में अनुवादक अनुवाद कर रहा है, उसकी प्रकृति, उसके मिजाज का रक्षण करना अनुवादक के लिए आवश्यक हो जाता है। फलस्वरूप शब्दशः अनुवाद एक खतरनाक बीमारी है, क्योंकि एक भाषा के शब्द हू-ब-हू दूसरी भाषा में अक्सर नहीं मिलते। कई बार शब्द महज शब्द नहीं होते, उनके साथ एक अवधारणा, कथा, समस्या आदि बहुत सी बातें जुड़ी होती है।

शब्दानुवाद करते समय उन अवधारणाओं का मूल अनुवाद किसी भी दूसरी भाषा में ज्यों का त्यों होना लगभग असंभव होता है। इस प्रकार एक अच्छे अनुवादक को भाषा की सीमा की मर्यादा समझनी होगी। ताकि दोनों भाषाओं के मूल अर्थ में बदलाव न आये और अनुवादित कृति में कृतिमता नहीं बल्कि मूल पाठ की झलक दिखायी दे। कहने की आवश्यकता नहीं कि आज भी "सेकुलरिज्म" और "धर्मनिरपेक्षता" तथा "धर्म" और "रिलीजन" एक ही चीज हैं कि भिन्न हैं। यह समस्या तब और विकट रूप में प्रस्तुत होती है जब हम बोली के शब्दों का अनुवाद करना चाहते हैं। चूँकि बोली के शब्दों और भंगिमाओं का अनुवाद जब उसी देश की भाषा में असंभव है तो विदेशी भाषा के बारे में कहना ही क्या। इस प्रकार वेदों का अनुवाद आज की संस्कृत भाषा के प्रचलित शब्दार्थों के सहारे नहीं हो सकता, ठीक जैसे शेक्सपीयर के जमाने की अंग्रेजी का अनुवाद आज के प्रचलित शब्दों और अर्थों के सहारे असंभव है।

देखा जाए तो प्रत्येक विषय की अपनी भाषा होती है, उसके खास पारिभाषिक शब्द होते हैं। जिनकी बारीकी का पता उस विषय के जानकार को ही होता है इसलिए अनुवाद की आदर्श स्थिति यह रहती है कि कविता का अनुवाद अधिकांशत: कवि करे, कहानी का अनुवाद कहानीकार और समाज विज्ञान की पुस्तकों का अनुवाद कोई समाज वैज्ञानी ही करे। तभी विषय की मूल स्थिति में बदलाब होने की सम्भावना कम होगी और साथ ही मूल कृति और अनुवादित कृति के साथ न्याय की उम्मीद की जा सकती है।

श्रेष्ठता बोध और हीनता बोध की भावना भी अनुवादक की मुख्य समस्या मानी जाती है। यद्यपि हम किसी भाषा को श्रेष्ठ मान लेते हैं तो किसी को हीन। हिन्दी अनुवादकों में निज भाषा को लेकर एक हीनता, उपेक्षा और अगंभीरता का भाव है। तोलस्तोय की किताब का "पुनरुत्थान" नाम से भीष्म साहनी का अनुवाद और नेहरू की "डिस्कवरी ऑफ इंडिया" का "हिंदुस्तान की कहानी" अनुवाद उम्दा कहा जा सकता है। इस प्रकार अधिकतर पाठक प्रसिद्ध रचाकारों द्वारा अनुदित कृति को ही श्रेष्ठ और उच्च समझते हैं। जिसके कारण धीरे-धीरे अन्य अनुवादकों में हीन भावना का प्रस्फुटन होने लगता है।

६.५ अनुवाद की समस्याओं का समाधान

अनुवाद करते समय एक अनुवादक को प्रमुख रूप से तरह-तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिसमें भाषा बोध से लेकर मूल समस्या तक की बातें निहित होती है।

इसलिए अनुवाद कला की गुणवत्ता को बढाने के लिए अपने देश में अनुवाद-संबंधी प्रशिक्षण केन्द्रों और प्रयोग को स्थापित करना होगा। इस प्रकार अनुवाद में रूचि रखने वाला व्यक्ति पूर्ण रूप से प्रशिक्षित होकर इस क्षेत्र में कार्य करे ताकि अनुवाद करने में कोई उसे समस्या न हो। अनुवादक को विदेशी भाषा की कृतियों का अनुवाद करते समय कठिन और जटिल शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। और उसके स्थान पर अधिकांश स्थानीय शब्दों का प्रयोग करना चाहिए ताकि देश की बोलचाल की शब्दावली के कारण उसमें आकर्षण और रुझान पैदा हो सके और पाठकअनुदित रचना की तरफ आकर्षित हो सके। इस प्रकार अनुवाद कला में विकास होगा और साथ ही ऐसे अनुवादक को प्रसिद्धि मिलेगी।

वस्तुतः गंभीर अनुवाद के नाम पर कठिन शब्दावली तथा अनुवादकों की दुर्बोध, पंडिताऊपन से बोझिलता के कारण अनुवाद के विरुद्ध माहौल तैयार होगा। प्रत्येक अनुवादक को ‘हम हमारे, तुम तुम्हारे’, ‘विवेकानंदा, योगा, केरला, आन्ध्रा, कर्नाटका, हिमालया, कोनारकर, मुंगेर वेदान, पुरवाई पुई बरसात, फर्श-फरस, कीजिए किजिए या करिए जैसे भ्रष्ट और बेशर्म प्रयोगों से बचना चाहिए क्योंकि वर्तनी की अशुद्धता और भाषा को दुविधा हर अनुवाद के लिए खड़े शत्रु की तरह होता है। चूँकि यदि अनुवाद हिन्दी भाषा में हो रहा है तो तत्काल सवाल पैदा होगा कि अनुवाद के नाम पर हिन्दी की शब्दावली में कठिन शब्द गढ़कर गोशाला के गायों की तरह जबरिया ड्रेस देना कहाँ तक न्यायोचित माना जाएगा? हिन्दी के लिए इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है कि आज तक अपने ही देश में इसकी कोई विशिष्ट पहचान, एक निश्चित ठोस आकार प्रकार या व्यक्तित्व और स्वरूप की कोई रचनात्मक कल्पना पूरी तरह नहीं बन पायी है।

एक अच्छा अनुवाद वही हो सकता है जो व्यापक परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक दृष्टि से सरल- सहज भाषा में प्रस्तुत हो। यदि ऐसा नहीं होगा तो अनुवाद और पाठक एक-दूसरे के लिए अजनबी बने रहेंगे। यदि निष्पक्ष बात की जाए तो कहेंगे कि अनुवाद का कारोबार पिछले चार दशक में काफी बढ़ा है। कई तरह की अनुवाद संबंधी संस्थाएँ और दुकानें खोलकर एक तबका इस देश में हिन्दी विकास के नाम पर अपना भरपूर विकास और हितलाभ कर रहा है और इन दुकानों और संस्थानों में बिल्कुल बनावटी, नीरस और व्यर्थ का अनुवाद तैयार हो रहा है। इस प्रकार आज अंग्रेजी से हिन्दी के नाम पर छोटे-मोटे उद्योग पनप चुके हैं, जो बड़े-बड़े अनुवाद ग्रंथ जन्में किन्तु अपनी साहित्यिक महत्वाकांक्षाओं की प्रपूर्ति हेतु वे साधन बने इस कार्य व्यापार और अनुवाद से हिन्दी का कुछ भी भला नहीं कर पा रहे हैं, अनुवाद के नाम पर बाजार में भाषाओं की अस्तित्व को छिन्न-भिन्न कर रहे हैं। जिसमें मशीन प्रमुख रूप से उनका सहायक बन रहा है। इस प्रकार आज निहायत मशीनी भाषा की जगह, सरल सहज, सीधे-सादे, सहज-अकृत्रिम, उलझाव और जटिलता से मुक्त, अवक्र, निराभरण, स्वाभाविक तथा जन सामान्य की जिह्वा पर आसानी से चढ़ने वाली जैसे महत्त्वपूर्ण भाषा की आवश्यकता है।

अत: कुल मिलाकर अनुवाद जैसे कार्य को प्रामाणिक रूप में संपन्न करने के लिए या तो अखिल भारतीय स्तर पर किसी एक संस्था, विश्वविद्यालय, व्यक्ति, समूहों या साधन संपन्न सतत् प्रयत्नशील भाषा संस्थान को सामने आना होगा, जिसमें समर्पित, सुविज्ञ, ज्ञानवान निष्ठावान अनुवाद कर्मियों-शिल्पियों की सशक्त टोलियों या समूहों का सहयोग जुटा हो, अन्यथा यदि मुद्रालाभ की पनपती व्यावसायिकता को ध्यान में रखकर, बाजार में माँग के

कारण अनुवाद के नाम पर अनुवाद की गाद और तलछट को झटपट बढ़ रच कर हमने समाज को सौंप दिया तो अनुवाद से पाठक ककटता जाएगा और इस प्रकार सम्पूर्ण समाज में भाषा की अस्तित्व नष्ट हो जाएगा।

६.६ सारांश

अनुवाद के इन प्रकारों पर चर्चा करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद के प्रयोग, उपयोगिता और महत्व की भी विस्तार से चर्चा की गयी है। वस्तुतः अनुवाद करते समय पाठ और अन्य स्थितियों जैसे उसकी उपयोगिता आदि को ध्यान में रखकर अनुवादक या अनुवाद एजेंसियां पाठ का अनुवाद करवाती हैं। तभी यह तय हो पाता है कि प्रस्तुत पाठ का अनुवाद करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखा जाना आवश्यक है। समयानुसार अनुवाद के विविध क्षेत्रों और उनमें अनुवाद की संभावनाओं, उपयोगिता, समस्याओं आदि में बढ़ोतरी हुई है।

प्रशासनिक क्षेत्र, बैंकिंग, विधि, मीडिया आदि बहुत से क्षेत्रों में अनुवाद का समावेश है। शिक्षा के क्षेत्र में, पर्यटन के क्षेत्र में विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में आदि में भी अनुवाद का उपयोग बड़ी तेजी से हो रहा है। इसलिए इक्कीसवीं सदी को अनुवाद का युग कहना गलत नहीं होगा। फलत: आज हम विश्व के किसी भी कोने में बैठकर देश-विदेश में उपलब्ध ज्ञान तथा सूचनाओं को बडी सरलता से आदान–प्रदान कर सकते हैं। और इन सब के मूल में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बाल साहित्य विशेषकर इलेक्ट्रॉनिक साहित्य में अनुवाद की भूमिका को आप बड़ी आसानी से अपने टेलीविजन पर देख सकते है। हमारे टीवी सेट पर आ रहे कार्टून चैनल पर एक साथ कई भाषाओं के विकल्प उपलब्ध है। आज अनुवाद एक विस्तृत उद्योग बनकर उभर रहा है। अस्तु इसके प्रयोग क्षेत्रों की एक निश्चित सीमा तय नहीं की जा सकती।

वर्तमान युग में बाजारवाद, सूचना प्रौद्योगिकी और मशीनीकरण के साथ साथ वैश्विकरण में बढोतरी हुई है, जिसके कारण संपूर्ण विश्व बाजार के रूप में तब्दिल हो गया है। बाजार की माँग और वैश्विकरण के कारण सभी भाषाओं की माँग में बढोतरी आयी है। चूँकि भाषाओं के कारण सभी संस्कृतियों, समाजों और विचारों में समन्वय स्थापित हुआ है। इस प्रकार सभी देशी, क्षेत्रीय, प्रांतीय, राष्ट्रीय भाषाओं ने विश्व के विकास और उत्थान में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। फलतस्वरूप भाषाओं के माध्यम से संपूर्ण विश्व एक गाँव के रूप में बदलने में सक्षम हुआ है। और सभी भाषाओं ने अनुवाद के माध्यम से अपने आपको विश्व बाजार से जुडे रखने का प्रयत्न किया है। इस प्रकार आज दिन-प्रतिदिन अनुवाद की महत्ता बढती जा रही है।

६.७ बोध प्रश्न

१. अनुवाद के विविध क्षेत्रों का क्या अभिप्राय है?

२. अनुवाद के प्रमुख चार क्षेत्रों पर प्रकाश डालिए।

३. वैश्विकरण अर्थात् बाजारवाद में होनेवाले अनुवाद के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

४. साहित्य जगत में होनेवाले अनुवाद के महत्त्व उदाहरण सहित स्पष्ट किजिए।

५. अनुवाद की समस्या को स्पष्ट करते हुए उसके समाधान प्रकाश डालिए।

६. अनुवाद की प्रमुख समस्याओं को वर्णित कीजिए।

७. अनुवाद के समाधान को रेखांकित कीजिए।

८. अनुवाद की समस्याओं को रेखांकित करते हुए उनके समझान पर चर्चा कीजिए।

६.८ संदर्भ ग्रंथ :

१. प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका - कैलाश नाथ पांडे, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

२. प्रयोजनमूलक हिंदी - डॉ. विनोद शाही, आधार प्रकाशन, हरियाणा

३. प्रयोजनमूलक हिंदी - विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

४. प्रयोजनमूलक हिंदी नए संदर्भ - सुमित मोहन, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली

५. प्रयोजनमूलक हिंदी के नए आयाम - डॉ. पंडित बन्ने, अमन प्रकाशन, कानपुर

६. प्रयोजनमूलक हिंदी - माधव सोनटक्के, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

७. प्रयोजनमूलक मीडिया विमर्श सिद्धांत और अनुप्रयोग - राम लखन मीरा, के. के पब्लिकेशन्स, दिल्ली

८. प्रयोजनमूलक हिंदी प्रयुक्त और अनुवाद - माधव सोनटक्के, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

९. अनुवादविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली

१०. अनुवाद विज्ञान की भूमिका - कृष्ण कुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

❄❄❄❄❄❄❄

७

अनुवाद का सामाजिक एवं सास्कृतिक पक्ष

ईकाइ की रूपरेखा

७.० इकाई का उद्देश्य

७.१ प्रस्तावना

७.२ अनुवाद का सामाजिक पक्ष

७.२.१ सामाजिक अनुवाद : परिभाषा

७.२.२ अनुवाद : सामाजिक पक्ष

७.३ अनुवाद का सांस्कृतिक पक्ष

७.३.१ सांस्कृतिक अनुवाद : परिभाषा

७.३.२ अनुवाद : सांस्कृतिक पक्ष

७.३.३ अनुवाद : भारतीय परिवेश में सांस्कृतिक पक्ष

७.३.४ सांस्कृतिक पक्ष : अनुवाद की समस्याएँ

७.३.५ समाधान :

७.४ सारांश

७.५ वस्तुनिष्ट प्रश्न

७.६ बोध प्रश्न

७.७ संदर्भ ग्रंथ

७.० इकाई का उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई में निम्नलिखित बिंदुओ का छात्र अध्ययन करेंगे -

- सामाजिक अनुवाद की परिभाषा और अनुवाद का सामाजिक पक्ष क्या हैं, उसे देखेंगे|
- अनुवाद का सांस्कृतिक पक्ष और उसकी परिभाषा को विस्तार जान सकेंगे |

७.१ प्रस्तावना :

अनुवाद एक बहुपयोगी विधा है। इसके उपयोग से सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन और परिवर्द्धन होता है। इस प्रकार अनुवाद में सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों को रखना उसकी सफलता का परिचायक है, क्योंकि भाषा के सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ लक्ष्यभाषा में समान रूप से सम्प्रेषित हो सकें। समाज और संस्कृति में लोगों की जीवन पद्धति, तौर-तरीके, खान-पान, आचार-विचार, रहन सहन, व्यवहार, धर्म, रीति-रिवाज तथा सामाजिक विशेषताएँ प्रभूति सभी बातें सम्मिलित रहती हैं। वस्तुत: मूल भाषा के सामग्री में लोक-जीवन तथा

सामाजिक संदर्भों का आना बहुत ही स्वाभाविक है किंतु अनुवाद में सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों को अनूदित भाषा में संप्रेषित करना बहुत महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है। अत: अनुवाद के माध्यम से विभिन्न सामाजिक आचार- संहिताओं का संरक्षण होता है।

अनुवाद का कार्य कार्यालय, संस्थान, कम्पनी, फर्नीचर, पत्र शीर्ष, फाइलें, स्टेशनरी, वाहन, विजिटिंग कार्ड, नोटिस बोर्ड, भवन, कैलेण्डर, बैनर, रेडियो, होर्डिंग, डायरी, पत्र-पत्रिकाएँ उपहार वस्तुएँ, दूरदर्शन, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, रेलवे स्टेशन, बस अड्डे यहाँ तक कि कर्मचारियों और छोटे बच्चे के पैंट-शर्ट पर भी किया जाता है और साथ ही सड़क, दुकान, टिकट और बिजली के खम्भों तक पर अनूदित विज्ञापन छापे जाते हैं।

७.२ अनुवाद का सामाजिक पक्ष :

मनुष्य अपने जीवन के विविध आयामों को अनुवाद के माध्यम से पूर्ण करने की सफल कोशिश करता है। इसमें व्यापार की भूमिका अहम रही है। वस्तुतः व्यापार-व्यवसाय को शुरू करने में पूँजी, श्रम, जोखिम और बाजार इत्यादि में अनुवाद सक्रिय रूप में उपयोगी होता है। सारे साधन उपलब्ध होने के बावजूद भी बाजार की स्तर तय कराने में विज्ञापनों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है और ये सभी विज्ञापन अनुवाद पर ही आश्रित होते हैं। जब से बहुराष्ट्रीय कंपनी के निवेश की प्रथा अर्थात् 'ग्लोबलाइजेशन' का चलन चला है तब से संपूर्ण समाज और संस्कृति का भी वैश्वीकरण हो गया है। विश्व बाजार की नशे अनुवादक और अनुवादकर्ता ने पकड़ ली है, जिसके कारण संप्रेषण कौशल और समझदारी में भी विकास देखा गया है। अनुवाद के कारण सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष मजबूत होता है। सामाजिक स्तर पर अनुवाद वार्तालाप, राजनीतिक, पत्रकारिता, शिक्षा, न्यायालय व्यवस्था, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की क्षेत्र में अनुवाद, कार्यालय, अंतरराष्ट्रीय संबंध तथा सांस्कृतिक स्तर पर धार्मिक, सांस्कृतिक सामंजस्यता, धार्मिक पुस्तकें आदि का सामंजस्य स्थापित करने का कार्य अनुवाद द्वारा ही संभव हो पाया है।

७.२.१ सामाजिक अनुवाद : परिभाषा :

- **भारतीय लेखक :**

  १. भोलानाथ तिवारी "किसी भाषा में प्राप्त सामग्री को दूसरी भाषा में भाषान्तरण करना अनुवाद है, दूसरे शब्दों में एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासम्भव और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास ही अनुवाद है।"

  २. विनोद गोदरे "अनुवाद, स्रोत-भाषा में अभिव्यक्त विचार अथवा व्यक्त अथवा रचना अथवा सूचना साहित्य को यथासम्भव मूल भावना के समानान्तर बोध एवं संप्रेषण के धरातल पर लक्ष्य-भाषा में अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया है।"

  ३. दंगल झाल्टे "स्रोत-भाषा के मूल पाठ के अर्थ को लक्ष्य-भाषा के परिनिष्ठित पाठ के रूप में रूपान्तरण करना अनुवाद है।"

- **पाश्चात्य लेखक :**

    १. गिडिंग्स "समाज स्वयं संघ है वह एक संगठन और व्यवहारों का योग है, जिसमे सहयोग देने वाले एक-दूसरे से सम्बंधित होते हैं।"

    २. हेनकीन्स "हम अपने अभिप्राय के लिए समाज की परिभाषा इस प्रकार कर सकते है कि वह पुरूषों, स्त्रियों तथा बालकों का कोई स्थायी अथवा अविराम समूह है जो कि अपने सांस्कृतिक स्तर पर स्वतंत्र रूप से प्रजाति की उत्पत्ति एवं उसके पोषण की प्रक्रियाओं का प्रबन्ध करने मे सक्षम होता हैं।"

७.२.२ अनुवाद : सामाजिक पक्ष :

विश्व में आर्थिक उदारीकरण, वैश्वीकरण के साथ अनुवाद के कारण सामाजिक बदलाव भी देखा गया है। वैश्विकरण के कारण संपूर्ण विश्व एक गाँव के रूप में तबदील हो गया है। अनुवाद के कारण ही उदारीकरण और वैश्वीकरण को बल मिला है। अनुवाद ने विज्ञापन के क्षेत्र में अपना संपूर्ण अस्तित्व जमा लिया है, जिसके माध्यम से बाजारीकरण में आसानी हुई है। विज्ञापन अनुवाद के कारण कथा, कहानी, कविताएँ, चलचित्र जगत और क्रीड़ा जगत के खिलाड़ियों के ध्यानाकर्षक, संवाद, सौन्दर्य प्रसाधन के विज्ञापनों में सुन्दरियों के अर्धनग्न चित्र दिखा-दिखा कर सम्मोहन उत्पन्न किया जाने लगा।

वैश्विक स्तर उपभोगतावादी संस्कृति का प्रचलन है इसलिए उपभोगतावादी बाजारीकरण में अनुवाद महत्त्व बहुत बढ़ गया है। इस प्रकार अनुवाद ने आर्थिक स्तर से गुजरे हुए विश्व के सभी समाज को अपने पक्ष में कर लिया है। वस्तुत: इस प्रकार समाज के विकास या बदलाव में अनुवाद ने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। अनुवाद के कारण समाज में विभिन्न प्रकार के बदलाव और विकास देखे गए है ; जैसे वार्तालाप के क्षेत्र में अनुवाद, राजनीतिक क्षेत्र में अनुवाद, व्यापार के क्षेत्र में अनुवाद, पत्रकारिता के क्षेत्र में अनुवाद, न्यायालयी क्षेत्र में अनुवाद, विज्ञापन के क्षेत्र में अनुवाद आदि।

१. **वार्तालाप के क्षेत्र में अनुवाद :** परस्पर संवाद, वाद-विवाद, भाषण, संभाषण, वार्तालाप या बातचीत अनुवाद का सशक्त और विस्तृत फ़लक माना जा सकता है। जब भी दो व्यक्ति एक साथ किसी पड़ाव, स्थान, यात्रा, तीर्थाटन या देशाटन पर मिलते हैं, तब दोनों के मन में एक-दूसरे को जानने की जिज्ञासा पैदा होती है। यदि ये दोनों व्यक्ति एक भाषा-भाषी हैं, तो वहाँ अनुवाद की कोई गुंजाइश नहीं होती, किन्तु जब वे भिन्न भाषा-भाषी के रहे हैं, तो उन्हें अपने परिचय या भाव को समझाने के लिए अनुवाद की आवश्यकता पड़ेगी। उदाहरण के तौर पर हम देखते हैं कि किसी उत्तर भारतीय व्यापारी को कश्मीरी और किसी गुजराती को पंजाबी व्यापारी की बात समझने के लिए अनुवाद की सहायता लेनी पड़ेगी। बिना अनुवादक की सहायता लिए वे पूर्णरूप से एक-दूसरे के संपर्क स्थापित नहीं कर पायेंगे। जिसके कारण उनके व्यापार के विकास में बाधा उत्पन्न होगी।

२. **राजनीतिक क्षेत्र में अनुवाद :** राजनीतिक क्षेत्र में भी अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राजनेताओं और मंत्रियों को संवाद और संप्रेषण के लिए अनुवादक की आवश्यकता होती है। उदाहरण के तौर पर हम देखते

हैं कि भारत का एक विदेश मंत्री विदेश यात्रा के दौरान अपने साथ एक अनुवादक को रखता है ताकि वह अनुवादक दोनों देश के मंत्रियों के संवाद में मदद कर सके।

३. **व्यापार के क्षेत्र में अनुवाद :** व्यापार और व्यवसाय के क्षेत्र में अनुवाद और अनुवाद कर्ता की अक्षय भूमिका रही है। बड़ी-बड़ी कंपनियाँ अपने विकास और व्यावसाय की वृद्धि के लिए देश-विदेश में निवेश करते है। इस निवेश के दौरान उन्हें उस देश से संपर्क करने के लिए उस देश की और उस क्षेत्र की भाषा में संप्रेषण करना होता है। अत: उस देश में कंपनी स्थापित होने के बाद कंपनी के कार्य के देखभाल और संप्रेषण स्थापित करने के लिए अनुवाद और अनुवादकर्ता की आवश्यकता होती है।

४. **पत्राचार के क्षेत्र में अनुवाद :** यदि पत्राचार किसी क्षेत्रीय भाषी या प्रांतीय भाषा से हो रही हो तो उस समय अनुवाद की कोई जरूरत नहीं होती, किन्तु यदि किसी विदेशी भाषा या अन्य भाषा में समाचार के कथ्य स्थापित करने है तो उसे समझ ने के लिए अनुवाद की आवश्यकता होती है। पत्राचार व्यक्तिगत, कार्यालयी, व्यावसायिक, राजनीतिक, न्यायालयी अथवा अकादमिक हो सभी प्रकार के पत्राचार के लिए अनुवाद की जरुरत महसूस होती है।

५. **न्यायालयी क्षेत्र में अनुवाद :** भारतीय संविधान अनुच्छेद ३४८ में भारत के न्यायालय को संपूर्ण कार्यवाही अंग्रेजी में करने की अनुमति देता है। भाषा भारत में सर्वोच्च न्यायालय एवं उच्च न्यायालय के निर्णयों एवं आदेशों की भाषा अंग्रेजी होती है। समस्त विधि, संसदीय विधान मंडलीय, राष्ट्रपति एवं राज्यपाल के अध्यादेश के लिए भी अंग्रेजी भाषा का प्रचलन अधिक है इसलिए अधिवक्ताओं, न्यायाधीशों, विधिवेत्ताओं, प्रकाशकों तथा प्राध्यापकों को उन्हें अंग्रेजी में ही पढ़कर समझना होता है। वस्तुत: भारत के कई इलाकों को अशिक्षित और अनपढ़ लोग निवास करते हैं। अत: देश के सभी नागरिकों तक न्यायालयीक अध्यादेश पहुँचाने के लिए अनुवादक की आवश्यकता होती है। इस प्रकार अनुवाद न्यायालयों में भी अहम भूमिका के रूप में उपस्थित है।

६. **कार्यालयी क्षेत्र में अनुवाद :** भारत देश में अधिकांश कार्यालयों की भाषा अंग्रेजी है; जैसे पुलिस, रेल, नारकोटिक्स, नौ-सेना तथा बड़े-बड़े चिकित्सा संबंधी कार्यालयों आदि। भारत देश में खण्ड तथा तहसील स्तर के कार्यालयों में भले ही हिन्दी में आवेदन पत्र ले लिए जाते हों किंतु जिले स्तर पर आते-आते अंग्रेजी का दबदबा शुरू हो जाता है। वस्तुत:यहीं से अनुवाद और अनुवाद कर्ता की भूमिका और कार्य की शुरू हो जाती है।

७. **शिक्षा क्षेत्र में अनुवाद :** अनुवाद और शिक्षा का बहुत ही अनोखा ताल-मेल है। वे एक-दूसरे के पूरक और सहचर है। विद्यार्थियों को समझाने से लेकर कार्यालयी काम-काज तक सभी स्थानों पर अनुवाद का अमिट सहयोग रहता है। अधिकांशत: तकनीकी, कानूनी, रक्षा उत्पादन तथा आपूर्ति, औद्योगिक एवं वित्तीय, आयकर, खनन, फिल्म, दूरदर्शन, दूरसंचार, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, आकाशवाणी, पावर ग्रिड, अर्थशास्त्र, समाज, इतिहास और भूगोल का श्रेष्ठ साहित्य अंग्रेजी या अन्य किसी विदेशी भाषा में टंकित है। अत: स्थानीय भाषाओं में अनुवाद किए बिना हम इससे

लाभान्वित नहीं हो सकते। इसलिए अनुवाद और शिक्षा एक दूसरे के पूरक और सहचर कहे जा सकते हैं।

८. **विज्ञान और प्रौद्योगिकी की क्षेत्र में अनुवाद :** वैज्ञानिक अनुसंधान, सूचना प्रौद्योगिकी, चिकित्सा संबंधी अनुसंधान तथा पर्यावरण संबंधी अध्ययन आदि के क्षेत्र में अनुवाद सक्रिय भूमिका निभाती है। फलत: हमें इन सभी की जानकारी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं में लिखी पुस्तकों से ही प्राप्त होती है किंतु अल्पभाषा ज्ञान के कारण हम उसे समझने में असक्षम सिद्ध होते हैं। अत: उसे समझाने और स्पष्ट करने के लिए अनुवाद अपनी भूमिका निभाती है।

९. **साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद :** प्राचीन साहित्य, अभिलेख आदि देश की मूल्यवान संपदा माने जाते हैं। हर जिज्ञासु के मन में अपने देश के अतीत को जानने की प्रबल उत्कण्ठा होती है। उदाहरण के तौर पर हम देखते हैं कि संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश में लिखे गए प्राचीन साहित्य को सभी लोग नहीं समझ सकते। अतः उन सभी महान कृतियों का अनुवाद क्षेत्रीय भाषा या अन्य भाषा में होने लगा। ताकि उसे पढ़कर लोग अपने देश संस्कृति और सामाजिक रीति-नीति से अवगत हो सके।

१०. **अन्तर्राष्ट्रीय संबंध के क्षेत्र में अनुवाद :** अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संबंध स्थापन हेतु अनुवाद आवश्यक विधा बन गयी है। हर देश अपने प्रतिनिधि के रूप में राजदूतों की नियुक्ति करते हैं। ये राजदूत अपने देश तथा जिस देश में जाते हैं, उस देश के बीच संवाद के स्तर पर पुल का कार्य करते हैं। जिस देश में उनकी नियुक्ति होती है, उस देश की मुख्य कामकाजी भाषा का उन्हें बहुत दिनों तक अभ्यास कराया जाता है ताकि संप्रेषण और कार्य करने के दौरान वहाँ के लोग और राजदूत को समस्या न हो। इस प्रकार एक अच्छा राजदूत एक अच्छा अनुवादक भी होना आवश्यक है।

७.३ अनुवाद का सांस्कृतिक पक्ष :

भारतीय सामाजिक संरचना में सांस्कृतिक पक्ष का अत्याधिक महत्त्व है। प्रत्येक समाज, धर्म और जाति की अपनी संस्कृति होती है, जिसमें उस समाज की सारी विशेषताएँ विद्यमान होती हैं। संस्कृति को अभिव्यक्त करने के लिए भाषा और बोली की आवश्यकता होती है। अत: बोली, शब्द और भाषा को आधार बनाकर हम अपनी भावना और अपनी संस्कृति को प्रकट कर सकते हैं। संस्कृति में जाति-धर्म, रीति-रिवाज, रहन-सहन, वेशभूषा, खान-पान, रिश्ते-नाते इत्यादि का समावेश रहता हैं। फलत: अनुवाद मूलभाषा पाठ का सत्य लक्ष्य भाषा में व्यक्त करने में तभी कामयाब हो सकता है, जब अनुवादक मूलभाषा पाठ की संस्कृति को मूल केंद्र में रखकर भाषा की संस्कृति से संबंध स्थापित कर सके। अनुवाद को दुबारा उत्पन्न करने की प्रक्रिया द्वि-सांस्कृतिक के श्रेणी में आती है। इस प्रकार संस्कृति को ध्यान में रखकर अनुवाद करने वाला अनुवादक बहुत ही तीव्र-बुद्धि और कुशल होना आवश्यक है क्योंकि उसके द्वारा सृजन किया गया अनुवाद एक नये सृजन के श्रेणी में आता है।

अनुवादक को अपनी भूमिका का निर्वहन करते समय स्रोत तत्त्व और लक्ष्य तत्त्व की ओर सूक्ष्मता से ध्यान रखना होता है। अनुवादक को अच्छी तरह से सांस्कृतिक संदर्भ की संपूर्णता को समझना चाहिए ताकि अनुवाद सकारात्मक हो। फलत: अनुवाद का मुख्य उद्देश्य पाठक

को अन्य भाषा के साहित्य, संस्कृति और जीवन के प्रति संवेदनशील बनाना और उसे एक नयी जीवन-शैली से अवगत कराना है। अनुवाद के माध्यम से संस्कृति को प्रेषित करने का काम बहुत कठिन है। अनुवादक का काम है कि वह प्रमुख रूप से दोनों संस्कृतियों को अच्छी तरह से समझकर उनके बीच तादात्म्य स्थापित कर सके। उदाहरण के तौर पर मराठी में 'लावणी' शब्द मराठी संस्कृति से जुडा है, जिसे हिन्दी में मुजरा के समकक्ष रखा जाता है। खानपान से संबंधित देखा जाए तो मराठी व्यंजन 'पुरनपोली' का अनुवाद भी संभव नहीं है। इस प्रकार सांस्कृतिक अनुवाद करते समय उस भाषा की मूल संस्कृति के शब्द को बदलना लगभग असंभव होता है। इसलिए उसका ज्यों-का-त्यों प्रयोग करना गलत नहीं माना जा सकता।

७.३.१ सांस्कृतिक अनुवाद : परिभाषा :

- **भारतीय लेखक :**

  १. रामधारी सिंह दिनकर - "संस्कृति एक ऐसा गुण है जो हमारे जीवन में छाया हुआ है।"

  २. "अनुवाद के कारण ही समाज और संस्कृति का प्रसारण हो पाया है। जिसके कारण सभी लोग सजहता से एक-दूसरे की सामाजिक रीति-नीति एवं सांस्कृतिक क्रिया-कलाप समझने में सक्षम हो पाए है।"

- **पाश्चात्य लेखक :**

  १. आर. एच. राविना "जहाँ भी लक्ष्यभाषा में सांस्कृतिक एकता का अभाव रहता है, वहाँ पर मूल के शब्दों का एकल शब्दों द्वारा अनुवाद अपर्याप्त हो जाता है। ऐसे स्थानों पर व्याख्या एवं अतिरिक्त सूचनाओं की आवश्यकता होती है, जिससे कि सांस्कृतिक संदर्भ की पुनर्रचना हो सके।"

  २. जॉर्ज स्पाईनर "अनुवाद क्रिया तो एक जीवंत खोज है, अतीत और वर्तमान दो संस्कृतियों के बीच निरंतर बहती ऊर्जा की धारा है।"

७.३.२ अनुवाद : सांस्कृतिक पक्ष

अनुवाद के कारण सांस्कृतिक आदान प्रदान सहज और तीव्र गति से हो रहा है। प्राचीन समय से यह आदान प्रदान होता रहा है। भारतीय साहित्य, दर्शन व गणित आदि का अनुवाद चीनी, जापानी, सिंहली, जर्मन, फ्रांसीसी, अंग्रेजी आदि भाषाओं में होता रहा है। इसके कारण संस्कृति संवर्द्धन साथ-साथ ज्ञान में भी विकास होता गया। अनुवाद करते समय अनुवादक को स्रोत भाषा के मूल स्वरूप को सुरक्षित रखने के लिए विभिन्न समस्याओं, भाषिक संदर्भात्मक तथा सांस्कृतिक से जूझना पड़ता है। हर देश और हर प्रांत की अपनी संस्कृति होती है। इस प्रकार सभी को एक सूत्र में पीरोने के लिए सांस्कृतिक पक्ष में अनुवाद का महत्त्वपूर्ण स्थान माना जा सकता है।

भौगोलिक तथा ऐतिहासिक कारणों से भी सांस्कृतिक अंतर देखा जाता है। अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग तरीके से ऋतु का स्वागत किया जाता है, यह प्रक्रिया भी उस देश की संस्कृति का एक अंग है। उदाहरणार्थ: 'ग्रीष्म ऋतु' तो एक ही है किंतु यूरोप की गर्मी और भारत की गर्मी में काफी अंतर देखा जाता है। जहाँ यूरोप में 'वार्म रिसेप्शन' मनाया जाता है

वहीं भारत में ग्रीष्म ऋतु का गर्मजोशी के साथ स्वागत किया जाता है। देश और वहाँ की संस्कृति के अनुसार उसे भिन्न-भिन्न नाम से संज्ञांवित किया जाता है किंतु उसके मूल भाव एक ही होते हैं।

भारतीय परंपरा में स्वीकृत श्राद्ध, आरती, हवन आदि शब्दों को समझना सरल नहीं। चातक, चकोर, मालती, तमाल, होली आदि सहस्त्रों सांस्कृतिक शब्दों को व्याख्या से भी स्पष्ट नहीं किया जा सकता है। यही बात अन्य संस्कृतियों पर भी लागू होती है। रूसी में 'वारे' एक प्रकार की दही है, 'क्वास' एक प्रकार का रूसी पेय है, जो गर्मी के दिनों में पिया जाता है। इस प्रकार सभी देशों की संस्कृति भिन्न-भिन्न होती है, जो सदियों से संजोये हुए रखी गयी है। इन सभी को संप्रेषित और प्रसारित करने के लिए अनुवाद और अनुवादकर्ता की आवश्यकता होती है। धर्म के प्रचार-प्रसार में अनुवाद, धार्मिक ग्रंथों का अनुवाद, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए अनुवाद आदि सभी सांस्कृतिक महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में अनुवाद की भूमिका अमिट है।

१. **धर्म के क्षेत्र में अनुवाद :** सभी धर्म एक विशिष्ट भाषा का व्यवहार करते हैं ; जैसे बौद्ध धर्म पालि, इसाई लैटिन, मुसलमान अरबी इत्यादि। आम लोग इन धर्म के भाषाओं के जानकार नहीं हो सकते इसलिए उन्हें सीखने और समझने के लिए अनुवादक और अनूवादित पुस्तकों की आवश्यकता होती है। वस्तुत: पुजारी आम लोगों की प्रार्थना आदि का भी अनुवाद धर्म की भाषा में करते हैं। अपितु ऐसे धर्म भाषाओं के पंडित सामान्य लोगों में धर्म प्रचार-प्रसार के लिए अपने धर्म ग्रंथों का अनुवाद कराते हैं। इस प्रकार दोनों तरफ यह अनुवाद प्रक्रिया देखी जा सकती है।

२. **सांस्कृतिक संबंध बढ़ाने के क्षेत्र में अनुवाद :** विश्व का कोई भी मानव स्वयं को हर दृष्टि से पूर्ण नहीं मानता। अत: अनुवाद संस्कृति, शिक्षा, तकनीक, प्रौद्योगिकी, ज्ञान-विज्ञान आदि अनेक कोणों पर कहीं न कहीं वह पूर्णता भरने का कार्य करता है। हर व्यक्ति के मन में अपने से हटकर दूसरे व्यक्ति की आकांक्षा, टूटन, संत्रास, सौन्दर्य बोध, संवेदनाओं, समस्याओं, संघर्ष क्षमता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सामाजिक बिखराम, जीवन-पद्धति, सभ्यता तथा साहित्यिक आदि जानने की इच्छा बनी रहती है। यही जिज्ञासा एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के निकट ले जाती है और जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के निकट जाता है, तब उसके साथ-साथ पूरा समाज और उसकी संस्कृति भी एक दूसरे के निकट जाती है। अत: यह जरूरत अनुवाद के माध्यम से ही पूरी की जा सकती है। इस प्रकार भाषा, संस्कृति और साहित्य की समृद्धि के साथ-साथ एक-दूसरे को जानना और पारस्परिक अवबोध के सहारे एक-दूसरे से तादात्म्य तथा पारस्परिकता स्थापित करना अनुवाद की मुख्य विशेषता है।

३. **धार्मिक ग्रंथों का अनुवाद :** धर्म के प्रचार और प्रसार में अनुवाद अक्षुण्ण भूमिका अदा करता है। इसके कारण ही सामान्य जन तक धर्म ग्रंथ के मूल अर्थ पहुँच पाते हैं। अब तक अगणित धर्म ग्रंथों का अनुवाद हो चुका है ; जैसे - 'वेद', 'पुराण', 'उपनिषद', 'रामायण', 'महाभारत', 'काव्य', 'महाकाव्य', 'महावीर चरिउ', 'पउमचरिउ', 'भविसयत्तकहा', 'सुंदरचरिउ', 'भागवत', 'पुराण', 'सत्यनारायण कथा', 'हितोपदेश', 'वैद्यक', 'नीति ग्रंथ', 'ज्योतिष', 'विष्णु पुराण', 'गीता', 'कुरान', 'बाइबल' आदि।

परिणामस्वरूप धर्म ग्रंथ के अनुवाद के कारण धर्म के प्रसार के साथ-साथ सभ्यता का विकास होता है।

४. **अनुवाद के कारण सांस्कृतिक सामंजस्यता :** परिवर्तनशीलता के साथ-साथ संस्कृति में अनुकूलन तथा सामंजस्यता का गुण भी विद्यमान होते रहता है। व्यक्ति भौगोलिक पर्यावरण में सामंजस्यता स्थापित करता हुआ ही समाज में अपने व्यक्तित्व को स्थापित करता है। अत: जैविकीय और सामाजिक पर्यावरण में सामंजस्यता स्थापित करने का मुख्य कार्य संस्कृति का होता है। इस तरह वर्तमान समय में अनुवाद सभी संस्कृतियों के भी सामंजस्य स्थापित करने के उद्देश्य से अग्रसित होता है और अंतत: वह सफल भी सिद्ध होता है।

७.३.३ अनुवाद : भारतीय परिवेश में सांस्कृतिक पक्ष

भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों ने अपने ज्ञान आलोक से सम्पूर्ण विश्व को आलोकित किया। इस क्रिया को करने के लिए उन्होंने बाहर की किसी भाषा से उसे लिया नहीं बल्कि अंदर (आत्मिक ज्ञान) से उसे ग्रहण किया। और अंत में सभी देश के लोगों ने उसे स्वीकार किया और उसका अनुवाद कर अपने-अपने देश में संप्रेषिक किया। इस तरह अनुवाद के माध्यम से संस्कृति संवर्धन के साथ-साथ ज्ञान की भी वृद्धि होती हुई दिखायी देती है। किंतु भारत में अनुवाद की विधा बहुत बाद में प्रचलित हुई। उदाहरण के तौर पर हम देखते हैं कि संस्कृत की वाल्मीकि 'रामायण', 'मेघदूत' आदि अनेक रचनाओं की केवल कुछ पंक्तियों या छंदों का छायानुवाद 'महावीर चरिउ', 'पउमचरिउ', 'भविसयत्तकहा', 'सुंदरचरिउ' आदि प्राकृत अपभ्रंश की कृतियों में मिल जाते हैं। अतएवं प्राकृत अपभ्रंश की कई रचनाओं के पूर्ण या अपूर्ण अनुवाद इतालवी, अंग्रेजी आदि भाषाओं में हुए हैं। बौद्ध ग्रंथ अधिकांश रूप में पालि ग्रंथों के नहीं बल्कि संस्कृत बौद्ध ग्रंथों के अनुवाद हैं। अत: यह सच है कि आधुनिक काल में विभिन्न भाषाओं में पालि ग्रंथों के अनुवाद हुए हैं।

'महाभारत' के पूर्ण अपूर्ण अंशों के अनुवादकों में देवीदास, छत्रकवि, कुलपति मिश्र तथा गोकुलनाथ जैसे प्रसिद्ध विद्वान का नाम उल्लेखित है। 'भागवत' के पुरानी हिन्दी के अनुवादकों में गोपीनाथ, नंददास, चतुरदास, कृपाराम, बालकृष्ण, रसखान, भूपति तथा अंगद शास्त्री आदि का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। 'पंचतंत्र' के अनुवादकों में अमर सिंह, कृष्णभट्ट, देवीलाल तथा पोल्हावन का नाम शामिल है। 'हितोपदेश' के अनुवादकों में पदुमन दास, वंशीधर, जयसिंह दास, छविनाथ, लल्लू लाल कवि आदि सुप्रसिद्ध है। प्रसिद्ध नाटकों में प्रबोध चन्द्रोदय, हनुमन्नाटक, मुद्राराक्षस, शकुन्तला, मालती माधव, उत्तर रामचरितमानस, रत्नावली, कर्पूर मंजरी, कुंदमाला, मृच्छकटिक, मर्चेन्ट आफ वेनिस, ऐज यू लाइक इट, मैकबेथ, ओथेलो, हेमलेट, ली बर्जिस गतील हामे, जैसे सैकड़ों ग्रंथों के हिन्दी में अनुवाद किए गए तो कविताओं में पोप, मिल्टन, शैली, वायरन, बर्ड्सवर्थ, कीट्स, टेनिसन तथा गोल्डस्मिथ के श्रेष्ठ काव्य पंक्तियाँ को अनूदित किया गया। इसी प्रकार गणित, अर्थशास्त्र, कृषि, इन्जीनियरिंग, भौतिकशास्त्र, जीवविज्ञान, रसायन, राजनीति विज्ञान, भाषा विज्ञान, काव्यशास्त्र, इतिहास तथा समाज शास्त्र जैसे विषयों में भी हिन्दी के महत्त्वपूर्ण अनुवाद हुए है।

७.३.४ सांस्कृतिक पक्ष : अनुवाद की समस्याएँ :

अनुवाद में अनुवाद की भूमिका बहुत ही गरिमापूर्ण होती है। अनुवाद वही प्रासंगिक और उपयोगी माना जाता है, जो अनूदित होने वाली कृति के कथ्य के सम्पूर्ण परिदृश्य को तटस्थ ईमानदारी के साथ खोले और वर्गीकृत करे क्योंकि अनुवाद ही एक ऐसा माध्यम है, जो लक्ष्य और स्रोत भाषाओं के बीच संवाद सेतु का कार्य करता है। श्रेष्ठ अनुवाद स्रोत भाषा के भावों को अपने भीतर संचित कर लेता है और फिर उसे अनुवाद के रूप से संप्रेषित करता है।

वर्तमान समय में पर्यावरण, विज्ञापन, सूचना क्रांति, सामाजिक, सांस्कृतिक, मानविकी अतएवं तकनीकी-औद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व पटल पर पल-पल बहुविधि परिवर्तन हो रहे हैं। घृणा और द्वेष के कारण तरह-तरह के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राष्ट्रीय आदि बेदखली हो रही है। इन सभी बातों को जानने और समझने के लिए अनुवाद बहुत जरूरी उपकरण सिद्ध हुआ है लेकिन यह अनुवाद यदि अधकच्चे, जटिल, कर्कश, सपाट और सतह ढंग से किया जाए तो वह अनिष्ट कार्य करेंगा। इस प्रकार अनुवादक के कार्य और उसके चरित्र पर अविश्वसनीयता का संकट पैदा होगा। वस्तुत: अनुवाद का कार्य उलटा सिद्ध हो जाएगा और जहाँ काम बनने वाला होगा वहाँ और काम बिगड़ जाएगा।

७.३.५ समाधान :

अत: माना जाता है कि तकनीकी, प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक अनुवादों के सापेक्ष समाज-विज्ञान और मानविकी विषयों से संबंधित किए गए अनुवाद काफी विश्वसनीय और लोकप्रिय होते हैं। मानविकी और समाज विज्ञान से संबंधित नए शब्दों को गढ़ कर अनुवाद के क्षेत्र को और अधिक समृद्ध बनाया जा सकता है। अत: नए शब्दों के गढ़ाव का कार्य यदि सरकारी तथा गैर सरकारी दोनों स्तरों पर किया जाए तो कार्य करने में आसानी और तीव्रता आएगी। इस शब्द संपदा को इकट्ठा करने में देशी, प्रांतीय, ग्रामीण, बोल-चाल की भाषा, आँचलिक आदि भाषाओं को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

७.४ सारांश :

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि समाज निरंतर परिवर्तनशील और विकसनशील रहता है। इसके स्वरूप निर्माण में कई तरह के तत्त्व सक्रिय रहते हैं जिनमें आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक सांस्कृतिक चेतना आदि प्रमुख होते हैं। किसी भी समाज की जन चेतना का निर्माण, विकास एवं परिवर्तन उसकी परिस्थितियों के अनुसार होता है। युगीन परिस्थितियों से उद्भुत इस चेतना की निर्मिति में जनसामान्य की भाषा महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। जबकि समाज और अनुवाद का संबंध भी नया नहीं है। इस संबंध की जड़ें मानव समाज में काफी पुराना है। अनुवाद ने विश्वभर में ज्ञान-विज्ञान की चेतना से मानवीय ज्ञानात्मक और भावात्मक संवेदना को बदला है। अनुवाद को हम सुदृढ़ सेतु के रूप में देख सकते हैं जो संस्कृति के भौतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं को गतिशीलता प्रदान करती है। अनुवाद कर्म ने सामाजिक चेतना के बदलाव, संघर्ष और टकराहट को प्रबल और सजग प्रक्रिया के रूप में जीवन्त रखने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अतः इस प्रकार अनुवाद का सामाजिक दायित्व एवं पक्ष बहुत ही क्रियाशील और उपयोगी माना जाता है।

अनुवाद की भूमिका सांस्कृतिक बदलाव में महत्त्वपूर्ण रही है। विश्व के संस्कृतियों में मौखिक और लिखित साहित्य का अनुवाद एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया रही है। जब कोई रचना लोक-भाषा में उपलब्ध हो जाती है, तब वह ज्ञान के प्रसार से जनमानस में जागरूकता पैदा करती है। इस तरह एक भाषा का साहित्य दूसरी भाषा में, दूसरी से तीसरी भाषा में, इस तरह से अनेक भाषाओं में स्थान पाता है।

विश्व-संस्कृति के विकास में अनुवाद का योगदान अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण रहा है। धर्म, साहित्य, शिक्षा, विज्ञान, वाणिज्य-व्यवसाय, राजनीति, संस्कृति आदि के विभिन्न पहलुओं का अनुवाद से अभिन्न संबंध रहा है। विश्व-संस्कृति के निर्माण में विचारों के आदान-प्रदान का बड़ा सहयोग रहा है और यह आदान-प्रदान अनुवाद से ही संभव हो पाया है। अस्तु इस प्रकार अनुवाद का सांस्कृतिक पक्ष बहुत ही क्रियाशील और उपयोगी माना सकता है।

७.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

१. शिक्षा के क्षेत्र का अनुवाद किस प्रकार का अनुवाद है?

उ - सामाजिक |

२. भारत के संविधान अनुच्छेद ३४८ के अनुसार कार्यालयी भाषा कौन सी है?

उ - अंग्रेजी |

३. समाचार पत्र के प्रमुख दो प्रकार के नाम लिखिए?

उ - क्षेत्रीय समाचार पत्र, प्रांतीय समाचार पत्र, राष्ट्रीय समाचार पत्र, अंतर्राष्ट्रीय समाचार पत्र |

४. भारत में किस प्रकार की संस्कृति पायी जाती है?

उ - बहुलतावादी |

५. रामचरित मानस किसकी रचना है?

उ - तुलसीदास |

६. रामचरित मानस में किस भाषा में लिखी गयी है?

उ - अवधि |

७. रामचरित मानस किस धर्म की संस्कृति का वर्णन मिलता है?

उ - हिन्दू संस्कृति |

८. रामायण के रचित कौन है?

उ - वाल्मिकि |

९. संस्कृति के सन्दर्भ में रामधारी सिंह दिनकर क्या कहते है?

उ - संस्कृति एक ऐसा गुण है जो हमारे जीवन में छाया हुआ है।

७.६ बोध प्रश्न :

१. अनुवाद के सामाजिक पक्ष पर प्रकाश डालिए।

२. अनुवाद के सामाजिक सोदाहरण समझाइए।

३. अनुवाद के सामाजिक पक्ष को रेखांकित किजिए।

४. अनुवाद की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उसके सामाजिक पक्ष को विशद किजिए।

५. अनुवाद का स्वरूप स्पष्ट करते हुए सांस्कृतिक पक्ष पर प्रकाश डालिए।

६. अनुवाद के सांस्कृतिक पक्ष को स्पष्ट कीजिए।

७. भारत में अनुवाद के सांस्कृतिक पक्षपर चर्चा कीजिए।

८. अनुवाद की सांस्कृतिक समस्या को समझाते हुए उसके समाधान पर चर्चा कीजिए।

९. अनुवाद के सांस्कृतिक पक्ष के महत्त्व को समझाइए।

७.७ संदर्भ ग्रंथ :

१. प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका - कैलाश नाथ पांडे, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

२. प्रयोजनमूलक हिंदी - डॉ. विनोद शाही, आधार प्रकाशन, हरियाणा

३. प्रयोजनमूलक हिंदी - विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

४. प्रयोजनमूलक हिंदी नए संदर्भ - सुमित मोहन, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली

५. प्रयोजनमूलक हिंदी के नए आयाम - डॉ. पंडित बन्ने, अमन प्रकाशन, कानपुर

६. प्रयोजनमूलक हिंदी - माधव सोनटक्के, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

७. प्रयोजनमूलक मीडिया विमर्श सिद्धांत और अनुप्रयोग - राम लखन मीरा, के. के पब्लिकेशन्स, दिल्ली

८. प्रयोजनमूलक हिंदी प्रयुक्त और अनुवाद - माधव सोनटक्के, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

९. अनुवादविज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली

१०. अनुवाद विज्ञान की भूमिका - कृष्ण कुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

❄❄❄❄❄❄❄

८

अनुवादक की योग्यताएँ

ईकाइ की रूपरेखा

८.० इकाई का उद्देश्य

८.१ प्रस्तावना

८.२ अनुवादक की योग्यताएँ

८.३ सारांश

८.४ बोध प्रश्न

८.५ संदर्भ ग्रंथ

८.० इकाई का उद्देश्य :

प्रस्तुत इकाई में निम्नलिखित बिंदुओ का छात्र अध्ययन करेंगे -

- अनुवादक की योग्यताएँ कौन-कौनसी है उसे जानेंगे |

८.१ प्रस्तावना

अनुवाद की योग्यताएं प्रदान की गई सेवा के स्तर और अनुवाद की आवश्यकता वाले उद्योग पर निर्भर करती हैं। एक कानूनी या चिकित्सा अनुवादक के लिए योग्यता सटीकता सुनिश्चित करने में मदद करने के लिए विषय वस्तु में एक पृष्ठभूमि की आवश्यकता हो सकती है। तकनीकी क्षेत्र में अनुवाद योग्यता के लिए आमतौर पर किसी विशिष्ट क्षेत्र में प्रयुक्त शब्दावली का ज्ञान आवश्यक होता है, जैसे भौतिकी या इंजीनियरिंग। बुनियादी ज्ञान में प्रत्येक भाषा में योग्यता और सांस्कृतिक बारीकियों की समझ शामिल है जो लिखित दस्तावेजों के अनुवाद को प्रभावित कर सकती है।

८.२. अनुवादक की योग्यताएं :

एक सफल अनुवादक में कुछ विशिष्ट गुण होने चाहिए। इन गुणों को हम निम्न बिंदुओं के अंतर्गत समझ सकते हैं -

८.२.१ भाषा प्रभुत्व :

अनुवादक को स्त्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा की प्रकृति, व्याकरणिक व्यवस्था शैली तथा अनुप्रयोगात्मकता का आधिकारिक ज्ञान होना चाहिए। साथ ही साथ दोनों भाषाओं में प्रचलित मुहावरों, लोकोक्तियों, सूक्तियों एवं उनके मूल अर्थ का भी सटीक एवं व्यवहारिक ज्ञान होना चाहिए। इनकी गुणों की अनुपस्थिति में एक आदर्श अनुवाद की उम्मीद संदेह के घेरे में आ जाती है।

८.२.२ बहुज्ञता तथा विवेकशीलता:

अनुवाद का कार्य कोई सामान्य कार्य नहीं है। यह किसी सामान्य या अतिसामान्य व्यक्ति की ओर से संपन्न होने वाला सामान्य कार्य नहीं है। सफल व आदर्श अनुवाद वही व्यक्ति कर सकता है, जो बहुत ही विवेकशील, भाषाविद् एवं बुद्धिप्रखर हो। अनुवादक को स्त्रोत सामग्री का पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए। वहीं लक्ष्य भाषा का ज्ञान भी उत्कृष्ट होना चाहिए। क्योंकि परिवेश, प्रयोजन, प्रासंगिकता, तार्किकता तथा सूचनात्मकता आदि को पहचानने की क्षमता किसी बहुज्ञ व्यक्ति में ही हो सकती है।

८.२.३. सतर्कता:

सफल अनुवादक आरम्भ से अंत तक सतर्क रहता है। मूल लेखन में लेखक जितना सतर्क रहता है उतना ही अनुवादक को भी सतर्क रहना आवश्यक है। इस प्रकार की सतर्कता से ही अनुवाद कार्य स्तरीय बनता है।

८.२.४. संदेह निवारणकर्ता:

अनुवाद कार्य करते समय भाषा एवं व्यवहारिक स्तर पर अनुवादक के सामने बहुत सारी समस्याएं आती हैं। एक अच्छे अनुवादक में इस प्रकार की समस्याओं के निवारण की क्षमता होनी चाहिए।

८.२.५. प्रतिभा:

प्रतिभा मनुष्य को जन्म से प्राप्त सहज देन है, यह सफल अनुवाद करने में सहायक होती है। किसी भी बात को चाहे वह सीधी हो या कठिन समझ लेने तथा कुशलता से अभिव्यक्त करने के लिए प्रतिभा होना अनिवार्य है।

८.२.६. समाज एवं संस्कृति का ज्ञान:

अनुवादक को दो भाषाओं के प्रभुत्व के साथ-साथ स्त्रोत तथा लक्ष्य भाषा-भाषियों की सामाजिक तथा सांस्कृतिक विषयों से संबंधित आवश्यक जानकारी होना भी अपेक्षित है। समाज की सांस्कृतिक विरासत, खान-पान, आचार-विचार, व्यवहार, पूजा-पाठ, वेश भूषा, रिश्ते-नाते आदि विषयों का परिचय होना जरूरी होता है।

८.२.७. ज्ञान-विज्ञान तथा मनोविज्ञान का परिचय:

अनुवादक को अद्यतन एवं अधुनातन खोजों, परिवर्तनों, जानकारियों तथा उपलब्धियों का ज्ञान जुटाते रहना चाहिए। यह सतत अध्ययनशीलता से, समसामयिक जानकारियों से तथा सूचना-तंत्र के माध्यम से ही संभव हो सकता है।

८.२.८ गुणवत्तापूर्ण कार्य:

अनुवादक को अपने सभी अनुवादों में हमेशा उच्च गुणवत्ता वाला काम प्रदान करने और इस उच्च गुणवत्ता को बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। कार्य की गुणवत्ता में अनुवादक की

इसे पूरा करने की क्षमता, अनुवाद की गुणवत्ता और समय की पाबंदी शामिल है जिसके साथ अनुवादक काम पूरा करता है और वितरित करता है।

८.२.९ ज़िम्मेदारीपूर्ण व्यवहार:

जब अनुवादक किसी कार्य को स्वीकार करता है, तो वह इस कार्य के परिणाम के लिए पूरी जिम्मेदारी लेता है, चाहे वह स्वयं उसके द्वारा किया गया हो या किसी अन्य अनुवादक या अनुवादक को सौंपा गया हो। यानी हर स्वाभिमानी अनुवादक अच्छी तरह जानता है कि उसके काम के लिए क्या आवश्यक है, और यह भी जानता है कि इस काम को बेहतरीन तरीके से कैसे करना है।

८.२.१० श्रद्धा एवं निष्ठा:

अनुवादक को विषय के प्रति अभिरुची होनी चाहिए। मूल लेखक के विचारों को लक्ष्य भाषा के पाठकों तक पहुंचाने की निष्ठा होनी चाहिए।

८.२.११ सृजन-क्षमता:

अनुवादक को रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता के गुणों को भी आत्मसात करना चाहिए। नए शब्दों के अगमन, गठन, प्रयोग-अनुप्रयोग से भी, शब्द-निर्माण की प्रक्रिया तथा आवश्यकता से भी अनुवादक को अवगत होना चाहिए।

८.२.१२. तटस्थता:

अनुवादक को परकाया प्रवेश की साधना करनी होती है। परकाया-प्रवेश की यह शर्त होती है कि स्वयं को बाहर छोड़कर दूसरे शरीर (रचना या रचनाकार) के भीतर प्रविष्ट होना होता है।

८.३ सारांश :

सारांशतः अनुवादक की योग्यताओं का विस्तार से अध्ययन यहाँ छात्रों ने किया है | एक अनुवाद के लिए किन-किन विशिष्ट गुणों की आवश्यकता है उसे भी यहाँ पर देखा गया है |

८.४ बोध प्रश्न :

१. अनुवादक की योग्यताओ की चर्चा कीजिए |

२. अनुवादक की कौन-कौनसी योग्यताएँ उसे रेखांकित कीजिए |

८.५ संदर्भ ग्रंथ :

१. प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका - कैलाश नाथ पांडे, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

२. प्रयोजनमूलक हिंदी - डॉ. विनोद शाही, आधार प्रकाशन, हरियाणा

३. प्रयोजनमूलक हिंदी - विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

४. प्रयोजनमूलक हिंदी नए संदर्भ - सुमित मोहन, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली

५. प्रयोजनमूलक हिंदी के नए आयाम - डॉ. पंडित बन्ने, अमन प्रकाशन, कानपुर

६. प्रयोजनमूलक हिंदी - माधव सोनटक्के, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

७. प्रयोजनमूलक मीडिया विमर्श सिद्धांत और अनुप्रयोग - राम लखन मीरा, के. के पब्लिकेशन्स, दिल्ली

८. प्रयोजनमूलक हिंदी प्रयुक्त और अनुवाद - माधव सोनटक्के, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

९. अनुवाद विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली

१०. अनुवाद विज्ञान की भूमिका - कृष्ण कुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

❄❄❄❄❄❄❄